संपादकीय जागरण

रविवार, 30 नवंबर, 2025 : मार्गशीर्ष शुक्ल - 10 वि. 2082

जिज्ञासा ही नए आविष्कार का आधार है

भड़काऊ भाषण

भोपाल में जमीयत उलेमा-ए-हिंद की बैठक में मौलाना महमूद मदनी ने जो कुछ कहा, उसे भड़काऊ भाषण के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता। उनकी बातें कट्टरपंथी तत्वों के दुस्साहस को बल प्रदान करने का ही काम करेंगी, क्योंकि एक तो उन्होंने जिहाद को पवित्र शब्द करार दिया और दूसरे एक तरह से यह धमकी भी दी कि जब-जब जुल्म होगा, तब-तब जिहाद होगा। अच्छा होता कि वे यह भी बता देते कि इस जिहाद के नाम पर क्या होगा? पता नहीं वे जिहाद को किस रूप में देखते और समझते हैं, लेकिन उन्हें इससे परिचित होना चाहिए कि न जाने कितने आतंकी संगठन ऐसे हैं, जो अपने नाम में जिहाद शब्द का इस्तेमाल करते हैं। वे अपनी आतंकी गतिविधियों को बिना किसी शर्म-संकोच जिहाद का नाम देते हैं। साफ है कि उनके कहने भर से जिहाद को आंतरिक संघर्ष की संज्ञा नहीं दी जा सकती। वैसे भी किसी शब्द का अर्थ उसी रूप में समझा जाता है, जिसके लिए उसका इस्तेमाल होने लगता है। क्या मदनी यह दावा कर सकने की स्थिति में हैं कि आज बुराइयों से लड़ने की कोशिश ही जिहाद है?

मौलाना मदनी जिस तरह इस नतीजे पर भी पहुंच गए कि सुप्रीम कोर्ट समेत सभी अदालतें दबाव में काम कर रही हैं, उससे उन्होंने न केवल न्यायपालिका को नीचा दिखाने का काम किया, बल्कि उसके प्रति अविश्वास पैदा करने की भी कोशिश की। यह एक खतरनाक कोशिश है। शायद उनकी नजर में अदालतें तभी तक स्वतंत्र हैं, जब तक वे उनके मनमाफिक फैसला दें। यह न तो संभव है और न ही किसी को इसकी अपेक्षा करनी चाहिए। मदनी ने न्यायपालिका को दबाव में लेने की जो कोशिश की, उसका प्रतिकार किया जाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। ऐसा इसलिए किया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने अपने संबोधन में तीन तलाक पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का भी उल्लेख किया। क्या वे यह चाह रहे थे कि सुप्रीम कोर्ट मुस्लिम महिलाओं को दोयम दर्जे का साबित करने और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित करने वाली तीन तलाक की कुप्रथा को विधिसम्मत ठहरा देता? आखिर वे यह कैसे भूल गए कि सुप्रीम कोर्ट के समक्ष तीन तलाक का उल्लेख एक कुप्रथा के रूप में ही किया गया था? प्रश्न यह भी है कि क्या वे तीन तलाक के समर्थक हैं? जो भी हो, उन्होंने अपने बिगड़े बोल से खुद को उन लोगों में शामिल करने का काम किया है, जो भड़काऊ बयान देकर चर्चा में आना पसंद करते हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने तय कर लिया था कि वे किसी भी विषय पर कुछ भी संयमित तरीके से नहीं कहेंगे। इसका उदाहरण यह है कि उन्होंने वंदे मातरम् पर भी आपत्ति जता दी। उन्होंने जैसी बातें कीं, वे यही अधिक बताती हैं कि उनके जैसे लोगों के लिए गंगा-जमुनी तहजीब का कहीं कोई मूल्य महत्व नहीं।

चिंता की बात

राजधानी में पढ़ने की उम्र में बच्चे अपराध की दुनिया में कदम रख रहे हैं। चोरी, लूटपाट, झपटमारी ही नहीं, किसी की हत्या करने में भी उन्हें हिचक नहीं हो रही है। भलस्वा डेरी क्षेत्र में शुक्रवार रात एक किशोर की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। पकड़े गए सभी पांचों आरोपित नाबालिग हैं। पहले भी इस तरह के कई मामले सामने आ चुके हैं। बच्चों में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्ति चिंता की बात है। इसके कारणों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। घरेलू हिंसा, गलत संगत, महंगे शौक, नशे की लत, इंटरनेट मीडिया पर हिंसक सामग्री जैसे कई कारण हैं, जिससे बच्चे पढ़ाई की जगह अपराध के रास्ते पर चले जाते हैं। घर में हिंसा का सामना करने वाले बच्चों में हिंसक व्यवहार की संभावना अधिक रहती है। कई माता-पिता व्यवस्तता के कारण अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं जिससे वह गलत संगत में पड़कर नशा व अपराध करने लगते हैं। इंटरनेट मीडिया पर उपलब्ध हिंसात्मक सामग्री भी उन्हें हिंसक बना रही है।

बच्चों में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्ति चिंता की बात है, इसके कारणों पर ध्यान देने की आवश्यकता है

इन्हें रोकने के लिए पुलिस को सख्त कदम उठाना चाहिए। अभिभावकों व शिक्षण संस्थानों को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। माता-पिता को अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने के साथ ही यह ध्यान देना चाहिए कि वह किस तरह के लोगों के साथ समय व्यतीत करता है। शिक्षकों को भी अपने विद्यार्थियों की गतिविधियों पर ध्यान देना होगा। उन्हें नशे से होने वाले नुकसान के प्रति सजग कर रचनात्मक कार्य के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या जीडीपी वृद्धि के आंकड़े अमेरिकी टैरिफ को निष्प्रभावी करते दिख रहे हैं?

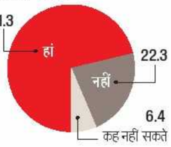

आज का सवाल
क्या भारतीय टीम वनडे में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वापसी करने में सक्षम दिख रही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

सभी समझें संविधान की सामर्थ्य

संजय गुप्त

संविधान की सार्थकता बढ़ाने के लिए सभी कार्य संविधानसम्मत ढंग से करने के साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि उसकी मनमानी व्याख्या न होने पाए

अवधेश राजपूत

पिछले दिनों संसद के सेंट्रल हाल से लेकर अन्य स्थानों पर जो संविधान दिवस मनाया गया, उसकी शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी ने 2015 से की थी। उन्होंने संविधान दिवस मनाना इसलिए आवश्यक समझा, ताकि देशवासी उसके मूल्यों और महत्ता से परिचित हो सकें। आज यदि भारत एक सफल लोकतंत्र के रूप में जाना जाता है तो इसके पीछे एक बड़ा योगदान हमारे संविधान का है। संविधान की शक्ति ने ही देश को एकसूत्र में बांधकर रखा है। संविधान एक लंबी और श्रमसाध्य प्रक्रिया का परिणाम था। संविधान एक जीवंत दस्तावेज है और उसमें देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप संशोधन करने की गुंजाइश है। इसीलिए उसमें अब तक सौ से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं। ये संशोधन सभी दलों की सरकारों ने किए हैं। यह स्पष्ट ही है कि आगे भी आवश्यकतानुसार संशोधन होते रहेंगे, लेकिन यह विचित्र है कि पिछले कुछ समय से कई विपक्षी नेता उसे पत्थर की लकीर की तरह पेश करने में लगे हुए हैं। वे संविधान खतरे में है का शोर मचाते हैं। सबसे अधिक शोर कांग्रेस नेता राहुल गांधी मचा रहे हैं। वे संकीर्ण राजनीतिक कारणों से ऐसा कर रहे हैं। संविधान को खतरे में दिखाने के लिए वे जब-तब उसकी प्रति लहराते रहते हैं। यह एक शिगूफा ही है, क्योंकि वे उसी संविधान की ताकत से सांसद और नेता विपक्ष हैं, जिसे खतरे में बताते हैं। वे संवैधानिक संस्था चुनाव आयोग को भी निशाने पर लिए हुए हैं, जो मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर का अपना संवैधानिक काम कर रहा है। सच तो यह है कि यह राहुल गांधी ही हैं, जो संविधान को नुकसान पहुंचाने का काम कर रहे हैं।

संविधान की सार्थकता तब सिद्ध होती है, जब उसका उपयोग उसकी भावना के अनुरूप किया जाता है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अतीत में संविधान का दुरुपयोग और उसका मनमाना इस्तेमाल किया गया। 1975 में जब देश पर आपातकाल थोपा गया तो न केवल उसका निरादर किया गया, बल्कि उसका मनचाहा इस्तेमाल भी किया गया। जब भी संविधान का इस्तेमाल मनमाने तरीके से किया जाएगा, उसकी शक्ति क्षीण होगी। यदि राजनीतिक दल अपने स्वार्थों के लिए संविधान का इस्तेमाल करेंगे तो इससे कहीं न कहीं जनता के हितों की भी अनदेखी होगी। यह किसी से छिपा नहीं कि इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए संविधान की अनदेखी कर जो आपातकाल लगाया, उसके दुष्परिणाम आम जनता को भी भोगने पड़े।

संविधान की सार्थकता बढ़ाने के लिए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी कार्य संविधानसम्मत ढंग से हों। यह भी आवश्यक है कि संविधान के प्रविधानों की मनमानी व्याख्या को रोका जाए। अपने देश में किस तरह संवैधानिक मामलों की मनचाही व्याख्या होती रहती है, इसका एक उदाहरण है आरक्षण। आरक्षण सामाजिक रूप से कमजोर-पिछड़े तबके के उत्थान के लिए संविधानप्रदत्त व्यवस्था है। इस तबके के उत्थान और उसे मुख्यधारा में लाने के लिए आरक्षण को आगे भी जारी रखने की आवश्यकता है, लेकिन उसे वोट बैंक का हथियार नहीं बनाया जाना चाहिए और न ही समाज को अगड़े-पिछड़े में बांटने वाली वैमनस्य की राजनीति की जानी चाहिए। दुर्भाग्य से आज ऐसा ही हो रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने कुछ समय पहले एससी-एसटी आरक्षण में उपवर्गीकरण को मान्यता देते हुए यह सुझाव दिया था कि सरकारों को इन वर्गों में क्रीमी लेयर की पहचान कर उन्हें आरक्षण से बाहर करने की नीति विकसित करनी चाहिए। कुछ राज्यों ने एससी-एसटी आरक्षण में उपवर्गीकरण को तो लागू किया, लेकिन कोई सरकार क्रीमी लेयर की नीति बनाने के लिए तैयार नहीं दिख रही है। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने कुछ दिन पहले एक बार फिर इसकी आवश्यकता जताई तो इसीलिए, क्योंकि यह ठीक नहीं कि आरक्षण का लाभ ले चुके लोग आगे भी उसका निरंतर लाभ उठाते रहें। यह सामाजिक न्याय के भी खिलाफ है और संविधान की भावना के खिलाफ भी।

प्रधानमंत्री मोदी ने संविधान की शक्ति रेखांकित करते हुए यह सही कहा कि उसके कारण ही उनके जैसा साधारण व्यक्ति प्रधानमंत्री पद तक पहुंचा। यह बात अन्य अनेक लोगों पर भी लागू होती है। विभिन्न क्षेत्रों में सामान्य लोग शीर्ष पद तक पहुंचते रहते हैं। ऐसा उन्हें मिले संवैधानिक अधिकारों के चलते संभव हो पाता है। देश में आज जो प्रगति दिखती है, वह भी संविधान की देन है। संविधान इसे सुनिश्चित करता है कि हर योग्य और सक्षम व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर मिले, वह चाहे जिस क्षेत्र में सक्रिय हो। राजनीतिक दल भी संविधान की ताकत के चलते ही सत्ता तक पहुंचते हैं। जनता संवैधानिक अधिकारों के तहत मिली वोट की अपनी ताकत से ही किसी को सत्ता में लाती है या फिर बाहर करती है।

संवैधानिक प्रविधानों से कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के लोग ही नहीं बंधे हैं। आम जनता भी संवैधानिक मूल्यों से बंधी है। संविधान लोगों को अधिकार देता है तो उनके कर्तव्य भी सुनिश्चित करता है। इसीलिए अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों से भी परिचित होना आवश्यक है। केवल संविधान दिवस के अवसर पर ही नहीं, अन्य मौकों पर भी जनता को उसके संवैधानिक दायित्वों से परिचित कराना चाहिए, ताकि सभी अपने हिस्से के दायित्वों का पालन कर सकें। उसे अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहने के साथ ही सामाजिक समरसता का भी ध्यान रखना होगा, क्योंकि देश को आगे ले जाने के लिए यह आवश्यक है। यह देखने में आता है कि औसत जनता न तो अपने अधिकारों के प्रति सचेत है और न ही नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों से। यह अज्ञानता जरूरी जानकारी से वंचित करने के साथ ही लोगों की समस्याएं भी बढ़ाती है। नियम-कानूनों के खिलाफ कुछ काम इसीलिए होते रहते हैं, क्योंकि लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों से अनजान होते हैं। यह सही समय है कि स्कूलों और कालेजों में संविधान की बारीकियों को सरल रूप में पढ़ाया जाए। लोगों को संविधान की बारीकियों से परिचित कराने का काम केवल स्कूलों और कालेजों को ही नहीं, राजनीतिक दलों और सामाजिक संस्थाओं को भी अपने हाथ में लेना चाहिए।

response@jagran.com

चुनावी हार के बाद चिंतन शिविर

सूर्यकुमार पांडेय

चोट खाने पर इंसान क्रंदन करता है और खुशी मिलने पर नर्तन, वैसे ही असफल होने पर चिंता के साथ चिंतन

हास्य-व्यंग्य घनघोर मेहनत के बावजूद अपेक्षित सफलता न मिले तो गहन आत्मचिंतन स्वाभाविक है। बच्चा साल भर मेहनत करे और फाइनल परीक्षा में फेल हो जाए और यही हर बार होता रहे तो उसको एक बार चिंतन करना भी चाहिए कि वह एक ही क्लास में कब तक और कितने साल पढ़ता रहेगा? राजनीतिक दलों के साथ भी यही होता है और इधर कुछ ज्यादा ही होने लग गया है। जिस तरह गहरी चोट लगने पर इंसान क्रंदन करता है और कोई बड़ी खुशी मिलने पर नर्तन करता है, उसी तरह असफल हो जाने पर चिंता के साथ चिंतन भी करता है। इसी सिलसिले में एक राजनीतिक पार्टी के शूरवीरों ने चिंतन शिविर का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया। इसका उद्देश्य था पराजय पर चिंतन करना और पराजित मानसिकता को जीत के आत्मविश्वास में बदलना।

चिंतन शिविर का पहला सत्र था 'हार के कारण की तलाश सत्र।' सबसे पहले एक वरिष्ठ नेता खड़े हुए। उनका मुखमंडल ऐसे आत्मविश्वास से भरा था गोया उन्होंने पराजय का कारण खोज लिया। वह बोले, 'हम पराजित हुए नहीं, हमें पराजित कर दिया गया। यह हार हमारी असली पराजय नहीं है।' उनका यह कथन सुनते ही तालियों की ऐसी गड़गड़ाहट हुई, जैसे विजय का तुमुलनाद हो रहा हो। सबको यह निष्कर्ष इतना पसंद आया कि इस वक्तव्य को सर्वसम्मति से अगले दशक के लिए आधिकारिक निष्कर्ष घोषित कर दिया गया और उन्हें कोलंबस छाप पटका पहनाया गया। चिंतन शिविर के दूसरे सत्र में आंकड़ों की प्रस्तुति की गई। एक सदस्य ने ग्राफ दिखाया, हरा ऊपर, लाल नीचे, पीला बीच में। किसी के कुछ भी पल्ले नहीं आया कि क्या ऊपर और क्या नीचे? हालांकि यह तय हो गया कि 'ऊपर' हम हैं और बाकी हमारे नीचे हैं। किसी ने दबी जबान से कहा, 'लेकिन चुनाव परिणामों में तो हम लोग ही सबसे नीचे थे!' दूसरे सदस्य ने दाढ़ी खुजाते हुए कहा, 'परिणामों में जो दिखे, वह असलियत थोड़े होती है! असलियत तो हमारे चार्ट में है।' वह चार्ट इतना रंगीन था कि उसमें हार भी जीत से ज्यादा सुंदर लग रही थी।

तीसरे सत्र का विषय था, रणनीति पुनर्परीक्षण सत्र। उसमें एक हारे हुए मुखर नेता ने कहा कि हमारी हार इसलिए हुई, क्योंकि हम जनता के दिल तक रास्ता नहीं बना पाए। इस पर एक अनुभवी नेता बोले, 'हमने बनाया तो था पर बीच में कहीं अति आत्मविश्वास का गड्ढा था, हम सभी उसी में गिर गए।' इसके बाद तुरंत ही एक समिति गठित की गई, 'दिल तक पहुंच मार्ग मरम्मत समिति।' इस पर एक गृह कलह से पीड़ित नेता ने पूछा, 'पिछली बार के चिंतन शिविर में भी तो यही समिति बनी थी। समिति ने पिछली बार क्या किया था?' उत्तर मिला कि अगले शिविर में उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है। सभी संतुष्ट हो गए, क्योंकि वे सभी जानते थे, समितियों का काम रिपोर्ट बनाने की बात करना होता है, फिर चाहे वह बने या कि न बने।

शिविर का चौथा सत्र 'चिंता-निरोधक सत्र' था। एक पराजित पहलवान के बैग से बाहर निकल कर चिंता बोल पड़ी, 'आप लोग इतनी मेहनत से चिंतन कर रहे हैं, पर मेरा नाम तक नहीं ले रहे!' शिविर के संचालक ने उत्तर दिया कि यह चिंतन शिविर है! चिंता बोली, 'लेकिन चिंतन का कारण अक्सर चिंता ही होता है, इसलिए मैं सभी चिंताओं की प्रतिनिधि बनकर आई हूं।' इस पर कुछ लोगों ने ताली बजा दी। चिंता को भी लगा जैसे उसका स्वागत हो रहा है। चिंतन शिविर के अंतिम निष्कर्ष सत्र में एक ही निष्कर्ष निकला कि कोई भी निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी और इसके लिए अगला चिंतन शिविर आयोजित किया जाएगा।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य: विश्व के रेअर अर्थ मेटल्स भंडार

ऊर्जा

आत्म-निर्मिति

यदि जीवन आपको कारागार जैसी किसी संकुचित परिस्थिति में डाल दे, जहां सब कुछ थमा सा लगे, रुका सा लगे, तब भी आपके पास अपने आप को समृद्ध करने, चिंतन को विस्तृत करने और बुद्धि को पैना करने का अविचल विकल्प विद्यमान है। हर समृद्धि भौतिक नहीं होती। हर प्रगति सांसारिक नहीं होती। धन एक संपदा है तो ज्ञान-चिंतन-मनन भी एक संपदा है। बाहरी प्रगति अवरुद्ध हो सकती है, किंतु अदृश्य आत्मसमृद्धि का विकल्प सदैव विद्यमान रहता है।

मानव-मस्तिष्क का विस्तार किसी भौतिक परिधि का दास नहीं, उसे साधना और आत्मचिंतन में जितना अधिक प्रवृत्त किया जाएगा, वह उतना ही अधिक विस्तृत होता जाएगा। इतिहास साक्षी है कि अनेकों महाग्रंथ, अनेक अमर विचार और अनेक दार्शनिक दृष्टियां उन्हीं एकांत कोठरियों में अंकुरित हुईं, जहां बाह्य जीवन की चहल-पहल नहीं के बराबर थी, परंतु वहां अंतर्मन का अविराम संवाद अनुनादित हो रहा था।

स्वयं को विकसित करने के लिए मनुष्य के पास सदैव एक आंतरिक ग्रंथालय होता है, जिसमें स्मृतियों, अनुभवों, जिज्ञासाओं और प्रश्नों का भंडार जमा रहता है। जिज्ञासाएं पैदा हों, प्रश्न जन्म लें और उनके उत्तरों की खोज में व्यक्ति लग जाए तो बौद्धिक संपदा व्यक्ति की झोली में स्वतः आ गिरती है। जहां आत्मा का दर्पण धूल-धूसरित नहीं रहता, नित्य स्वाध्याय और सतत मनन से उसे स्वच्छ किया जाता है, वहां सही समय पर सही सफलता के तमाम सूत्र एकत्र होते जाते हैं। मन की धार वहीं पैनी होती है, जहां विपरीत परिस्थितियों में उसे जंग लगने नहीं दिया जाता। जैसे कोई मूर्तिकार पत्थर से अनावश्यक अंशों को छांटता जाता है, उसी तरह प्रतिकूल समय में स्वयं पर कार्य करना चाहिए। पत्थर पर चोट करने के समय आकार दिखाई नहीं देता, पर तैयारी के साथ की गई हर चोट अंततः मूर्ति को एक सुंदर आकार दे जाती है।

ट्विंकल तोमर सिंह

राजरंग

मिठाई के मायने

भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की लंबी होती प्रतीक्षा से समर्थक बड़े बेसब्र हैं। अपने-अपने नेता को लेकर उनका अपना-अपना गणित है और अपना निष्कर्ष। ऐसी तमाम अटकलों-कयासों के बीच हाल ही में भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा दी गई दावत ने इन चर्चाओं में नया तड़का लगाने का काम किया। दरअसल, उस दावत में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अपने हाथों से राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को मिठाई खिलाई। फिर क्या, समर्थकों के अनुमान का एंटीना सिग्नल देने लगा कि इन्हीं तीन में से कोई एक नया अध्यक्ष बनेगा। कुछ समझदारों ने मिठाई के मायने समझाए कि तावड़े बिहार के प्रभारी महासचिव, प्रधान चुनाव प्रभारी और केशव सह-प्रभारी रहे और इस नाते उनकी मिठाई बनती थी, लेकिन समर्थकों का मन इस तर्क से संतुष्ट नहीं हुआ और इसलिए वे इंटरनेट मीडिया पर अपने-अपने नेता की जय-जयकार करने में जुट गए।

..ताकि प्रभावित न हो मतदान का रुझान

किसी चुनाव में मतदान प्रतिशत के आंकड़े देने में चुनाव आयोग को भला क्या एतराज हो सकता है, लेकिन बिहार चुनाव के दौरान आयोग ने कुछ ऐसा ही किया। पहले चरण के मतदान प्रतिशत के आंकड़े तो दिए, लेकिन इसमें महिला और पुरुषों का प्रतिशत स्पष्ट नहीं किया। इसे लेकर आयोग पर सवाल भी उठे। हालांकि दो चरणों के बाद आयोग ने सारा डाटा दिया। पहले चरण के मतदान के बाद महिला-पुरुष का मतदान प्रतिशत क्यों नहीं बताया, उसका राज आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पिछले दिनों खोला। उनकी मानें तो डर था कि यदि पहले चरण में पुरुषों की तुलना में महिलाओं के ज्यादा मतदान प्रतिशत की खबर आ जाती तो दूसरे चरणों में शायद लोग महिलाओं को घरों से निकलने ही नहीं देते। ऐसे में एसआइआर के बाद मतदान प्रतिशत बढ़ने के उनके दावे खोखले हो जाते। आयोग के इस रहस्योद्घाटन के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि बंगाल में मतदान बढ़ाने के लिए वह कौन सी तरकीब अपनाएगा।

समीक्षा और समीक्षक

चुनाव बाद होने वाली समीक्षा का यही मकसद होता है कि पार्टियां अपने गुण-दोषों का विवेकसम्मत मूल्यांकन करें। अतीत की गलतियों को भविष्य में न दोहराएं। इस लिहाज से बिहार में हुई करारी शिकस्त के बाद प्रदेश कांग्रेस के नेताओं तथा सभी पार्टी उम्मीदवारों की शीर्ष नेतृत्व द्वारा इसी हफ्ते बुलाई बैठक स्वाभाविक ही नहीं जरूरी भी थी। जैसा होता है कि कुछ पार्टी नेताओं तथा उम्मीदवारों के बीच हार के लिए एक दूसरे को दोषी ठहराते हुए तीखी बहस के कारण बैठक चर्चा में रही। मगर इसमें शामिल हुए बिहार के कुछ नेताओं ने इस पर हैरानी जताई कि वास्तव में गठबंधन सहयोगियों में सीट बंटवारे में देरी, टिकट बांटने में गंभीर पक्षपात से लेकर पैसे लेकर प्रत्याशी बनाने तथा जमीनी नेताओं की घोर अनदेखी जैसे मुद्दों की ईमानदारी से समीक्षा के बजाय यह बैठक केवल आक्रोश नरम करने का मंच भर बनकर रह गई। ऐसे नेताओं का तर्क था कि बिहार कांग्रेस के प्रभारी कृष्णा अल्लावरू, वरिष्ठ नेता अखिलेश सिंह, प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम, पप्पू यादव जैसे लोग जो पार्टी की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार हैं, अब वे ही हार की समीक्षा भी करेंगे। चुटकी लेते हुए किसी नेता ने कहा जब समीक्षा के लिए दोषी ही जज की भूमिका में बैठेंगे तो फिर भला सियासी किस्मत भगवान भरोसे क्यों न रहेगी?

अपनों ने ही खोल दिया मोर्चा

दिल्ली में बेलगाम हो रहे वायु प्रदूषण को लेकर पूर्व आइपीएस अधिकारी और पुडुचेरी की उपराज्यपाल रहीं किरण बेदी की पोस्ट खासी चर्चित हो रही हैं। पिछले एक हफ्ते के दौरान एक्स पर उनके दर्जनों पोस्ट में परोक्ष रूप से निशाने पर दिल्ली सरकार रही है। कुछ पोस्ट में तो पीएमओ को टैग करते हुए यह कहने से भी गुरेज नहीं किया कि केवल पीएम मोदी ही प्रदूषण के मौजूदा गंभीर संकट से उबार सकते हैं। जब 2015 में दिल्ली भाजपा का सीएम चेहरा रहीं बेदी ही अपनी पार्टी की सरकार को निशाने पर लेंगी तो विपक्षी दलों से नरमी की उम्मीद भला कैसे की जा सकती है।

पोस्ट

मैकाले कभी व्यक्ति का नाम रहा होगा। स्वतंत्र भारत में यह एक तरह की मानसिकता का नाम है।
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

एक ऐसे समय में जब दुनिया अस्थिरता एवं अनिश्चितता से जूझ रही है, तब भारतीय अर्थव्यवस्था का आठ प्रतिशत से अधिक वृद्धि दर्ज करने वाला प्रदर्शन उसकी बेजोड़ क्षमताओं को ही दर्शाता है। घरेलू मांग और सुधारों के दम पर आर्थिकी दहाई में वृद्धि दर्ज करने में भी सक्षम है।
अनिल अग्रवाल@AnilAgarwal_Ved

प्रधानमंत्री बार-बार दोहरा रहे हैं कि हमें औपनिवेशिक मानसिकता छोड़नी होगी। वहीं, देश में एक लाबी हैलोवीन और ब्लैक फ्राइडे जैसे जुमलों के जरिये औपनिवेशिक मानसिकता को ही पोषित करने का काम करने में लगी हुई है। प्रकाश सिंह@singh_prakash

नई पीढ़ी की कई कंपनियां साबित करती हैं कि साहसी विचार कहीं से भी उठकर पूरे उद्योग को बदल सकते हैं। भारत में अवसरों की कोई सीमा नहीं, बस हमें अपने सोच को बदलने और नए रास्तों को अपनाने की तैयारी रखनी होगी। विजय केडिया@VijayKedia1

जनपथ

सरकारी बंगला मिला तनिक न पालो मोह,
जाता पद के साथ यह होता बहुत बिछोह।
होता बहुत बिछोह न पालो भैंसी-गैया,
खूंटा जाए छूट कहां बांधोगे भैया!
अबकी वाली हार पड़ रही बहुतै भारी,
छूट रहा घर-द्वार राबड़ी से सरकारी!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 135

****

देश की सुरक्षा हर नागरिक की जिम्मेदारी : मोदी

राज्य ब्यूरो, नईदुनिया ● रायपुर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि देश की सुरक्षा हर नागरिक की जिम्मेदारी है। उन्होंने पुलिस बलों को आधुनिक तकनीक, डाटा-ड्रिवन माडल और एआइ आधारित समाधानों को अपनाने की सलाह दी, जिससे सुरक्षा प्रणाली को और प्रभावी बनाया जा सके।

छत्तीसगढ़ के नवा रायपुर में आयोजित 60वीं डीजीपी-आइजी कान्फ्रेंस के दूसरे दिन अध्यक्षता करते हुए पीएम मोदी ने पुलिस बलों की सेवाओं, समर्पण और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उनके कार्यों की सराहना की। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए डिजिटल टूल्स के उपयोग और राज्यों के बीच साझा रणनीति की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रधानमंत्री मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के समक्ष शनिवार को चार प्रमुख सत्र आयोजित हुए। इनमें वामपंथी उग्रवाद, आतंकवाद-निरोध, आपदा प्रबंधन, महिला सुरक्षा और पुलिसिंग में एआइ व फोरेंसिक तकनीक के उपयोग जैसे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।

इंटेलिजेंस ब्यूरो के विशेष निदेशक तपन कुमार डेका ने देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए विजन 2047 का रोडमैप पेश किया। छग के डीजीपी अरुण देव गौतम ने सुरक्षा स्थिति पर रिपोर्ट पेश की।

रायपुर में डीजीपी/आइजीपी सम्मेलन में देश की सुरक्षा व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करते पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह व अन्य ● सौजन्य : एक्स

> रायपुर में पुलिस महानिदेशक-पुलिस महानिरीक्षक सम्मेलन के पहले दिन भारत की सुरक्षा व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक विचार-विमर्श हुआ। यह इस क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रथाओं और नवाचारों को साझा करने का एक बेहतरीन मंच है।
>
> – **पीएम नरेन्द्र मोदी** (एक्स पर पोस्ट)

- **छत्तीसगढ़ में डीजीपी-आइजी कान्फ्रेंस के दूसरे दिन प्रधानमंत्री ने की अध्यक्षता**
- **पुलिस बलों को आधुनिक तकनीक व एआइ आधारित समाधानों को अपनाने की सलाह**

दो दिन में इन विषयों पर मंथन

- जन-आंदोलनों के प्रभावी प्रबंधन के लिए मजबूत और प्रभावी तंत्र की आवश्यकता।
- भारतीय भगोड़ों की वतन वापसी के लिए रोडमैप तैयार करना।
- अनुसंधान में फोरेंसिक तकनीक के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देना।
- सफल जांच सुनिश्चित करने और अपराध समाधान दर बढ़ाने की रणनीतियां।

दस्यु आतंक के खात्मे में थी दलजीत चौधरी की अहम भूमिका

नीलू रंजन ● जागरण

- **उपलब्धियों भरा रहा डीजी बीएसएफ के पद से सेवानिवृत्त हुए चौधरी का सेवाकाल**
- **डीजीपी-आइजी सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री शाह ने थपथपाई पीठ**

दलजीत सिंह चौधरी ● सौ. बीएसएफ

नई दिल्ली: उत्तर प्रदेश से लेकर मध्य प्रदेश के बीहड़ों में कभी आतंक का पर्याय रहे दस्यु गिरोह भले ही अब दफन हो चुके हैं पर उनके खात्मे का जिक्र आते ही यूपी कैडर के आइपीएस अधिकारी (1990 बैच) दलजीत सिंह चौधरी का नाम सबसे पहले आता है। कुख्यात निर्भय गुर्जर से लेकर कई दस्यु सरगनाओं के खात्मे में उनकी भूमिका को हटाकर पुलिस वीरता की कहानी नहीं लिखी जा सकती। बहादुरी के लिए उन्हें चार बार राष्ट्रपति के वीरता पदक (गैलेंट्री) से सम्मानित किया गया। सेवानिवृत्ति के दिन 30 नवंबर तक वे डीजी बीएसएफ (सीमा सुरक्षा बल) के रूप में छत्तीसगढ़ के रायपुर में आयोजित डीजीपी-आइजी सम्मेलन में देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए अपना योगदान देते रहे। 28 से 30 नवंबर तक आंतरिक सुरक्षा के सबसे बड़े सम्मेलन में पीएम मोदी व केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने सराहनीय कार्यों के लिए उनकी पीठ भी थपथपाई।

कार्यकाल के अंतिम दिन डीजीपी सम्मेलन में भाग ले रहे दलजीत चौधरी के लिए बीएसएफ में परंपराओं से हटकर चार दिन पहले विदाई परेड का आयोजन किया गया था। बीएससी और एलएलबी की पढ़ाई करने वाले दलजीत चौधरी को 35 वर्ष की सेवा में चार वीरता पदक के साथ अति उत्कृष्ट व सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पदक से सम्मानित किया गया। एक निशानेबाज के रूप में भी उनकी विशिष्ट पहचान रही। आइपीएस के रूप में चौधरी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में एसपी और एसएसपी के रूप में तैनात रहे।

इटावा में 20 जुलाई, 2004 से 19 जनवरी, 2006 तक एसएसपी रहते हुए उन्होंने दस्यु आतंक के खात्मे की जंग छेड़ी थी। वह 19 जनवरी, 2006 से 14 मई, 2007 तक डीआइजी कानपुर रेंज के पद पर भी तैनात रहे और दस्यु उन्मूलन का अपना अभियान जारी रखा। तब दस्यु निर्भय गुर्जर के अलावा अरविंद गुर्जर, रज्जन गुर्जर, सलीम गुर्जर, जगजीवन परिहार व अन्य सक्रिय थे। इटावा के एसएसपी व कानपुर रेंज के डीआइजी के रूप में उन्होंने 50 से अधिक डकैतों का सामना किया, जिसके परिणाम स्वरूप कई मारे गए। उन्होंने निर्भर गुर्जर समेत अन्य दस्यु गिरोहों को बेहद कमजोर कर दिया था। उनकी इस जंग को बाद में अन्य अधिकारियों व एसटीएफ ने बढ़ाया और निर्भय गुर्जर, शिवकुमार पटेल उर्फ ददुआ व अंबिका पटेल उर्फ ठोकिया का खात्मा होता चला गया। पुलिस को उप्र को दस्तु आतंक से मुक्त कराने में कामयाबी मिली। चौधरी आइजी प्रयागराज रेंज व एडीजी प्रयागराज रेंज के अलावा ईओडब्ल्यू में भी तैनात रहे। चौधरी नौ सितंबर, 2015 से आठ मई, 2017 तक एडीजी कानून-व्यवस्था के महत्वपूर्ण पद पर भी तैनात रहे।

केंद्रीय प्रतिनियुक्ति के दौरान एडीजी आइटीबीपी व एडीजी सीआरपीएफ, जम्मू-कश्मीर जोन के पद पर भी रहे। अगस्त 2024 में उन्हें डीजी बीएसएफ बनाया गया था। बीएसएफ में उनका सेवाकाल आपरेशन सिंदूर में बल की उत्कृष्ट भूमिका को भी याद किया जाएगा।

(लखनऊ से आलोक मिश्र के इनपुट के साथ)

एक नजर में

राजस्थान में 16 से कम उम्र के बच्चे को स्कूल में मोबाइल उपयोग पर रोक के निर्देश

जयपुर: राजस्थान उच्च न्यायालय ने 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए स्कूल में मोबाइल, आनलाइन खेल और इंटरनेट मीडिया के उपयोग पर रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। उच्च न्यायालय ने इसके लिए राज्य सरकार के गृह एवं शिक्षा विभाग को अभिभावक संगठनों के साथ मिलकर गाइडलाइन तय करने के भी निर्देश दिए हैं। साथ ही न्यायालय ने किसी भी व्यक्ति के नाम से तीन से अधिक मोबाइल सिम कार्ड जारी करने पर रोक को लेकर भी एसओपी तय करने के निर्देश दिए हैं। न्यायाधीश रवि चिरानिया की पीठ ने ठगी के दो आरोपितों की जमानत याचिका पर सुनवाई कर राज्य सरकार के गृह, शिक्षा एवं पुलिस विभाग को निर्देश दिए हैं। (जासं)

बंगाल में भाजपा सरकार बनने पर सड़कों पर नहीं होगी नमाज : सुकांत

कोलकाता: केंद्रीय मंत्री और बंगाल भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा है कि राज्य में भाजपा की सरकार बनने पर सड़कों पर नमाज पढ़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी। शुक्रवार शाम कोलकाता से सटे बैरकपुर में भाजपा की विजय संकल्प यात्रा के दौरान सुकांत ने कहा कि मुझे यह देख हैरानी हुई कि महानगर के अति व्यस्त बड़ाबाजार इलाके से जब मैं दिन में गुजर रहा था, तो सड़क अवरुद्ध कर नमाज पढ़ी जा रही है। (राब्यू)

'सीमा पर बाड़ का मुद्दा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा, देरी बर्दाश्त नहीं'

कोर्ट ने कहा- तारबंदी न होने से घुसपैठ व तस्करी होती

- **भारत-बांग्लादेश सीमा पर बाड़ लगाने के लिए राज्य की ओर से जमीन मुहैया नहीं कराने पर हाई कोर्ट नाराज**
- **बंगाल सरकार की ओर से और समय मांगने पर कहा, राज्य सरकार इससे पहले भी ले चुकी है समय**

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: कलकत्ता हाई कोर्ट ने भारत-बांग्लादेश सीमा के खाली हिस्सों पर कांटेदार तार (बाड़) लगाने के लिए राज्य सरकार की ओर से जमीन मुहैया नहीं कराए जाने पर कड़ी नाराजगी जताई है। मामले की सुनवाई के दौरान राज्य ने इसके लिए अतिरिक्त समय की मांग की, जिस पर कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश ने असंतोष व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार इससे पहले भी समय ले चुकी है। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर कांटेदार तार लगाने का मुद्दा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है। इतने गंभीर मामले में और समय नहीं दिया जा सकता। अदालत ने राज्य सरकार को रिपोर्ट दाखिल करने के लिए एक सप्ताह का अतिरिक्त समय प्रदान किया है। बंगाल की 2,216 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश से लगती है। इस लंबी सीमा में करीब 600 किलोमीटर में तारबंदी नहीं है। जिसकी वजह से घुसपैठ और तस्करी होती रहती है।

हाई कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर कर भारत-बांग्लादेश सीमा के खाली हिस्सों पर बाड़ लगाने की मांग की गई है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश सुजय पाल की खंडपीठ ने कहा कि अगर राज्य की रिपोर्ट में कोई सकारात्मक संकेत नहीं मिलता है, तो सुनवाई लगातार की जाएगी। केंद्र की ओर से अतिरिक्त सालिसिटर जनरल अशोक चक्रवर्ती ने कहा कि बाड़ निर्माण के लिए आवश्यक जमीन खरीदने के लिए धनराशि दी जा चुकी है, इसके बावजूद राज्य ने पहल नहीं की है। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा तारबंदी न किए जाने को राज्य सरकार जिम्मेदार है।

बंगाल के राज्यपाल ने राजभवन का नाम बदल 'लोक भवन' रखा

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: बंगाल के राज्यपाल डा सीवी आनंद बोस ने शनिवार को एक महत्वपूर्ण फैसले में केंद्र सरकार के एक हालिया निर्देश को सबसे पहले लागू करते हुए कोलकाता स्थित राजभवन का नाम बदलकर 'लोक भवन' कर दिया। इसी के साथ कोलकाता राजभवन देश का पहला राजभवन बन गया है जिसका केंद्र के निर्देश पर तत्काल अमल करते हुए नाम बदलकर 'लोक भवन' किया गया है।

राजभवन की ओर से जारी एक आधिकारिक अधिसूचना में कहा गया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के 25 नवंबर 2025 के पत्र के अनुरूप, यह अधिसूचित किया जाता है कि कोलकाता के राजभवन, बैरकपुर स्थित फ्लैगस्टाफ हाउस और दार्जिलिंग में स्थित राजभवन परिसरों का नाम बदलकर लोक भवन कर दिया गया है। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। अधिसूचना जारी होने के कुछ घंटे बाद राज्यपाल बोस ने दोपहर में एक औपचारिक समारोह में राजभवन वाला नाम पट्टिका हटाकर लोक भवन वाला नया पट्टिका लगा दिया।

एनआइए ने दो आतंकियों को 20 महीने कैद की सजा सुनाई

जागरण संवाददाता ● लखनऊ: एनआइए की विशेष अदालत ने अल-कायदा से जुड़े आतंकी साजिश मामले में मोहम्मद मुस्तकीम और शकील को दोषी करार देते हुए 20 महीने कैद की सजा सुनाई है। अदालत ने दोनों पर 5,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया है। दोनों आरोपितों को आर्म्स एक्ट की धारा 25 (1बी)(अ) और आइपीसी की धारा 120बी के तहत दोषी पाया गया। यह सजा एनआइए द्वारा दाखिल मुख्य और पूरक आरोप पत्रों पर सुनवाई के बाद दी गई।

एनआइए के अनुसार, यह केस अल-कायदा की यूपी में सक्रिय की जा रही इकाई 'अंसार गजवातुल हिंद' से जुड़ा है, जिसका उद्देश्य 15 अगस्त 2021 से पहले यूपी के कई शहरों, खासकर लखनऊ में आतंकी वारदात अंजाम देना था। जांच में सामने आया कि अल-कायदा से जुड़े उमर हलमांडी ने लखनऊ में माड्यूल बनाने के लिए कुछ युवकों की पहचान और भर्ती की थी। मो. मोइद, शकील और मुस्तकीम ने मिनहाज और मुसीरुद्दीन को हथियार और गोला-बारूद उपलब्ध कराने में मदद की। मिनहाज को तौहीद और आदिल नबी ने कथित रूप से कट्टरपंथी बनाया था।

नाश्ते पर मिले सीएम सिद्दरमैया और डीके शिवकुमार, बोले-हम एक हैं

कर्नाटक के सीएम सिद्दरमैया बेंगलुरु स्थित आवास पर उपमुख्यमंत्री शिवकुमार संग नाश्ते पर चर्चा करते ● एएनआइ

- **सीएम व डिप्टी सीएम का दावा- हमारे बीच कोई मतभेद नहीं**
- **सिद्दरमैया बोले, कोई विधायक या मंत्री सरकार के खिलाफ नहीं**

बेंगलुरु, प्रेट्र : कर्नाटक में पिछले कुछ समय से चल रहे सत्ता संघर्ष में शनिवार सुबह अप्रत्याशित रूप से नया मोड़ आ गया। मुख्यमंत्री सिद्दरमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार बेंगलुरु में नाश्ते पर मिले। नेतृत्व परिवर्तन की अटकलों के बाद यह उनकी पहली संयुक्त बैठक थी। बाद में दोनों नेताओं ने प्रेस कान्फ्रेंस में एकजुटता का दावा कर कहा कि उनके बीच कोई मतभेद नहीं है और भविष्य में भी वे एकजुट रहेंगे।

शिवकुमार सिद्दरमैया के आवास 'कावेरी' पर नाश्ते के लिए पहुंचे थे। शीर्ष पद के लिए कुछ समय से संघर्ष करते दिखाई दे रहे दोनों नेताओं ने कहा कि वे पार्टी हाईकमान के निर्णय का पालन करेंगे। यह बैठक कांग्रेस हाई कमान के निर्देश पर आयोजित की गई थी, ताकि ढाई साल पुरानी सरकार के सामने आ रही समस्याओं का समाधान किया जा सके।

सिद्दरमैया ने कहा कि मैंने शिवकुमार के साथ नाश्ते पर मुलाकात की, क्योंकि कुछ अनावश्यक भ्रम उत्पन्न हो गया था। यह भ्रम मीडिया द्वारा उत्पन्न किया गया था। हमारे बीच कोई मतभेद नहीं है और भविष्य में भी नहीं होगा। मंत्रियों और सत्तारूढ़ पार्टी के विधायकों में से कोई भी सरकार के खिलाफ नहीं है। शिवकुमार ने कहा कि जनता ने कांग्रेस का समर्थन कर उसे सत्ता सौंपी है। इसलिए पार्टी को उनकी उम्मीदों पर खरा उतरना होगा। शिवकुमार ने मुख्यमंत्री के साथ मतभेदों को खारिज करते हुए कहा कि हमारे बीच कोई गुटबाजी नहीं है। हम साथ चलेंगे, सबको साथ लेकर चलेंगे और हाई कमान के फैसले का पालन करेंगे।

बताते चलें, सभी की निगाहें इस बैठक के परिणाम पर टिकी थीं। सिद्दरमैया दावा कर रहे थे कि उन्हें पूरे पांच साल के लिए मुख्यमंत्री बने रहने का जनादेश मिला है, जबकि शिवकुमार ने संकेत दिया था कि उनसे ढाई साल बाद सत्ता सौंपने का वादा किया गया था। कांग्रेस हाईकमान ने दोनों नेताओं से मुद्दे को सुलझाने को कहा था।

सुलह के लिए इस फार्मूले की हो रही चर्चा : सिद्दरमैया और शिवकुमार के बीच नेतृत्व संबंधी मतभेद एक नए फार्मूले से सुलझने का दावा किया जा रहा है। इस फार्मूले की जानकारी टुकड़ों में सामने आ रही है। अंतिम तस्वीर दिल्ली में कांग्रेस हाईकमान द्वारा कोई फैसला लिए जाने के बाद ही स्पष्ट होगी। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि इस मुलाकात ने यह सुनिश्चित किया कि कांग्रेस दोनों नेताओं के तनावपूर्ण संबंधों को तूल न दे। इसके बदले ऐसा रास्ता निकाला, जिससे तनाव को कम किया जा सके।

राजनीतिक जानकारों द्वारा जिस फार्मूले का जिक्र किया जा रहा है, उसके तहत शिवकुमार को फिलहाल शांत रहना होगा और सत्ता हस्तांतरण होने तक उपमुख्यमंत्री बने रहना होगा।

विपक्षी दलों ने समझौते पर उठाया सवाल: कर्नाटक में विपक्षी भाजपा और जदएस ने संकेत दिया कि दोनों नेताओं के बीच महीनों से चल रहे तनाव के बाद सामान्य स्थिति संभव नहीं हो सकती है। भाजपा नेता आर अशोक ने कहा कि सिद्दरमैया अपना पद छोड़ने को तैयार नहीं हैं, जबकि शिवकुमार बार-बार कह रहे हैं कि उन्हें ढाई साल के लिए मुख्यमंत्री बनाने का वादा किया गया था। शिवकुमार ने यह भी स्पष्ट रूप से कहा है कि यह समझौता छह लोगों की उपस्थिति में किया गया था।

बंगाल में एसआइआर फार्म भरने में मुस्लिम बहुल क्षेत्र आगे

राज्य ब्यूरो,जागरण, कोलकाता: बंगाल में एसआइआर गणना फार्म भरने में मुस्लिम बहुल क्षेत्र आगे हैं। बूथ स्तरीय अधिकारी (बीएलओ) के साथ मिलकर स्थानीय लोग गणना फार्म भर रहे हैं। बीएलओ के जरिए आयोग को दी गई जानकारी और तृणमूल के सांगठनिक स्तर पर सामने आ रही जानकारी की तुलना करें तो पता चलता है कि गणना फार्म भरने के मामले में मुर्शिदाबाद की जंगीपुर लोकसभा सीट अभी भी सबसे आगे है। जंगीपुर जहां नागरिकता संशोधन एक्ट (सीएए) और वक्फ संशोधन एक्ट के विरोध में हिंसा भड़की थी, वहां एसआइआर तेजी से आगे बढ़ रहा है। चुनाव आयोग के अनुसार, राज्य के 7.66 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 88 प्रतिशत ने शुक्रवार तक अपना गणना फार्म प्राप्त और डिजिटाइज कर लिया हैं।

मुस्लिम बहुल क्षेत्रों बशीरहाट, कूचबिहार, रायगंज लोकसभा क्षेत्रों में 90 प्रतिशत से अधिक गणना फार्म भरे जा चुके हैं। खास बात यह है कि मुर्शिदाबाद जिले में तृणमूल ने आरोप लगाया है कि एसआइआर से घबराहट की वजह से छह वोटरों की मौत हो गई है। लेकिन उस जिले में मुस्लिम बहुल इलाके के बाद उसके विधानसभा क्षेत्रों में गणना फार्म भरने का काम बढ़ गया है।

सीमावर्ती जिलों के मुस्लिम बहुल इलाकों में 90 प्रतिशत से अधिक गणना फार्म भरे जा चुके हैं

मसौदा सूची से पहले बढ़ाई राज्य की सुरक्षा

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: पश्चिम बंगाल पुलिस निदेशालय ने कोलकाता पुलिस और दूसरे पुलिस कमिश्नरेट के अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी थानों को राज्य में नौ दिसंबर को मसौदा मतदाता सूची जारी होने के बाद कानून-व्यवस्था बिगड़ने की आशंका को देखते हुए सुरक्षा बढ़ाने के आदेश दिए हैं। पुलिस को आशंका है कि मतदाता सूची से बड़ी संख्या में असली मतदाताओं के नाम हटा दिए गए तो बड़े पैमाने पर तनाव फैल सकता है। यह निर्देश केंद्रीय चुनाव आयोग द्वारा किए गए त्रिस्तरीय मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) काम के पहले चरण के खत्म होने पर आया है।

पार्टी सांसदों के साथ बैठक की सीसीटीवी फुटेज जारी करे आयोग : तृणमूल

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: तृणमूल कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग को उसके शीर्ष अधिकारियों के साथ पार्टी सांसदों के प्रतिनिधिमंडल की हुई 55 मिनट की बैठक का पूरा ट्रांसक्रिप्ट (सीसीटीवी फुटेज) जारी करने की चुनौती दी। तृणमूल के 10 सांसदों के एक प्रतिनिधिमंडल ने राज्य में जारी एसआइआर संबंधी विभिन्न शिकायतों को लेकर शुक्रवार को दिल्ली में निर्वाचन आयोग का दरवाजा खटखटाया था और एसआइआर के चलते कई मौतों का आरोप लगाया था। संवाददाता सम्मेलन में रास में तृणमूल के नेता डेरेक ओ ब्रायन व पार्टी के अन्य सांसदों ने आयोग पर सवालों का जवाब न देने का आरोप लगाया था।

बैंक में फिक्स्ड डिपाजिट की तय ब्याज दर घटाना अवैध : कोर्ट

विधि संवाददाता, जागरण ● प्रयागराज: इलाहाबाद हाई कोर्ट ने फिक्स्ड डिपाजिट कराने वाले जमाकर्ताओं को बड़ी राहत देते हुए कहा कि बैंक एक बार तय और घोषित की गई ब्याज दर में बाद में एकतरफा कमी नहीं कर सकते। न्यायमूर्ति अजित कुमार की खंडपीठ ने नेम कुमार जैन व एक अन्य की याचिका पर सुनवाई के दौरान बैंक द्वारा ब्याज दर घटाने की कार्रवाई को अवैध घोषित किया।

याचियों ने कहा कि ओरिएंटल बैंक आफ कामर्स (जिसका वर्ष 2020 में पंजाब नेशनल बैंक में विलय हो गया) ने उनके जमा पर निर्धारित 10.75 प्रतिशत और 10.25 प्रतिशत ब्याज को घटाकर 9.25 प्रतिशत और 8.25 प्रतिशत कर दिया था। उन्होंने मांग की कि मूल निर्धारित दर पर ही ब्याज की गणना करें।

आइएएस वर्मा को 'बरी' करने वाले न्यायाधीश पर कड़ी कार्रवाई संभव

हाई कोर्ट ने दी है अनुमति, इसके बाद पुलिस ने न्यायाधीश से पूछताछ के लिए 50 सवालों की सूची बनाई

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: ब्राह्मण बेटियों पर असभ्य टिप्पणी करने वाले विवादित आइएएस अधिकारी और मध्य प्रदेश अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी कर्मचारी संघ (अजाक्स) के अध्यक्ष संतोष वर्मा पर दर्ज फर्जीवाड़ा केस की फाइल फिर से खुल गई है। इस मामले में पुलिस एक न्यायाधीश के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर सकती है। पुलिस ने हाई कोर्ट की अनुमति के बाद न्यायाधीश से पूछताछ के लिए 50 सवालों की सूची तैयार की है।

वास्तव में वर्मा ने कूटरचित न्यायालय आदेश के माध्यम से आइएएस कैडर में पदोन्नति प्राप्त की थी। उनके खिलाफ एक महिला ने शारीरिक शोषण का मुकदमा दर्ज कराया था। इसी मामले में उन्होंने बरी होने का फर्जी आदेश दिखाकर आइएएस कैडर में पदोन्नति का रास्ता साफ किया था। जब यह मामला उजागर हुआ, तो इसमें स्पेशल जज विजेंद्र सिंह रावत की भूमिका भी संदिग्ध पाई गई। इसके बाद उनका तबादला कर मामले को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था। यह मामला हाई कोर्ट में चल रहा था। चार वर्ष पुराने इस केस में पुलिस अभी तक हाई कोर्ट की अनुमति का इंतजार कर रही थी। एसीपी विनोद दीक्षित ने हाई कोर्ट से मिली अनुमति की पुष्टि करते हुए कहा है कि कोर्ट ने पुलिस के प्रतिवेदन पर विधि अनुसार कार्रवाई की अनुमति दे दी है।

पूर्व सीएम बघेल के करीबी के खातों में 441 करोड़ का लेन-देन

नईदुनिया प्रतिनिधि, रायपुर: छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के करीबी बिलासपुर निवासी कथित तांत्रिक कृष्ण कुमार श्रीवास्तव उर्फ केके और उसके बेटे कंचन श्रीवास्तव के खिलाफ पुलिस ने एक बड़े वित्तीय और आपराधिक नेटवर्क का राजफाश किया है।

पुलिस ने कोर्ट में एक विस्तृत चार्जशीट पेश की है, जिसमें करोड़ों के हवाला लेन-देन, विदेशों में निवेश और महादेव आनलाइन सट्टा एप से जुड़े गंभीर आरोप शामिल हैं। चार्जशीट में बताया गया है कि केके और उसके बेटे ने हवाला चैनल के माध्यम से चीन और आस्ट्रेलिया में करोड़ों रुपये का निवेश किया है। दोनों के बैंक खातों की जांच में 441 करोड़ रुपये के संदिग्ध लेन-देन का राजफाश हुआ है।

चंडीगढ़ के बाद अब एफसीआइ में जीएम बाहरी काडर की तैयारी

इन्द्रप्रीत सिंह ● जागरण

- **मुख्यमंत्री मान ने शाह को पत्र लिख दखल देने की मांग की**
- **बाहरी काडर का अधिकारी हालात से नहीं होगा परिचित**

चंडीगढ़: चंडीगढ़ में पंजाब कोटे के अधिकारियों की जगह यूटी काडर के अधिकारी लगाने, बीबीएमबी में पंजाब का कोटा कम करने के बाद अब केंद्र सरकार एफसीआइ में जनरल मैनेजर को बाहरी काडर से लगाने की तैयारी कर रही है। ऐसे संकेत केंद्र सरकार की ओर से इस पद के लिए राज्य सरकार की ओर से दो बार भेजे गए पैनल को रद करने से मिले हैं। इसी से नाराज होकर मुख्यमंत्री भगवंत मान ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिख दखल देने की अपील की है। मुख्यमंत्री ने यह मामला हाल ही में हुई उत्तर जोनल काउंसिल की बैठक में भी उठाया था।

एफसीआइ के गठन के बाद से पंजाब रीजन के लिए राज्य के आइएएस अधिकारी को ही इसकी जिम्मेदारी दी जाती रही है। इस समय बी. श्रीनिवासन इस जिम्मेदारी को निभा रहे हैं। उनका डेपुटेशन 31 दिसंबर को पूरा हो रहा है। उनकी जगह नया अधिकारी लगाने के लिए राज्य सरकार ने दो बार पैनल भेजा था लेकिन केंद्र ने किसी का चयन नहीं किया। मुख्यमंत्री ने इस कदम पर आपत्ति जताई है। पत्र में तर्क दिया कि राज्य सुरक्षा, कृषि और सामाजिकसंवेदनशीलता की जमीनी हकीकत से परिचित अधिकारी को ही एफसीआइ का जीएम लगाना चाहिए।

'कम एकता पर गांधी के विचार औपनिवेशिक शिक्षा से प्रभावित'

संघ प्रमुख मोहन भागवत नागपुर के में आयोजित नागपुर बुक फेस्टिवल के दौरान बोलते हुए ● एएनआइ

- **संघ प्रमुख ने कहा, विवाद करना देश की प्रकृति में नहीं, एकजुट रहना, भाईचारा बढ़ाना परंपरा**
- **'राष्ट्र की अवधारणा प्राचीन, जैविक और पश्चिमी अवधारणा से मौलिक रूप से भिन्न**

राज्य ब्यूरो, मुंबई : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि महात्मा गांधी का यह कहना कि ब्रिटिश शासन से पहले भारतीयों में एकता का अभाव था, औपनिवेशिक शिक्षा से प्रेरित एक झूठी कहानी है। गांधीजी ने अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में लिखा है कि अंग्रेजों के आने से पहले हम एकजुट नहीं थे। लेकिन, यह उनके द्वारा हमें सिखाई गई झूठी कहानी है। गांधीजी द्वारा 1908 में गुजराती में लिखी गई और 1909 में उनके द्वारा ही अंग्रेजी में अनुवादित हिंद स्वराज में 20 अध्याय हैं। यह एक पत्रिका के पाठक और संपादक के बीच संवाद के रूप में लिखी गई है। वह शनिवार को नागपुर में राष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव को संबोधित कर रहे थे।

भागवत ने कहा कि भारत की 'राष्ट्र' की अवधारणा प्राचीन, जैविक और राष्ट्र की पश्चिमी अवधारणा से मौलिक रूप से भिन्न है। हमारा किसी से कोई विवाद नहीं है। हम विवादों से दूर रहते हैं। विवाद करना हमारे देश की प्रकृति में नहीं है। एकजुट रहना और भाईचारा बढ़ाना हमारी परंपरा है। जबकि, दुनिया के अन्य हिस्से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में विकसित हुए हैं। वहां एक बार कोई राय बन जाने के बाद उस विचार के अलावा कुछ भी अस्वीकार्य हो जाता है। वे अन्य विचारों के लिए दरवाजे बंद कर देते हैं और उसे 'वाद' कहना शुरू कर देते हैं। दूसरी ओर हम 'राष्ट्रीयता' शब्द का उपयोग करते हैं, 'राष्ट्रवाद' का नहीं।

राष्ट्र के प्रति उनके (अन्य देशों के) अत्यधिक अहंकार के कारण दो विश्व युद्ध हुए। यही वजह है कि कुछ लोग राष्ट्रवाद शब्द से डरते हैं।

उन्होंने कहा भारत हमेशा से एक 'राष्ट्र' रहा है। यहां तक कि विभिन्न शासनों और विदेशी शासन के दौर में भी। हम सब भाई हैं, क्योंकि हम भारत माता की संतान हैं। विविधता के बावजूद हम एकजुट हैं, क्योंकि यही हमारी मातृभूमि की संस्कृति है।

एआइ का उपयोग मानव जाति के लाभ के लिए हो: इस कार्यक्रम में युवा लेखकों के साथ बातचीत करते हुए भागवत ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) जैसी प्रौद्योगिकियों के आगमन को रोका नहीं जा सकता। लेकिन, हमें इस पर अपना अधिकार बनाए रखना चाहिए और उपयोग करते समय अपनी गरिमा बनाए रखनी चाहिए। एआइ का उपयोग मानव जाति के लाभ के लिए तथा मनुष्य को बेहतर बनाने के लिए किया जाना चाहिए।

पंजाब में रोडवेज कर्मियों की हड़ताल जारी, 152 कर्मचारी किए बर्खास्त

इन्द्रप्रीत सिंह ● जागरण

कुराली बस स्टाप पर यात्रियों से बात करते सीएम भगवंत मान ● वीडियो ग्रैब

चंडीगढ़: पंजाब में किलोमीटर स्कीम का विरोध कर रहे रोडवेज के संविदा कर्मियों की हड़ताल शनिवार को दूसरे दिन भी जारी रही। बसें न चलने परेशान यात्रियों से मिलने मुख्यमंत्री भगवंत मान शनिवार तड़के करीब साढ़े चार बजे ही रूपनगर जिले के कुराली के बस स्टाप पर पहुंच गए। ठंड में खड़े यात्रियों के साथ बातचीत की और उनकी समस्याएं सुनीं। इसके बाद अधिकारियों को कार्रवाई का निर्देश दिया। शाम तक परिवहन विभाग ने 152 हड़ताली कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया। बाकियों को काम पर लौटने का अल्टीमेटम दिया गया है। काम पर न लौटने पर उनकी सेवाएं समाप्त कर दी जाएंगी। परिवहन मंत्री लालजीत भुल्लर ने रविवार दोपहर 12 बजे बातचीत के लिए रोडवेज यूनियन की चंडीगढ़ में बैठक भी बुलाई है।

कुराली बस स्टाप पर श्री हरमंदिर साहिब अमृतसर, श्री आनंदपुर साहिब, डेरा व्यास जाने के लिए खड़े यात्रियों ने सीएम को बताया कि वह ठंड में पिछले करीब एक घंटे से बस का इंतजार कर रहे हैं। इसके बाद सीएम ने डीसी को मौके पर बुलाकर दिशानिर्देश दिए।

****

Machine Translated by Google

विज्ञान

समुद्री पक्षियों, मैमल्स, कछुओं के लिए कितना प्लास्टिक बहुत ज़्यादा है?

दिव्या गांधी

लगभग 1,300 समुद्री प्रजातियाँ, जिनमें समुद्री पक्षियों और समुद्री जीवों का हर परिवार शामिल है स्तनधारी, कठिन निगलते हैं और नरम प्लास्टिक, रबर, और मलबे को बहाया। यह दुखद आदत इनमें से कई को मार सकती है समुद्री जानवरों में जठरांत्र संबंधी मार्ग को अवरुद्ध या छिद्रित करके या घुमाकर

आंतें।

कार्यवाही में एक अध्ययन राष्ट्रीय अकादमी के विज्ञान ने मात्रा निर्धारित की है प्लास्टिक की मात्रा समुद्री पक्षी, समुद्री स्तनधारी, और समुद्री कछुए निगलते हैं और न्यूनतम मात्रा जो प्लास्टिक घातक है उनके जठरांत्र पथ को घायल कर दिया।

शोधकर्ताओं ने टोरंटो विश्वविद्यालय के अध्ययन से प्रकाशित डेटा 57 स्रोतों से समुद्री जानवरों पर 10,000 से अधिक शव परीक्षण किए गए और

पाया गया कि 35% समुद्री पक्षी, समुद्री स्तनधारियों का 12%, और 47% समुद्री कछुओं में प्लास्टिक निगल लिया — और कि 1.6%, 0.7%, और 4.4% क्रमशः एक के रूप में मृत्यु हो गई थी नतीजा। स्टडी में शामिल था 1,537 समुद्री पक्षी (57 प्रजातियाँ), 7,569 समुद्री स्तनधारी (31 प्रजातियाँ), और 1,306 समुद्री कछुए (सात प्रजातियाँ)।

महासागर प्लास्टिक अनुसंधान महासागर संरक्षण प्रबंधक और अध्ययन के सह-लेखक एरिन मर्फी ने द हिंद-डू को बताया, "सबसे आम हमारे समुद्री स्तनधारियों डेटासेट धारीदार थे डॉल्फ़िन, शुक्राणु व्हेल, दक्षिण अमेरिकी फर सील, और फ्लोरिडा मैनेटी। पक्षियों में, अल्बा-ट्रॉस, गल और टर्न थे ज़्यादातर पीड़ितों के रूप में सभी सात प्रजातियाँ थीं समुद्री कछुए। निगले गए मैक्रोप्लास्टिक के छह से 405 टुकड़े, जिनकी मात्रा लगभग 100 ग्राम है 0.044 से 39.89 मिलीलीटर प्रति शरीर की लंबाई का सेमी, "की ओर ले जाता है मृत्यु की 90% संभावना इन समुद्री प्रजातियों में, कागज़ मिला।

समुद्री पक्षियों के लिए रबर सबसे घातक था, नरम प्लास्टिक और कंकड़ का मलबा

समुद्री स्तनधारी, और कठोर और नरम प्लास्टिक के लिए समुद्री कछुए।

"जोखिम का आकलन मैक्रोप्लास्टिक अंतर्ग्रहण भी माइक्रोप्लास्टिक्स की तुलना में चुनौतियां खड़ी करता है। पेपर में लिखा था। "जबकि लैब में स्टडीज़ हो सकती हैं मात्रात्मक जानकारी देने के लिए उपयोग किया जाता है माइक्रो-प्लास्टिक के लिए जोखिम आकलन, यह मुश्किल है प्रयोगशाला या हस्तचालित प्रयोग करने के लिए मैक्रोप्लास्टिक प्रदूषण के प्रभावों को मापें।"

समुद्री कछुओं में सबसे ज़्यादा फ्रीक्वेंसी और लोड थे प्लास्टिक का लगभग 50% नमूने, उसके बाद समुद्री-पक्षी (35%) और समुद्री स्तनधारी (12%) समुद्री कछुए और भी ज़्यादा संभावना थी प्लास्टिक खाने की वजह से कई शिकायतें हुई हैं।

डॉ. मर्फी ने कहा टीम का काम प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने और खास तौर पर प्लास्टिक को टारगेट करने की पॉलिसी को सपोर्ट करता है। सबसे खतरनाक प्लास्टिक, जैसे प्लास्टिक बैग: "हमें यह भी उम्मीद है कि यह पुनः शोध राष्ट्रीय को सूचित कर सकता है कार्य योजनाएँ जैसे-जैसे काम करती हैं विज्ञान-आधारित लक्ष्य निर्धारित करना के नुकसान को कम करने के लिए प्लास्टिक प्रदूषण।"

हार्मोन थेरेपी बदल सकती है ट्रांस महिलाओं के रक्त में प्रोटीन

मेलबर्न में हुई एक स्टडी में पाया गया है कि फेमिनाइजिंग हार्मोन थेरेपी ट्रांसजेंडर महिलाओं में ब्लड प्रोटीन को रीशेप करती है, जिससे वे एक लाइन में आ जाती हैं। उन्हें सिसजेंडर पैटर्न के साथ; निष्कर्ष लंबे समय तक स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में बताते हैं और अधिक समावेशी रिसर्च की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

सायंतन दत्ता

टी fe- के प्रभाव मिनिसिंग जेन-डेर-आर्मेटिव हार्मोन थेरेपी py (GAHT) से ज़्यादा हैं स्किन में गहराई तक, नेचर मेडिसिन में रिसर्च में बताया गया है, बदलावों के साथ प्रोटीन तक किसी व्यक्ति के अंदर परिचालित होना खून।

संजय कालरा, एक एंडो-क्रिनोलॉजिस्ट और पूर्व भारतीय राष्ट्रपति व्यावसायिक संघ ट्रांसजेंडर स्वास्थ्य के लिए, कहा कि अध्ययन "प्रकाश डालता है" ट्रांस-जेंडर चिकित्सा के एक नए पहलू पर"।

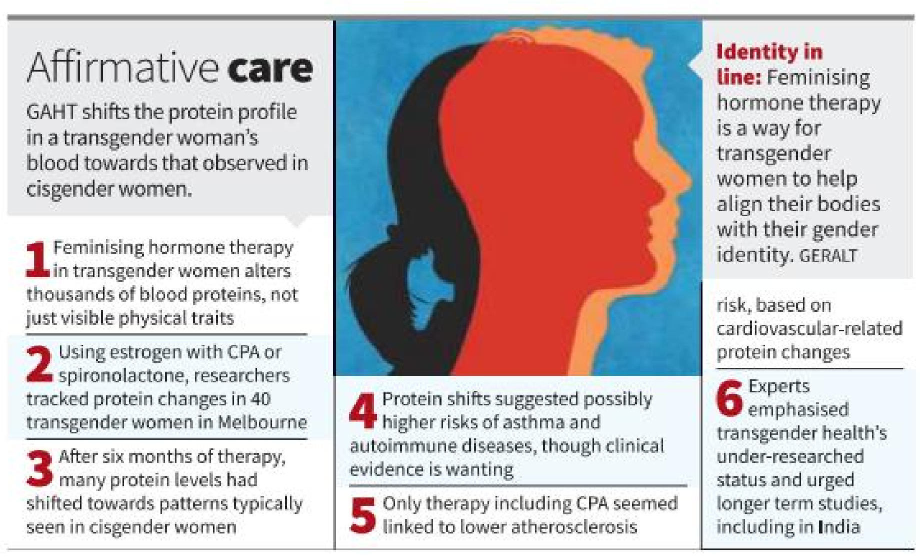

Identity in line: Feminising hormone therapy is a way for transgender women to help align their bodies with their gender identity. GERALT

ट्रांसजेंडर लोग जिनकी लिंग पहचान उनके लिंग से भिन्न होती है जन्म के समय दिए गए थे।

ट्रांसजेंडर महिलाएं, जिन्हें पुरुष लिंग दिया गया है जन्म के समय लेकिन महिला-पुरुष के रूप में पहचाने जाने पर, GAHT का विकल्प चुन सकते हैं उनके शरीर को संरेखित करने में मदद करें उनकी जेंडर पहचान। GAHT को आम तौर पर महिलाओं के लिए कम करना इसमें का संयोजन शामिल है एस्ट्रोजन और एक एंटीएंड्रो-जेन जैसे साइप्रोटेरोन एसीटेट (CPA) या स्पिरोनोलैक-(SpiroL)। टोन एंटीएंड्रोजेन ब्लॉक करते हैं टेस्टोस्टेरोन के प्रभाव और डाइहाइड्रोटेस्टोस्टेरोन, हार्मोन जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं के विकास में पुरुष यौन लक्षण, मांसपेशियों की वृद्धि, और

यह पता लगाना कि शरीर में फैट कैसे जमा होता है।

वैज्ञानिकों और डॉक्टरों को तब से पता है 1970 के दशक में GAHT वसा को पुनर्वितरित करता है, चेहरे की झुर्रियों को कम करता है और शरीर के बालों का विकास, और ट्रांसजेंडर महिलाओं के शरीर में ब्रेस्ट का विकास होता है। नए अध्ययन के अनुसार-dy, GAHT भी बदलता है एक ट्रांसजेंडर महिला के खून में घूमने वाले प्रोटीन का लेवल

सिसजेंडर महिलाओं में देखा गया। रिसर्चर्स को इसमें समय लगा इतना लंबा समय लगा क्योंकि "ट्रांसजेंडर स्वास्थ्य" ऐतिहासिक रूप से इस पर कम शोध हुआ है," मेलबर्न विश्वविद्यालय की एंडोक्राइनोलॉजिस्ट एडा चेउंग, जिन्होंने

स्टडी का को-लीड किया, ने कहा।

शरीर में एक ही समय में हज़ारों प्रोटीन को मापने के लिए ज़रूरी टेक्नोलॉजी भी

लेखकों ने कहा कि यह नया है और अभी भी काफी महंगा है।

गहरा जैविक परिवर्तन भी बढ़ सकते हैं ट्रांसजेंडर महिलाओं की दीर्घकालिक संवेदनशीलता अस्थमा और ऑटोइम्यून बीमारियों के लिए,

अध्ययन पाया गया। एक्सपर्ट्स ने साफ़ किया कि ये जोखिम अभी तक चिकित्सकीय रूप से देखा जाएगा।

अध्ययन में 40 लोगों को शामिल किया गया ट्रांसजेंडर महिलाओं मेलबर्न, आधा असाइन करना एस्ट्रोजन + CPA और आधा एस्ट्रोजन + SpiroL. Re-

खोजकर्ताओं ने रक्त प्राप्त किया

बेसलाइन से पहले नमूने GAHT शुरू करना और फिर से छह महीने के निशान पर।

फिर उन्होंने खुद को अलग कर लिया रक्त प्लाज्मा नमूने और मापा 5,000 से अधिक का स्तर प्रोटीन।

उनके विश्लेषण से पता चला 245 प्रोटीन जिनके स्तर CPA में बदलाव हुआ था समूह और 91 प्रोटीन में SpiroL ग्रुप। दोनों में समूहों में, GAHT ने अधिकांश के स्तर को कम कर दिया था इन प्रोटीनों के। रिसर्चर यह भी कर पाए

GAHT के प्रभावों को बताएं टेस्टोस्टेरोन सांद्रता में कमी के लिए प्रोटीन,

शरीर में वसा का प्रतिशत बढ़ जाना, और स्तन वृद्धि आयतन।

टीम ने यह भी जांच की प्रोटीन जिनका स्तर था पहले ही रिपोर्ट कर दी गई है सिसजेन्डर आबादी में लिंग के साथ भिन्नता होती है UK बायोबैंक का फार्मा प्रोटिओमिक्स प्रोजेक्ट। कम्प्यूटेशनल तकनीक, उन्होंने 36 का स्तर पाया ऐसे प्रोटीन GAHT से जुड़े थे

सीपीए और 22 प्रोटीनों का GAHT में Spi-roL शामिल है। और दोनों ग्रुप के लिए, GAHT में उल्लेखनीय बदलाव इन प्रोटीनों का स्तर सामान्यतः सिसजेंडर में देखे जाने वाले पैटर्न की ओर है

औरत।

निष्कर्ष बताते हैं "परिवर्तन बहुत आगे तक जाते हैं जो हम बाहर देखते हैं; वे शरीर की कोशिकाओं के अंदर गहराई में होते हैं और

डॉ. चेउंग ने कहा।

नतीजों से यह भी पता चला कि CPA या

स्पाइरोएल प्रोटीन को बदल सकता है

उन लोगों की ओर रुझान जिनमें जोखिम अधिक है एलर्जिक अस्थमा और ऑटोइम्यून बीमारियां। सिर्फ़ सीपीए के इस्तेमाल से प्रोटीन का लेवल उन लेवल तक पहुंच गया जो बताते हैं एथेरोस्क्लेरोसिस का जोखिम कम होना, यानी, फैट जमा होने की वजह से ब्लड वेसल्स के सिकुड़ने और सख्त होने का खतरा।

डॉ. चेउंग ने चेतावनी दी, हालाँकि, जोखिम हैं "सिर्फ़ संभावनाएँ, प्रो-वेन नहीं। हमारे पास अभी तक क्लिन-ical साक्ष्य दिखा रहा है ट्रांस महिलाओं में इन बीमारियों की दर ज़्यादा है

हॉरमोन्स।" डॉ. कालरा ने यह भी कहा कहा कि उन्होंने नहीं देखा ट्रांसजेंडर महिलाओं उनमें ऑटोइम्यून बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशीलता होती है

अभ्यास। के बीच का अंतर नैदानिक अवलोकन और अध्ययन के निष्कर्ष हो सकते हैं यह इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि "ऑटोइम्यून या एलर्जी की स्थिति को विकसित होने में वर्षों लगते हैं, और कई पर निर्भर करते हैं आनुवंशिक और पर्यावरणीय डॉ. चेउंग ने कहा। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अनुदैर्ध्य अध्ययन जो एक अवधि में ट्रांसजेंडर महिला-पुरुष के स्वास्थ्य पर नज़र रखी गई यह समझने के लिए कि क्या ये "जैविक पैटर्न" वास्तविक दुनिया में अनुवाद करें स्वास्थ्य प्रभाव"।

डॉ. कालरा ने व्यक्त किया उम्मीद है कि अध्ययन भारत में भी इसी तरह के उदाहरण हैं, जहां ट्रांसजेंडर महिलाओं की GAHT तक पहुँच अक्सर असंगत और रेगुलर क्लिनिकल मॉनिटरिंग की कमी है। ऐसी स्टडीज़ चिकित्सकों को अधिक बनाने में मदद करें सूचित निर्णय लंबे समय तक, रिची गुप्ता, सीनियर डायरेक्टर और हेड प्लास्टिक विभाग नई दिल्ली के फोर्टिस अस्पताल में सर्जरी और जेंडर-आर्मेशन क्लिनिक भी खोला गया।

लेकिन सबसे बड़ा प्रयास योगदान, डॉ. चेउंग कहा, "पर प्रकाश डाल रहा है उच्च गुणवत्ता वाले, समावेशी विज्ञान की आवश्यकता है ताकि ट्रांस लोग प्राप्त कर सकते हैं सर्वोत्तम संभव देखभाल वास्तविक डेटा पर आधारित।"

सायंतन दत्ता Krea यूनिवर्सिटी में फैकल्टी मेंबर और इंडिपेंडेंट हैं। विज्ञान पत्रकार

स्नैपशॉट

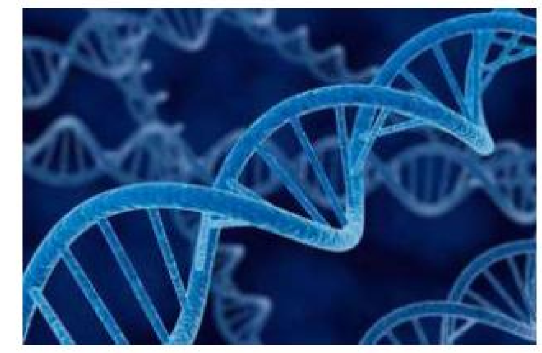

एडेनिन बेस एडिटिंग में तेज़ी दो रक्त विकारों के खिलाफ

वैज्ञानिकों ने जीन-एडिटिंग विधि का परीक्षण किया है एडेनिन बेस एडिटिंग को x दो गंभीर कहा जाता है उत्परिवर्तन जो β-थैलेसीमिया का कारण बनते हैं, एक आनुवंशिक खून की बीमारी। खून बनाने वाले स्टेम सेल्स में मरीजों से, उन्होंने दो म्यूटेशन को ठीक किया HBB जीन । इसके बाद बनने वाली कोशिकाएं अधिक सामान्य β-ग्लोबिन वाली लाल रक्त कोशिकाएं और स्ट्रेस्ड सेल्स के कम लक्षण। वही स्ट्रेटेजी उन लोगों से स्टेम सेल पर लागू किया गया जिनमें दोनों थे सिकल सेल रोग और β-थैलेसीमिया से उत्पन्न विऑक्सीजनीकरण के बाद सिकल के आकार की कोशिकाएँ कम हो जाती हैं परीक्षण.

मंगल ग्रह पर सक्रिय विद्युत पर्यावरण और वैज्ञानिक

पर्सिवेरेंस रोवर के माइक्रोफ़ोन का इस्तेमाल करके मंगल ग्रह की धूल में इलेक्ट्रिकल एक्टिविटी पकड़ने में कामयाब रहे वैज्ञानिक धूल और दो मंगल ग्रह के ऊपर रेत के कण आपस में रगड़ रहे हैं साल। सिग्नल से, टीम ने दिखाया कि मंगल ग्रह पर सतह के निकट विद्युत क्षेत्र बन सकते हैं बिजली जैसा डिस्चार्ज शुरू करने के लिए मज़बूत। ये डिस्चार्ज धूल को उठाने में मदद कर सकते हैं, धूल का तरीका बदल सकते हैं एक साथ गुच्छे बनाते हैं, और रासायनिक प्रतिक्रियाओं को आगे बढ़ाते हैं ऑक्सीकरण अणु और क्लोरीन बनाएँ वायुमंडल और मिट्टी में मौजूद कंपाउंड्स।

कैद में नर हाथी दोस्तों के रूप में एक साथ आ सकते हैं

जैसे-जैसे कैप्टिव ब्रीडिंग ज़्यादा ज़रूरी होती जा रही है वैज्ञानिकों ने पाया है कि एशियाई हाथियों को बचाने के लिए बिना किसी संबंध के पुरुषों को एक साथ लाने का एक तरीका लाओस की एक फैसिलिटी में अग्रेसिव बिहेवियर को बढ़ावा देना। उन्हें पहले सीमित संपर्क के साथ पेश किया गया था, फिर साझा खुली जगहों पर। दोनों चरणों में, दोस्ताना हरकतें डरावने कामों से ज़्यादा आम थीं समय के साथ, दोस्ताना व्यवहार बन गया ज़्यादा स्टेबल। टीम ने अपने तरीकों का पता लगाया गोबर के सैंपल में हॉर्मोन लेवल को मापकर।

भारत और दुनिया में गन्ने की कई भूमिकाएँ

के बोल विज्ञान

डी. बालासुब्रमण्यम

ओलिवियर का हालिया पेपर गार्स्मूर और उनके सहयोगी शीर्षक 'जंगली सैकरम के जीनोमिक पदचिह्न'

प्रजातियाँ पालतू बनाना, विविधीकरण, और

सेल जर्नल में 'गन्ने की आधुनिक ब्रीडिंग' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है। 390 गन्ने का जीनोमिक विश्लेषण किया

ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़िल, चीन, फ्रांस, फ्रेंच से नस्लें

पोलिनेशिया, भारत, जापान, और अमेरिका

ये पौधे कई तरह के जीन के हाइब्रिड थे,

उनमें कई क्रोमोसोम होते हैं (पॉलीप्लॉइडी)। ऐसी पॉलीप्लॉइडी में

मानव द्वारा वाणिज्यिक परिवहन के कारण हुआ

प्रजनकों, जो परिवहन करते थे और गन्ना बेचा देश के विभिन्न राज्यों और विभिन्न देशों में

खैर, अफ़गानिस्तान में भी-टैन, श्रीलंका, और इंडोनेशिया.

उन्होंने यह भी बताया जबकि गन्ना एक नकदी फसल जिसका उपयोग किया जाता है इसकी मिठास के कारण इसका उपयोग बायोइथेनॉल का उत्पादन करने के लिए, जो एक के रूप में उत्पादित होता है जीवाश्म ईंधन का स्वच्छ विकल्प निजी और सार्वजनिक ईंधन परिवहन और वाणिज्यिक वाहन।

भारत में गन्ना

भारत एक बड़ी मात्रा में उत्पादन करता है गन्ने की मात्रा, विशेष रूप से 13 राज्यों में।

2018-2019 में उत्पादन के हिसाब से शीर्ष पांच राज्य 2023-2024 में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और गुजरात में लगभग 4,400 लाख लोग आए।

टन गन्ना था 2024-2025 में उत्पादित।

भारतीय परिषद कृषि अनुसंधान ने कई चीनी अनुसंधान संस्थान भी स्थापित किए

देश भर में जो इसका उपयोग करते हैं शास्त्रीय वनस्पति विधियों और आणविक जैविक विधियों में सुधार

सु- की किस्म और उपज

भारत में गन्ने का बहुत ज़्यादा उत्पादन होता है। GETTY IMAGES

गार्केन. सबसे पुराना ये, जो कि गन्ना प्रजनन संस्थान है

तमिलनाडु में कोयंबटूर, पूरे भारत में चार डाई-रेंट स्रोतों का आणविक आनुवंशिक विश्लेषण किया गया

जेनेटिक डायवर्सिटी का अध्ययन करें। यह 2006 की बात है, शोधकर्ताओं के निष्कर्ष जेनेटिक रिसोर्सेज एंड क्रॉप जर्नल में प्रकाशित हुए

विकास (53, 1221-1231).

जबकि उपर्युक्त गार्समूर एट अल.

इस्तेमाल किए गए कागज़ के नमूने पश्चिमी देशों और चीन, कोयंबटूर समूह ने नमूनों का उपयोग किया अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और तमिलनाडु।

जेनेटिक एनालिसिस के बाद, शोधकर्ताओं ने पाया कि अरुणाचल प्रदेश में सबसे विविध गन्ना नस्लें।

3 बायो-टेक में 2018 के एक पेपर में , भारतीय गन्ना संस्थान के वैज्ञानिकों ने

लखनऊ में भी रिसर्च उपोष्णकटिबंधीय भागों से 92 गन्ना किस्मों की आनुवंशिक विविधता और जनसंख्या संरचना का विश्लेषण किया

देश में, फिर से प्रचुरता का पता चलता है

कई प्रकार के गन्ने भारत में.

पारंपरिक चिकित्सा चीन, भारत और पाकिस्तान में भी चिकित्सकों ने गन्ने का इस्तेमाल किया जा रहा है उनकी थेरेपी। इस संबंध में, हाल ही में एक रिव्यू किया गया है। चीन से, शीर्षक 'द रासायनिक संरचना और चीनी की बायोलॉजिकल एक्टिविटीज़: संभावित मेडिसिनल वैल्यू और सस्टेनेबल

विकास', बताया कि पारंपरिक चीनी दवा के संसाधन हैं गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है सतत विकास के संदर्भ में, कमी हो रही है जो कि परिवर्तनों से और बढ़ रही है

प्राकृतिक पर्यावरण और अनियंत्रित मानव कटाई।

इसलिए, यह बहुत बड़ी बात है के रखरखाव और विकास के लिए महत्व पारंपरिक चीनी चिकित्सा संसाधनों का अध्ययन वे संसाधन जो औषधीय मूल्य और फसल क्षमता और खोज उनके लिए नए उपयोग। समीक्षा में, लेखकों ने गन्ने की रासायनिक संरचना पर चर्चा की और

इसकी संभावित जैव गतिविधियों, इसके अनुप्रयोगों की खोज की दवा, और चार्ट बनाया भविष्य के रिसर्च की संभावित दिशा।

जैसा कि ग्रासमूर एट अल. ने भी कहा ध्यान दें, गन्ना भी बायोएथा-नोल बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो डीज़ल या पेट्रोल का एक बेहतर विकल्प है जैसे यात्री वाहनों में कारों और बसों के साथ-साथ ट्रकों के लिए भी भारत ने गन्ने का उपयोग शुरू किया अपशिष्ट, चावल और गेहूं बायोइथेनॉल का निर्माण, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने असम में बायोएथिल अल्कोहल बनाना शुरू कर दिया है। कुल मिलाकर, हमने

हरियाली की उम्मीद है गन्ने के साथ भारत।

प्रश्न कोना

स्थिर नाम

मोमबत्ती की बत्ती कैसे जल सकती है इतने लंबे समय तक एक नाम पकड़ो?
– साधिका जी.

एक मोमबत्ती की बाती में नाम क्योंकि यह सिर्फ एक नहीं है जलती हुई डोरी। इसका मुख्य उद्देश्य ईंधन पहुंचाना है उस हिस्से तक जो बहुत गर्म है। जब तुम बाती जलाते हो, गर्मी जल्दी से पिघल जाती है इसके बेस के पास मोम। बाती कपास से बनी है कसकर बुने हुए ब्रेस एक साथ, और वे एक साथ 'ट्यूब' के रूप में काम करते हैं। केशिका क्रिया, वे आकर्षित करते हैं तरल मोम ऊपर की ओर गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध, जैसे कि कागज़ का तौलिया लटका हुआ एक बाल्टी पानी के ऊपर इसे ऊपर की ओर सोखें। उसी के पास, तरल मोम गर्म हो जाता है और बदल जाता है भाप में बदल जाता है। और यह मोम वाष्प के बजाय ठोस या तरल मोम जो असल में जलता है। जब तक बाती रख सकती है वाष्प की आपूर्ति लगभग समान दर जो इसे खाता है, समय स्थिर रहेगा। बाती खुद जल जाती है धीरे-धीरे. अच्छी बातियाँ इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि यह ऊपर की ओर मुड़ जाए वे जलते हैं, नोक हिलाते हैं के सबसे गर्म हिस्से में वहाँ, ज़्यादा बाती राख में बदल जाती है और o टूट जाता है, इसलिए यह नहीं होता बहुत लंबे हो जाते हैं और उत्पादन करते हैं धूम्रपान। इस तरह से मोमबत्ती एक आदमी को जीवित रखती है कई घंटों के लिए।

पाठक अपने सवाल भेज सकते हैं / science@thehindu.co.in पर जवाब दें

Machine Translated by Google

गोवा को टाइगर रिज़र्व बनाने के लिए क्यों कहा गया है?

कोर और ब्यूर ज़ोन बनाने में क्या मुश्किलें हैं? कितने घरों पर इसका असर पड़ने की उम्मीद है?

जैकब कोशी

अब तक की कहानी: सुप्रीम कोर्ट की सेंट्रल एम्पावर्ड कमेटी (CEC) ने सिफारिश की है कि गोवा सरकार एक टाइगर रिजर्व बनाए।

राज्य में "चरणबद्ध" तरीके से रिजर्व

CEC को किस बात ने प्रेरित किया?

जुलाई 2023 में, बॉम्बे हाई कोर्ट ने गोवा सरकार को निर्देश दिया था कि वह तीन महीने के अंदर पांच "प्रोटेक्टेड एरिया", यानी म्हादेई वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी, भगवान महावीर वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी, भगवान महावीर नेशनल पार्क, नेत्रावली वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी, और कोटिगाओ वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी (जिन्हें एक साथ 'म्हादेई WLS और दूसरे एरिया' कहा जाता है) को "टाइगर रिज़र्व" के तौर पर नोटिफाई करे। इसने राज्य सरकार को एक टाइगर कंज़र्वेशन प्लान तैयार करने और शेड्यूल्ड ट्राइब्स और दूसरे जंगल में रहने वालों के अधिकारों और दावों को तय करने और सेटल करने का भी आदेश दिया। यह आदेश 2020 में म्हादेई सैंक्चुअरी में एक मादा टाइगर और उसके तीन बच्चों की कथित ज़हर से मौत के बाद गोवा फाउंडेशन की लीडरशिप में दायर एक पिटीशन से आया था।

2016 में, नेशनल टाइगर कंज़र्वेशन अथॉरिटी ने इन इलाकों को टाइगर रिज़र्व घोषित करने की सिफारिश की थी।

गोवा सरकार ने क्या जवाब दिया?

गोवा सरकार ने इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में स्पेशल लीव पिटीशन दायर की।

गोवा के जंगल, खासकर इसके वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी, अक्सर पड़ोसी कर्नाटक और महाराष्ट्र में बाघों के लिए एक जुड़ा हुआ कॉरिडोर बनाते हैं।

यह इस आधार पर इन इलाकों को टाइगर रिज़र्व घोषित करने से हिचकिचा रहा था कि इससे करीब "एक लाख लोग" प्रभावित होंगे। हालांकि, बाद में अपनी ही दलील में, इसने माना कि पांच सुरक्षित इलाकों के 33 गांवों में सिर्फ़ लगभग 1,274 घर थे, जो लगभग 5,000-6,000 लोगों के बराबर थे। इसने यह भी तर्क दिया कि गोवा में कोई "रहने वाले" बाघ नहीं थे और जो मुट्ठी भर बाघ इसके जंगलों से गुज़रे, वे "कुछ समय के लिए" आबादी थे। गोवा के जंगल, खासकर इसके वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी, अक्सर कर्नाटक के काली टाइगर रिज़र्व और महाराष्ट्र के सह्याद्री में बाघों के लिए एक जुड़ा हुआ कॉरिडोर बनाते हैं।

लेकिन, यह दावा अजीब था क्योंकि 2018 में, म्हादेई वॉटर डिस्प्यूट्स ट्रिब्यूनल को दी गई अपनी रिपोर्ट में बताया गया था कि उसने इसके उलट तर्क दिया था: कि "...इस बात के सबूत हैं कि गोवा में टाइगर सिर्फ़ कुछ समय के लिए रहने वाले जानवर नहीं थे, बल्कि वे वहाँ रहने वाली आबादी हैं और चोरला, मान और कंकुंबी के आस-पास के जंगल कर्नाटक में भीमगढ़ वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी और उसके दक्षिण में अंशी दांदेली (जिसे अब काली कहा जाता है) टाइगर रिज़र्व तक एक जुड़ा हुआ टाइगर लैंडस्केप कॉरिडोर बनाते हैं, जहाँ लगभग 35 टाइगर हैं।" SC ने CEC से साइट विज़िट करने और मामले की "जांच" करने और कोर्ट की अगली सुनवाई से पहले एक रिपोर्ट पेश करने को कहा। CEC ने पिछले हफ़्ते अपनी रिपोर्ट पेश की।

CEC रिपोर्ट में क्या कहा गया?

अपनी रिपोर्ट में, CEC, जिसने साइट विज़िट किया था, ने कहा कि कई लोगों में "डर" था कि उन्हें हटा दिया जाएगा और राज्य सरकार की ज़िम्मेदारी थी कि वह उनके डर को दूर करे।

कमिटी ने सुझाव दिया कि गोवा के पार्क और सैंक्चुअरी जो कर्नाटक से सटे काली टाइगर रिज़र्व से "सीधे सटे हुए" हैं, और जहाँ हमेशा टाइगर रहते हैं, उन्हें गोवा रिज़र्व का "कोर" हिस्सा बनाया जाए। इसने सुझाव दिया कि काली टाइगर रिज़र्व से सटे इलाकों को प्रस्तावित रिज़र्व का "ब्यूअर ज़ोन" बनाया जाए। रिपोर्ट में कहा गया है, "इस तरह के फेज़्ड तरीके से लोकल कम्युनिटी को कम से कम परेशानी होगी, साथ ही यह भी पक्का होगा कि इकोलॉजी के हिसाब से सबसे ज़्यादा सेंसिटिव और सबसे कम आबादी वाले इलाकों को जल्द से जल्द बेहतर सुरक्षा के तहत लाया जाए।" इसका मतलब होगा कि पहले फेज़ में नेत्रावली वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी (50 घर) और कोटिगाओ वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी (41 घर) को शामिल किया जाएगा, जिससे कोर ज़ोन में 296.7 sq km का एरिया जुड़ जाएगा। इसी तरह, उन्होंने मांग की कि काली टाइगर रिज़र्व के बुअर ज़ोन से सटे और कम से कम इंसानी आबादी वाले सुरक्षित इलाकों, यानी भगवान महावीर वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी का उत्तरी हिस्सा (9 घर) और भगवान महावीर नेशनल पार्क (2 घर) को पहले फ़ेज़ में प्रस्तावित गोवा टाइगर रिज़र्व का बुअर ज़ोन माना जाए। उनका तर्क था कि यह सटा हुआ इलाका लैंडस्केप-लेवल कनेक्टिविटी और इकोलॉजिकल फ़ंक्शनैलिटी को मज़बूत करेगा।

क्या फर्क पड़ता है?

वैसे तो प्रोटेक्टेड एरिया और वाइल्डलाइफ़ सैंक्चुअरी पहले से ही सबसे ज़्यादा सरकारी सुरक्षा चाहते हैं, लेकिन किसी इलाके को 'टाइगर रिज़र्व' घोषित करने का मतलब है कि कंज़र्वेशन और रिसर्च के लिए ज़्यादा फ़ंड मिलेंगे। हालाँकि, इसका मतलब यह भी है कि जंगल के कुछ हिस्सों को 'कोर' और 'ब्यूर ज़ोन' के तौर पर भी बनाया जाए। कोर ज़ोन को "अछूता" माना जाता है और अगर लोग वहाँ रहते हैं, तो उन्हें बढ़ावा दिया जाता है — लेकिन उन्हें मजबूर नहीं किया जा सकता — कि वे इलाका छोड़कर कहीं और बस जाएँ।

दूसरी ओर, ब्यूअर ज़ोन को अछूता रहने की ज़रूरत नहीं है और वे ज़्यादातर इंसानी गतिविधियों के लिए सहनशील हैं।

नए कोड लेबर कानूनों को कैसे बदलेंगे?

चारों लेबर कोड की खास बातें क्या हैं? ट्रेड यूनियनों और तीन-तरफ़ा सिस्टम पर नए कानूनों का क्या असर होगा? क्या ज़्यादा मज़दूरों को सोशल सिक्योरिटी स्कीम के दायरे में लाया जाएगा? सरकार नए कोड कब लागू करना शुरू करेगी?

एएम जिगीश

अब तक कहानी:

21 नवंबर को , यूनियन लेबर मंत्री मनसुख मंडाविया ने चार लेबर कोड लागू करने की घोषणा की – वेतन संहिता, 2019, इंडस्ट्रियल रिलेशन कोड, 2020, सोशल सिक्योरिटी कोड, 2020 और ऑक्यूपेशनल सेफ्टी, हेल्थ एंड वर्किंग कंडीशंस (OSHWC) कोड, 2020। संसद ने 2019 और 2020 के बीच इन कोड को पास किया था।

ट्रेड यूनियनों को चिंता है कि ये कोड कई फेडरल अधिकार छीन लेंगे, जिसमें मिनिमम तय करने का अधिकार भी शामिल है।

वेतन

इस प्रोसेस में समय क्यों लग रहा है?

क्योंकि लेबर कॉन्करेंट लिस्ट में है, इसलिए राज्य और केंद्र दोनों के पास नियम बनाने का अधिकार है। केंद्र ने 7 जुलाई, 2020 और 19 नवंबर, 2020 के बीच हर कोड के लिए ड्राफ़्ट नियम पब्लिश किए; और जुलाई 2025 तक, 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने भी चार लेबर कोड के तहत ड्राफ़्ट नियम पहले से पब्लिश कर दिए हैं। पिछले मॉनसून सेशन के दौरान संसद में दिए गए एक बयान के मुताबिक, पश्चिम बंगाल और लक्षद्वीप ने किसी भी लेबर कोड के तहत ड्राफ़्ट नियम पहले से पब्लिश नहीं किए हैं। दिल्ली ने सिर्फ़ मज़दूरी कोड के तहत ड्राफ़्ट नियम पहले से पब्लिश किए हैं। तमिलनाडु को अभी सोशल सिक्योरिटी कोड के तहत ड्राफ़्ट नियम पहले से पब्लिश करने हैं। केंद्र ने कहा कि नियमों को लागू करने में देरी ज़्यादातर राज्यों में देरी की वजह से हुई।

मुख्य विशेषताएं क्या हैं?

वेतन संहिता, वेतन भुगतान अधिनियम, 1936, न्यूनतम वेतन अधिनियम, 1948, बोनस भुगतान अधिनियम, 1965 और समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 को निरस्त करती है। औद्योगिक संबंध संहिता, ट्रेड यूनियन अधिनियम, 1926, औद्योगिक रोजगार (स्थायी आदेश) अधिनियम, 1946 और औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 को मिलाती है। सामाजिक सुरक्षा संहिता, कर्मचारी सहित नौ अधिनियमों को रद्द करती है।

गुस्से में: कर्नाटक भर के मज़दूरों ने 27 नवंबर को बेंगलुरु के फ़्रीडम पार्क में चार लेबर कोड को रद्द करने की मांग की। एलन ईजेन्यूज़ जे

कम्पनसेशन एक्ट, 1923, मैटरनिटी बेनिफिट्स एक्ट, 1961 और अनऑर्गनाइज्ड वर्कर्स सोशल सिक्योरिटी एक्ट, 2008। OSHWC कोड फैक्ट्रीज़ एक्ट, 1948, माइन्स एक्ट, 1952, और इंटर-स्टेट माइग्रेंट वर्कमेन (रेगुलेशन ऑफ़ एम्प्लॉयमेंट एंड कंडीशंस ऑफ़ सर्विस) एक्ट, 1979 जैसे एक्ट को रद्द करता है। सरकार ने कॉलोनियल पीरियड से लेकर पहली यूनाइटेड प्रोग्रेसिव अलायंस सरकार तक लेबर राइट्स का स्ट्रक्चर तय करने वाले 29 एक्ट को रद्द और कोड किया।

मुख्य बदलाव क्या हैं?

सरकार के मुताबिक, लेबर कोड रोज़गार को फॉर्मल बनाने, सोशल सिक्योरिटी कवरेज बढ़ाने, ज़्यादा वर्कर्स के लिए मिनिमम और समय पर मज़दूरी पक्का करने, वर्कफोर्स में ज़्यादा महिलाओं को शामिल करने और एम्प्लॉयर्स के लिए कम्प्लायंस का बोझ कम करने को बढ़ावा देते हैं। कुछ दूसरी खासियतों में सभी वर्कर्स के लिए ज़रूरी अपॉइंटमेंट लेटर, गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स सहित सभी वर्कर्स के लिए प्रोविडेंट फंड और स्टेट इंश्योरेंस जैसी सोशल सिक्योरिटी, और मिनिमम मज़दूरी पेमेंट का कानूनी अधिकार शामिल हैं। महिलाएं अब रात में और सभी तरह के कामों में काम कर सकती हैं, और उन्हें ज़्यादा सैलरी वाली भूमिकाओं में बराबर मौके मिलेंगे। एक नेशनल लेवल वेज तय किया जाएगा ताकि यह पक्का हो सके कि किसी भी वर्कर को मिनिमम लिविंग स्टैंडर्ड से कम मज़दूरी न मिले। जेंडर-न्यूट्रल सैलरी और नौकरी के मौके, ट्रांसजेंडर लोगों के खिलाफ भेदभाव पर रोक, और "दंडात्मक कार्रवाई के बजाय गाइडेंस, जागरूकता और कम्प्लायंस सपोर्ट की ओर एनफोर्समेंट को शिफ्ट करना," कुछ दूसरी खासियतें हैं।

एम्प्लॉयर्स ने कैसे रिस्पॉन्स दिया है?

लगभग सभी एम्प्लॉयर ऑर्गनाइज़ेशन ने कोड्स का स्वागत किया है। कन्फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन इंडस्ट्रीज़ के प्रेसिडेंट-डेज़िग्नेट आर.

मुकुंदन ने द हिंदू को बताया कि मुश्किल लेबर लॉ फ्रेमवर्क को आसान, एक जैसा और मॉडर्न बनाने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा, "लेबर कोड्स ठीक यही करते हैं। वे नौकरियां पैदा करेंगे, सोशल प्रोटेक्शन पक्का करेंगे और तेज़ी से आगे बढ़ती इकॉनमी में इंडस्ट्रियल तालमेल बनाए रखेंगे।"

उनका कहना है कि राज्यों में एक जैसा होना, डिजिटल होना, कम झगड़े और फ्लेक्सिबिलिटी पर ज़ोर देने से भारत बिज़नेस करने के लिए ज़्यादा आकर्षक जगह बन जाएगा।

हालांकि, माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) के रिप्रेजेंटेटिव को शक है। एसोसिएशन ऑफ इंडियन एंटरप्रेन्योर्स (AIE) को डर है कि नए लेबर कोड्स MSMEs के लिए ऑपरेटिंग कॉस्ट में काफी बढ़ोतरी कर सकते हैं और मुख्य सेक्टर्स में बिजनेस कंटिन्यूटी में रुकावट डाल सकते हैं। "हालांकि AIE प्रोग्रेसिव लेबर रिफॉर्म्स और मॉडर्न वर्कफोर्स की ज़रूरत का पूरा सपोर्ट करता है।

फ्रेमवर्क में, संगठन ने चेतावनी दी है कि

इसने एक बयान में कहा, "अगर सरकारें क्लैरिटी, ट्रांज़िशनल सपोर्ट और फ्लेक्सिबल इम्प्लीमेंटेशन मैकेनिज्म नहीं देतीं, तो MSMEs पर तुरंत असर गंभीर हो सकता है।" यह MSMEs के लिए कम पेनल्टी के साथ ट्रांज़िशनल ग्रेस पीरियड की मांग कर रहा है।

ट्रेड यूनियनों की चिंताएं क्या हैं?

भारतीय मज़दूर संघ (BMS) को छोड़कर, सभी सेंट्रल ट्रेड यूनियन (CTU) लेबर कोड्स का विरोध कर रहे हैं। दस CTU और उनसे जुड़े फेडरेशन ने 2019, 2020, 2022, 2023 और 9 जुलाई, 2025 को प्रस्तावित लेबर कोड्स के खिलाफ हड़तालें कीं। BMS ने दो लेबर कोड्स, कोड ऑन वेजेज और कोड ऑन सोशल सिक्योरिटी के लागू होने का स्वागत किया है, और इंडस्ट्रियल रिलेशंस कोड और OSHWC कोड के नियमों पर सवाल उठाए हैं।

CTUs को चिंता है कि कोड से काम खत्म हो जाएगा कई फ़ेडरल अधिकार, जिसमें राज्यों में मिनिमम मज़दूरी तय करने का अधिकार भी शामिल है। उनके अनुसार, कम मज़दूरी मज़दूरों के साथ एक मज़ाक है, क्योंकि पहले भी केंद्र मज़दूरों की मांगों और असलियत को समझने में नाकाम रहा है।

सोशल सिक्योरिटी पर, CTUs का तर्क है कि 93% वर्कर किसी भी सोशल सिक्योरिटी के तहत कवर नहीं हैं और कोड में इस स्थिति को बेहतर बनाने का कोई प्रोविज़न नहीं है। साथ ही, फैक्ट्री लाइसेंस के लिए वर्कर की लिमिट बढ़ा दी गई है और इससे बहुत सारे वर्कर सोशल सिक्योरिटी और मिनिमम वेज प्रोविज़न से बाहर हो जाएंगे, ट्रेड यूनियनों का आरोप है।

इंडस्ट्रियल कोड पर भी, उनके पास मुद्दे हैं क्योंकि ट्रेड यूनियनों के काम करने पर "अनावश्यक रोक" होगी, जिसमें "सदस्यता पर सीमाएं, बाहरी लोगों के ओसा-बियरर के रूप में काम करने पर रोक, और एकमात्र बातचीत करने वाली यूनियन और बातचीत करने वाली काउंसिल जैसे कॉन्सेप्ट की शुरुआत" शामिल है।

कोड में हड़ताल के अधिकार में भी कटौती की गई है। ट्रेड यूनियनों ने छंटनी के नोटिस पर मिलने वाली सैलरी में कटौती, मज़दूरों के पैसे के दावों की अवधि को सीमित करने, "मज़दूरी" की परिभाषा से हाउस रेंट अलाउंस को हटाने, कॉन्ट्रैक्ट पर ज़्यादा ज़ोर देने और खदानों जैसे सेक्टर में महिला मज़दूरों को रात की शिफ़्ट में काम करने की इजाज़त देने पर सवाल उठाए हैं।

आगे क्या छिपा है?

सरकार ने घोषणा की है कि सभी स्टेकहोल्डर्स को कोड के ड्राफ़्ट रूल्स पर जवाब देने के लिए 45 दिन का समय मिलेगा, जिसे वह कुछ बदलावों के साथ फिर से प्री-पब्लिश करेगी।

विपक्ष शासित राज्यों को कुछ आपत्तियाँ हैं: केरल ने कहा कि वह कोड लागू नहीं करेगा, जबकि कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु ने भी केंद्र के "एकतरफ़ा" तरीके पर सवाल उठाए हैं। ट्रेड यूनियनों ने सरकार से इंडियन लेबर कॉन्फ्रेंस, जो एक तीन-तरफ़ा फ़ोरम है और जिसकी मीटिंग एक दशक से ज़्यादा समय से नहीं हुई है, को जल्द से जल्द बुलाने की अपील की है। मालिक भी चाहते हैं कि सरकार फ़ैक्टरी लेवल पर और बातचीत की सुविधा दे ताकि ऐसे समय में जब बिज़नेस दुनिया भर में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, रिश्तों में रुकावट न आए।

ब्रेस्ट मिल्क में यूरेनियम के बारे में क्या फैक्ट्स हैं?

सैंपल कहाँ से लिए गए थे? रिपोर्ट में क्या बताया गया है? वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइज़ेशन की परमिसेबल लिमिट पर क्या गाइडलाइन हैं? डॉक्टर क्यों कहते हैं कि माँओं को ब्रेस्टफीडिंग जारी रखनी चाहिए? सिविक एडमिनिस्ट्रेशन को ग्राउंडवॉटर की जाँच क्यों करते रहना चाहिए?

राम्या कन्नन

अब तक कहानी:

एक बिहार में हाल ही में छपी एक स्टडी में राज्य के छह जिलों में दूध पिलाने वाली मांओं के ब्रेस्ट मिल्क में यूरेनियम (U238) के अंश पाए गए हैं।

इसके बाद घबराहट का दौर शुरू हो गया, क्योंकि ब्रेस्ट मिल्क में यूरेनियम, जो एक जाना-माना रेडियोएक्टिव पदार्थ है, की मौजूदगी से लोग हैरान रह गए, जिसे बच्चे पी रहे थे। हालांकि, स्टडी को गहराई से पढ़ने पर पता चलता है कि हालांकि तथ्य चिंताजनक हैं, और उन पर तुरंत ध्यान देना होगा, लेकिन इस खास मामले में, रेडियोएक्टिव मेटल के संपर्क में आने से कैंसर का डर नहीं लगता।

स्टडी का नतीजा यह है कि बच्चों की हेल्थ पर असल असर शायद कम है।

स्टडी में क्या खास बात सामने आई?

21 नवंबर को नेचर में छपे 'डिस्कवरी ऑफ़ यूरेनियम कंटेंट इन ब्रेस्ट मिल्क एंड असेसमेंट ऑफ़ एसोसिएटेड हेल्थ रिस्क्स फॉर मदर्स एंड इन्फेंट्स इन बिहार, इंडिया' टाइटल वाले पेपर में , अरुण कुमार एट अल ने कहा कि अक्टूबर 2021 और जुलाई 2024 के बीच बिहार के छह ज़िलों — बेगूसराय, कटिहार, नालंदा, समस्तीपुर, कगहरिया और भोजपुर — से रैंडमली चुनी गई 40 मांओं से ब्रेस्ट मिल्क के सैंपल लिए गए थे।

महावीर कैंसर संस्थान में सैंपल्स का डिटेल्ड यूरेनियम एनालिसिस किया गया।

मैटरनल हेल्थ में सुधार: 2016 में बिहार के वैशाली में एक प्राइमरी हेल्थ सेंटर पर अपनी बारी का इंतज़ार करती महिलाएं। फ़ाइल फ़ोटो

पटना में रिसर्च सेंटर। नतीजों से पता चला कि सभी ब्रेस्ट मिल्क सैंपल में यूरेनियम कंसंट्रेशन 0 माइक्रोग्राम/L और 5.25 माइक्रोग्राम/L के बीच था। सबसे ज़्यादा U238 कंसंट्रेशन कटिहार ज़िले में देखा गया।

लेखकों ने ब्रेस्ट मिल्क में यूरेनियम को ग्राउंड वॉटर में यूरेनियम कंटैमिनेशन से जोड़ा, और इस लिंक को साबित करने के लिए पहले की ग्राउंड वॉटर स्टडीज़ का हवाला दिया।

अभी ब्रेस्ट मिल्क में यूरेनियम कंसंट्रेशन के लिए कोई तय लिमिट या बेंचमार्क नहीं है। हालांकि, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइज़ेशन ने पीने के पानी में यूरेनियम की प्रोविजनल गाइडलाइन लिमिट 30 माइक्रोग्राम/L तय की है।

इसका ब्रेस्ट मिल्क पर क्या असर होता है?

साइंटिस्ट्स को यूरेनियम आइसोटोप 238 (U238) मिला है, जिसे सबसे आम आइसोटोप कहा जाता है, जो ब्रेस्ट मिल्क में 99% से ज़्यादा नैचुरल यूरेनियम बनाता है। यह एक कमज़ोर रेडियोएक्टिव, घना और बहुत भारी मेटल है। यह नैचुरली एनवायरनमेंट में पाया जाता है, और लगभग सभी चट्टानों, मिट्टी और पानी में पाया जा सकता है, जिसमें समुद्र भी शामिल हैं, हालांकि कम कंसंट्रेशन में। यूनाइटेड स्टेट्स एनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी (USEPA) के अनुसार, "यूरेनियम का बाहरी संपर्क दूसरे रेडियोएक्टिव एलिमेंट्स के संपर्क जितना खतरनाक नहीं है क्योंकि स्किन [यूरेनियम में] अल्फा पार्टिकल्स को ब्लॉक कर देगी। हालांकि, यूरेनियम का ज़्यादा कंसंट्रेशन लेने से हेल्थ पर असर पड़ सकता है, जैसे हड्डी या लिवर का कैंसर।" कोई व्यक्ति हवा में धूल को सांस में लेने, या यूरेनियम से कंटैमिनेटेड पानी और खाना खाने से यूरेनियम के संपर्क में आ सकता है। USEPA के अनुसार, आम लोग यूरेनियम के ट्रेस लेवल के संपर्क में मुख्य रूप से खाने और पानी के ज़रिए आते हैं।

लेखक आगे कहते हैं: "हाल के सालों में, ग्राउंडवाटर यूरेनियम [U238] पॉइज़निंग ने इसके संपर्क में आने वाली आबादी में गंभीर हेल्थ खतरे पैदा किए हैं। भारत में, लगभग 151 जिलों और 18 राज्यों में ग्राउंडवाटर यूरेनियम कंटैमिनेशन की रिपोर्ट मिली है, और बिहार में लगभग 1.7% ग्राउंडवाटर सोर्स प्रभावित हैं।"

क्या इसका असर मांओं और बच्चों पर पड़ता है?

लेखकों में से एक, एम्स दिल्ली के अशोक शर्मा ने मीडिया को बताया कि सभी सैंपल में यूरेनियम पाया गया, लेकिन यह स्वीकार्य सीमा से नीचे है।

सीमाएं, जिसका अर्थ है कम अपेक्षित स्वास्थ्य प्रभाव।

स्टडी का नतीजा यह है कि बच्चों की हेल्थ पर असल असर शायद कम है, और माँओं द्वारा एब्ज़ॉर्ब किया गया ज़्यादातर यूरेनियम मुख्य रूप से यूरिन के ज़रिए निकलता है, ब्रेस्ट मिल्क में कंसन्ट्रेटेड नहीं होता है। डॉ. शर्मा ने आगे कहा कि असेसमेंट में 70% बच्चों में पोटेंशियल नॉन-कार्सिनोजेनिक रिस्क दिखा, लेकिन देखे गए लेवल से माँओं और बच्चों पर "कम से कम असल हेल्थ पर असर" पड़ने की उम्मीद है, और ब्रेस्टफीडिंग तब तक जारी रखनी चाहिए जब तक कोई क्लिनिकल कारण न हो। अगर बच्चों में यूरेनियम का लंबे समय तक एक्सपोजर बना रहता है, तो यह किडनी के डेवलपमेंट और कॉग्निटिव और मेंटल हेल्थ आउटकम (जिसमें कम IQ और न्यूरोडेवलपमेंटल डिले शामिल है) पर असर डाल सकता है।

सीनियर कंसल्टेंट गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन कोचीन के पूर्व प्रेसिडेंट, राजीव जयदेवन इस विवाद को सही संदर्भ में रखना चाहते हैं। "यूरेनियम शब्द आम लोगों में पैनिक पैदा कर सकता है क्योंकि इसका मतलब साफ़ तौर पर रेडियोएक्टिविटी से है। असल में, यूरेनियम उन कई एलिमेंट्स में से सिर्फ़ एक है जो ग्राउंडवाटर में नैचुरली पाए जाते हैं, सिर्फ़ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर के कई देशों में। ग्राउंडवाटर का इस्तेमाल आम तौर पर पीने के लिए किया जाता है; नैचुरली, इन एलिमेंट्स की थोड़ी मात्रा इंसान के शरीर में जाती है और यूरिन के ज़रिए सुरक्षित रूप से बाहर निकल जाती है। इसका सिर्फ़ एक छोटा सा हिस्सा ब्रेस्ट मिल्क में जाता है — और इस स्टडी में पाया गया लेवल WHO की पीने के पानी की सेफ़ लिमिट से लगभग छह गुना कम है। इस तरह, एक एडल्ट जो ज़्यादा मात्रा में पानी पीता है, उसकी तुलना में एक बच्चे द्वारा ब्रेस्ट मिल्क के ज़रिए लिया गया यूरेनियम का कुल अमाउंट बहुत कम होता है।"

उनका कहना है कि असल खतरा यह है कि लोग स्टडी को गलत समझ सकते हैं या गलत मतलब निकाल सकते हैं, और घबराहट में ब्रेस्ट-फीडिंग बंद कर सकते हैं।

डॉ. जयदेवन का कहना है कि ब्रेस्ट-फीडिंग में कमी बच्चों की मौत, इन्फेक्शन और कुपोषण का एक बड़ा कारण है। इसलिए, स्टडी की रिपोर्ट करते समय इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि ब्रेस्ट-फीडिंग सुरक्षित है।

यह पक्का करने के लिए कि फ़ूड चेन में मेटल और दूसरे कंटैमिनेंट्स का कंसंट्रेशन 'सेफ़' लिमिट से ज़्यादा न हो, समय-समय पर ग्राउंडवॉटर स्टडीज़ करनी चाहिए। पेपर में भविष्य में बड़े सैंपल साइज़ और एनवायर्नमेंटल यूरेनियम प्रोलिंग (पानी, मिट्टी और खाने में) के साथ स्टडीज़ करने की बात कही गई है। एक्सपोज़्ड आबादी में माँ-बच्चे के यूरेनियम काइनेटिक्स को बेहतर ढंग से समझने के लिए आइसोटोप-स्पेसिफिक मेज़रमेंट ज़रूरी हैं।

दूसरे राज्यों में ब्रेस्ट मिल्क में यूरेनियम कंटैमिनेशन पर स्टडी करने के लिए आगे की स्टडी की योजना बनाई जा रही है।

विभाजित राष्ट्र में संतुलन बनाना

न्यायमूर्ति सूर्यकांत

भारत के नए चीफ जस्टिस, जो फरवरी 2027 तक काम करेंगे, उनका मानना है कि न्याय का मतलब सिर्फ़ झगड़ों को सुलझाना नहीं है, बल्कि 'मासूमों को हालात के तूफ़ान में खोने से बचाना' है।

कृष्णदास राजगोपाल

सी भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने एक बार भारत की आज़ादी के बाद की यात्रा को एक युवा देश के अनिश्चित कदमों के रूप में बताया था, जो "ताकत की ताकत" की आत्मविश्वास भरी चाल में बदल रहा है। यह किरदार हरियाणा के पेटवाड़ गांव की घुमावदार गलियों से लेकर भारतीय न्यायपालिका के शिखर तक उनके अपने सफर को दिखाता है।

झूमर में दर्शक

राष्ट्रपति भवन में गणतंत्र मंडप, जहाँ उन्होंने 24 नवंबर को हिंदी में शपथ ली, उनकी यात्रा की एक छोटी सी झलक दिखाता है।

हिसार के गांव के बड़े-बुज़ुर्ग, टीचर, परिवार और दोस्त, जहां से उन्होंने अपना प्रोफेशनल करियर शुरू किया और कहीं न कहीं अपना जाति का नाम 'शर्मा' खो दिया, विदेशी जजों और बड़े लोगों के साथ बैठे।

अपने पहले के जजों के उलट, जिन्हें समझदार, खास अधिकार वाले या बेबाक माना जाता था, चीफ जस्टिस कांत के फैसले और बेंच पर उनके व्यवहार से पता चलता है कि उन्होंने समझदारी से बैलेंस बनाने की सोची-समझी कोशिश की है। ऐसे समय में जब सुप्रीम कोर्ट ज़्यादा टेक्नोलॉजी वाले सॉल्यूशन की तरफ बढ़ रहा है, जस्टिस कांत सभी को यह याद दिलाना चाहते हैं कि न्याय एक "पूरी तरह से इंसानी काम" है जिसे कोई मशीन कॉपी नहीं कर सकती।

जब करोड़ों के केस जल्दी सुनवाई या अपने पक्ष में ऑर्डर के लिए बेंच पर उनका ध्यान खींचने के लिए एक-दूसरे से टकराते हैं, तो जस्टिस कांत चेतावनी देते हैं कि वे "आखिरी लाइन के सबसे छोटे लिटिगेंट" के लिए यहां हैं। उनका तर्क है कि जब कानून "अदृश्य पीड़ितों" के लिए सहानुभूति पैदा करता है और असलियत को आपस में जोड़ता है, तो यह एब्स्ट्रैक्ट नहीं रहता और सबको साथ लेकर चलने वाला बन जाता है। फिर भी, सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम, जिसका वे हिस्सा रहे हैं और जिसे अब वे लीड करते हैं, सबको साथ लेकर चलने की बात पर अमल नहीं कर पाया और सुप्रीम कोर्ट के लिए एक महिला जज पर सहमत नहीं हो पाया।

जस्टिस कांट की अदालत में न्याय नहीं है तेज़, लेकिन धीमा और पक्का। यहाँ थोड़ा धक्का, वहाँ थोड़ा धक्का, लेकिन आखिर में राहत। कोर्ट में उनकी कही बातें कभी-कभी कठोर लग सकती हैं, हालांकि आखिरी ऑर्डर में बैलेंस वापस आ जाता है।

पूर्व भाजपा का मामला लें

जुलाई 2022 में प्रवक्ता नूपुर शर्मा के खिलाफ़ मामला दर्ज किया गया था। पैगंबर मोहम्मद पर अपमानजनक टिप्पणियों के लिए उन पर कई राज्यों में कई FIR दर्ज की गई थीं।

टीवी पर दिखाए गए बयानों से हिंसा भड़क गई थी। जस्टिस कांत ने तीखी टिप्पणी की थी, "देश में जो कुछ हो रहा है, उसके लिए यह महिला अकेले ज़िम्मेदार है"। अठारह दिन बाद, उनकी बेंच ने निर्देश दिया कि सुश्री के खिलाफ कोई ज़बरदस्ती वाली पुलिस कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए।

शर्मा.

सुप्रीम कोर्ट बेंच में अपने छह सालों में, जस्टिस कांत अपनी बात बदलने से नहीं हिचकिचाए हैं। उन्होंने इलाहाबाद हाई कोर्ट से आशीष मिश्रा को मिली ज़मानत "बहुत जल्दी" में कैंसिल कर दी थी, जो उस समय के केंद्रीय मंत्री के बेटे और लखीमपुर खीरी हत्याकांड के मुख्य आरोपी थे। प्रॉसिक्यूशन का केस मिश्रा के काफिले की SUV पर केंद्रित था, जिसने 2021 में उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी ज़िले में एक रैली में विवादित कृषि कानूनों का विरोध कर रहे किसानों को कुचल दिया था।

समझदार जज: 24 पेज के फैसले में, जस्टिस कांत, जो उस समय एक जूनियर जज थे, ने पीड़ितों को बेल की कार्रवाई में हिस्सा लेने का मौका न देने के लिए हाई कोर्ट की कड़ी आलोचना की: "पीड़ितों से यह उम्मीद बिल्कुल नहीं की जा सकती कि वे चुपचाप बैठकर दूर से कार्रवाई देखें... किसी अन्याय की याद आने से पहले न्याय देना कोर्ट का पवित्र कर्तव्य है।" हालांकि, महीनों बाद, जस्टिस कांत की बेंच ने मिश्रा को अंतरिम बेल दे दी; उन्होंने मुख्य लखीमपुर खीरी मामले से जुड़ी एक काउंटर FIR में अंडरट्रायल के तौर पर सज़ा काट रहे चार किसानों को भी राहत दी।

सुप्रीम कोर्ट में उनके शुरुआती सालों की कोर्ट हियरिंग के रिकॉर्ड बताते हैं कि वह एक समझदार जज थे जो पावर कॉरिडोर से बिना बदले सवाल पूछते थे। 2021 में पेगासस केस की हियरिंग में चीफ जस्टिस बेंच के एक छोटे जज जस्टिस कांत ने ज़ोर दिया कि सरकार इस बारे में साफ़-साफ़ बताए कि क्या इज़राइली, मिलिट्री-ग्रेड स्पाइवेयर ने नागरिकों की प्राइवेसी का उल्लंघन किया है।

हालांकि, इस साल की शुरुआत में, जब मामला फिर से सुनवाई के लिए आया, तो जस्टिस कांत, जो अब एक बेंच की अगुवाई कर रहे हैं और तैयार हैं।

चित्रण: आर. राजेश

टॉप जज बनने के लिए, उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया। इस बार उनके सवाल सरकार के बजाय पिटीशनर्स से थे। उनमें से एक था, "अगर देश एंटी-नेशनल एलिमेंट्स के खिलाफ सिक्योरिटी कारणों से उस स्पाइवेयर का इस्तेमाल करता है तो इसमें क्या गलत है?" यह सुनवाई अप्रैल 2025 के पहलगाम टेरर अटैक के कुछ दिनों बाद हुई थी।

2021 में, न्यायमूर्ति कांत उस बेंच के जजों में से एक, जिसने पहले के इंडियन पीनल कोड के देशद्रोह के नियम (सेक्शन 124A) को सस्पेंड करने का आदेश दिया था। चार साल बाद, 2025 में, जस्टिस कांत, जो अब बेंच को हेड कर रहे हैं, ने सवाल उठाया कि क्या सेक्शन 152 का गलत इस्तेमाल हो सकता है, यह एक ऐसा नियम है जो देश की आज़ादी को खतरे में डालने वाले कामों को अपराध बनाता है और राज्य द्वारा पिछले देशद्रोह कानून की जगह लेने वाला कानून, इस प्रावधान को असंवैधानिक घोषित करने का आधार हो सकता है। लेकिन सुनवाई में जस्टिस कांत ने याचिकाकर्ता-पत्रकारों को एक आलोचनात्मक लेख के प्रकाशन के लिए होने वाली गिरफ्तारी से भी बचाया, और कहा कि "सिर्फ़ असहमति से संप्रभुता खतरे में नहीं पड़ सकती"।

जस्टिस कांत ने हरियाणा पुलिस द्वारा परेशान किए गए एकेडमिक अली खान महमूदाबाद को अंतरिम ज़मानत दे दी। उन्होंने युद्ध और ऑपरेशन सिंदूर से हुई परेशानियों पर सोशल मीडिया पर पोस्ट किए थे।

लेकिन जज को एकेडमिक पर "डॉग व्हिसलिंग" का भी शक था और उन्होंने सीनियर पुलिस ऑफिसर्स की एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (SIT) बनाई ताकि उनके ऑनलाइन पोस्ट्स में "दोहरे मतलब" का पता लगाया जा सके।

लेकिन फिर, किसी तरह, ऑर्डर महमूदाबाद केस पहले के केस के बराबर करने की कोशिश के तौर पर सामने आया

कुछ दिन पहले ही मध्य प्रदेश के मंत्री विजय शाह की कर्नल सोया कुरैशी के बारे में की गई टिप्पणियों की जांच के लिए ऐसी ही SIT बनाने का निर्देश दिया गया था। जस्टिस कांत ने BJP नेता की टिप्पणियों को "बेहूदा, बिना सोचे-समझे" कहा था।

ट्रांसपेरेंसी की ज़रूरत जस्टिस कांत ने बिहार में स्पेशल इंटेंसिव रिविज़न एक्सरसाइज़ में ट्रांसपेरेंसी की तुरंत ज़रूरत को भी महसूस किया था, और प्रोसेस की कॉन्स्टिट्यूशनैलिटी के सवाल पर फैसला बाद के लिए रखा था। प्रेसिडेंशियल रेफरेंस बेंच, जिसके साथ वे जुड़े थे, ने संतुलन बनाने की बहुत कोशिश की, और कहा कि गवर्नर को टाइमलाइन में नहीं बांधा जा सकता, लेकिन राज्य पेंडिंग बिलों को पास करने में बहुत ज़्यादा देरी के मामलों में ज्यूडिशियल रिव्यू की मांग कर सकते हैं।

जस्टिस कांत की जस्टिस एडमिनिस्ट्रेशन में बैलेंस बनाने की कोशिशें समाज में साफ़ तौर पर मौजूद पॉलिटिकल और आइडियोलॉजिकल बंटवारे से मेल नहीं खातीं। जस्टिस बीआर गवई ने भारत के चीफ जस्टिस के तौर पर अपने रिटायरमेंट के दिन एक बातचीत में कहा कि आज के भारत में जजों को यह चिंता सताती है कि "अगर आप सरकार के खिलाफ फैसला नहीं करते हैं, तो आप अच्छे जज नहीं हैं"।

जस्टिस कांत ने अपना पहला केस इस तरह सुनाया एक हाई कोर्ट जज, दो नाबालिग बच्चों से जुड़ा एक क्रॉस-बॉर्डर कस्टडी का झगड़ा। उनके माता-पिता, जो देश की सीमाओं से अलग थे और सालों से चल रहे केस से परेशान थे, कोर्टरूम में दोनों तरफ खड़े थे। जस्टिस कांत को उस गुस्से वाले माहौल में बच्चों की शांत तकलीफ़ सबसे ज़्यादा अचंभित कर रही थी, उनकी बेचैन नज़रें एक वकील से दूसरे वकील पर जा रही थीं।

उन्होंने उस समय कहा, " कानून की महानता मुझे बहुत पर्सनल लगी, और मेरी ज़िम्मेदारी का एहसास हुआ। तब मुझे एहसास हुआ कि न्याय का मतलब सिर्फ़ झगड़े सुलझाना नहीं है, बल्कि बेगुनाहों को हालात के तूफ़ान में खोने से बचाना भी है।"

चीफ जस्टिस कांत के पास 9 फरवरी, 2027 तक का समय है, यह साबित करने के लिए काफी समय है कि वे 'SIR' साइक्लोन में फंसे करोड़ों वोटर्स की तरह, 'हालात के तूफानों में खोए हुए' बेगुनाहों के लिए हैं।

सार

जस्टिस कांट की अदालत में न्याय जल्दी नहीं, बल्कि धीमा और पक्का होता है।
यहाँ थोड़ा धक्का, वहाँ थोड़ा धक्का, लेकिन आखिर में राहत

अदालत में उनकी मौखिक टिप्पणियाँ कभी-कभी यह कठोर लग सकता है, हालांकि अंतिम आदेश में संतुलन वापस आ जाता है

ऐसे समय में जब सर्वोच्च कोर्ट ज़्यादा टेक्नोलॉजी-ड्रिवन सॉल्यूशन की ओर बढ़ रहा है, जस्टिस कांत ने याद दिलाना चुना सभी को यह विश्वास दिलाना कि न्याय एक "गहन मानवीय उद्यम" है जिसे कोई मशीन दोहरा नहीं सकती

नाजुक सीमा

डूरंड रेखा

कॉलोनियल समय की सीमा, जिसे आज अफ़गानिस्तान नहीं मानता, काबुल और इस्लामाबाद के बीच झगड़े की वजह बनी हुई है।

श्रुति दरभमुल्ला

सी पाकिस्तान और पाकिस्तान के बीच एक बार फिर तनाव बढ़ गया है अफ़गानिस्तान. तालिबान ने दावा किया है कि पाकिस्तान ने 24 और 25 नवंबर की रात को डूरंड लाइन के पास उसके इलाके में एयर स्ट्राइक की, जिसमें 10 लोग मारे गए। खबर है कि ये स्ट्राइक पक्तिका, खोस्त और कुनार प्रांतों में हुईं।

दुश्मनी के केंद्र में विवादित डूरंड लाइन है, जो दोनों देशों के बीच इंटरनेशनल बॉर्डर है। यह बॉर्डर 1893 में ब्रिटिश और अफ़गानिस्तान के उस समय के अमीर अब्दुर रहमान खान के बीच हुए एक एग्रीमेंट से तय हुआ था।

यह पश्चिम में ईरान के बॉर्डर से लेकर पूर्व में चीन के बॉर्डर तक, काराकोरम रेंज से होते हुए रेगिस्तान तक 2,600 km तक फैला हुआ है। यह बॉर्डर बंटवारे से पहले 1893 में ब्रिटिश इंडिया और अफ़गानिस्तान अमीरात के बीच बॉर्डर के तौर पर बनाया गया था, और इसका नाम भारत की [ब्रिटिश] सरकार के पहले के विदेश सचिव सर हेनरी मोर्टिमर डूरंड के नाम पर रखा गया है।

एशिया के बीच में बसा अफ़गानिस्तान, 1800 के दशक में बहुत स्ट्रेटेजिक महत्व रखता था, जो सेंट्रल एशिया पर कंट्रोल के लिए रूस और ब्रिटिश साम्राज्य के बीच ग्रेट गेम के बीच फंसा हुआ था। ब्रिटिश

एपी

1839 में अफ़गानिस्तान पर हमला किया गया, जिसे बाद में पहला एंग्लो-अफ़गान युद्ध कहा गया। इसका मकसद रूस को दक्षिण की ओर बढ़ने से रोकना था। हालांकि, पश्तून सेनाओं ने उन्हें पीछे धकेल दिया।

1878 में, ब्रिटिश ने फिर से अफ़गानिस्तान पर हमला किया, और दूसरे एंग्लो-अफ़गान युद्ध में जीत हासिल की। अगले साल, याकूब खान ने गन-दमक की संधि पर साइन किए, जिसमें अफ़गान विदेश नीति ब्रिटिश को सौंप दी गई, बदले में सुरक्षा, वापसी और अंदरूनी मामलों में दखल न देने का वादा किया गया।

1893 में, सर हेनरी मोर-टाइमर डूरंड ने अमीर अब्दुल रहमान खान के साथ अफ़गानिस्तान और भारत के बीच एक सीमा तय करने के लिए बातचीत की। नतीजा यह हुआ कि यह समझौता बहुत छोटा था, जिसमें एक पेज पर सिर्फ़ सात क्लॉज़ थे। डूरंड लाइन को खुद 1894 और 1896 के बीच एक जॉइंट अफ़गान-ब्रिटिश सर्वे से तय किया गया था। इस काम ने पश्तून इलाकों और इस क्षेत्र पर निर्भर जनजातियों ने बलूचिस्तान को ब्रिटिश भारत को दे दिया और रूसी और के बीच ब्यूर क्षेत्र के रूप में वखान कॉरिडोर की स्थापना की

ब्रिटिश साम्राज्य।

रावलपिंडी की संधि 1901 में अब्दुर रहमान खान की मौत के बाद और खासकर 1919 में उनके वारिस हबीबुल्लाह की हत्या के बाद अफ़गान-ब्रिटिश रिश्तों में गिरावट आई। अमानुल्लाह, जो ब्रिटिश का कोई दोस्त नहीं था, गद्दी पर बैठा, और उसके तुरंत बाद, तीसरा एंग्लो-अफ़गान युद्ध हुआ।

यह युद्ध रावलपिंडी की संधि के साथ खत्म हुआ, जिसने विदेश नीति का कंट्रोल वापस अफ़गानिस्तान को दे दिया और डूरंड लाइन को फिर से मज़बूत किया।

1947 में भारत के बंटवारे के बाद, पाकिस्तान को डूरंड लाइन एग्रीमेंट विरासत में मिला, जिसके तीन प्रांत इस बॉर्डर पर थे। लेकिन, डूरंड लाइन के दोनों तरफ के पश्तून आज़ादी और एक आज़ादी चाहते थे।

पश्तूनिस्तान का शासन।
इसके अलावा, अफ़गानिस्तान ने डूरंड लाइन को मानने से इनकार कर दिया, और समझौते और उससे तय बॉर्डर को रद्द घोषित कर दिया, यानी एक पुरानी कॉलोनियल सरकार जो अब मौजूद नहीं है, उसे बनाया गया।

अफ़गानिस्तान में एक के बाद एक आई सरकारों ने, जिसमें आज की तालिबान सरकार भी शामिल है, डूरंड लाइन की वैलिडिटी को मानने से मना कर दिया है। अफ़गानिस्तान पश्तून इलाकों और बलूचिस्तान पर अपने दावों को आगे बढ़ा रहा है। इस बीच, पाकिस्तान ने 2017 में इस बॉर्डर पर बाड़ बनाना शुरू कर दिया, जिससे उसके पड़ोसी देश का गुस्सा और बढ़ गया।

कोल्ड वॉर के समय और उसके बाद भी डूरंड लाइन पर बागियों की आवाजाही और बॉर्डर पार से घेरे के साथ अनिश्चितता बनी रही है। इस साल की शुरुआत में हुई झड़पें अक्टूबर में कतर की मध्यस्थता से खत्म हुईं। हालांकि, सीज़ेरियन स्टेटमेंट में डूरंड लाइन को बॉर्डर के तौर पर बताने से अफ़गान अधिकारी नाराज़ हो गए, जिससे कतर ने एक बदला हुआ स्टेटमेंट जारी किया, जिसमें "दोनों भाई देशों के बीच तनाव खत्म करने और इलाके में लगातार शांति के लिए एक मज़बूत नींव बनाने में मदद करने" की कोशिश की गई।

अब, बढ़ती मिलिट्री मौजूदगी और कड़ी निगरानी से पहले से ही कमज़ोर सीमा की डरी हुई शांति को खतरा है।

महत्वपूर्ण मोहरा

तेजस

दुबई क्रैश के बावजूद, HAL और IAF इस बात पर अड़े हैं कि यह एयरक्राफ्ट सुरक्षित, भरोसेमंद और भारत की एयर कॉम्बैट क्षमता के लिए स्ट्रेटेजिक रूप से बहुत ज़रूरी है।

सौरभ त्रिवेदी

टी 21 नवंबर को दुबई एयर शो में तेजस Mk-1 लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (LCA) के क्रैश होने से इंडियन एयर फ़ोर्स (IAF) के पायलट विंग कमांडर ना-मंश स्याल की दुखद मौत हो गई। इस घटना ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) की क्षमताओं और स्वदेशी डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग के लिए सरकार के कमिटमेंट पर ज़ोरदार बहस छेड़ दी है।

हालांकि, HAL और IAF दोनों के अधिकारियों का कहना है कि तेजस प्लेटफॉर्म अपनी क्लास के सबसे सुरक्षित आज के लड़ाकू विमानों में से एक है।

शुक्रवार को दिल्ली में एक इवेंट में चिंताओं को दूर करते हुए, HAL के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डीके सुनील ने जेट के ट्रैक रिकॉर्ड का ज़ोरदार बचाव किया। उन्होंने कहा, "तेजस में कोई दिक्कत नहीं है; यह पूरी तरह से सुरक्षित है, और इसका सेफ्टी रिकॉर्ड दुनिया में सबसे अच्छा है। दुबई में जो आपने देखा वह एक बुरी घटना थी।"

एविएशन एक्सपर्ट्स ने भी यही बात कही है, और जल्दबाज़ी में कोई नतीजा न निकालने की सलाह दी है। उनका कहना है कि आजकल के लड़ाकू ऑपरेशन में अपने-आप रिस्क होता है, और अलग-अलग घटनाओं को उसी हिसाब से देखना चाहिए। कई लोगों का मानना है कि दुबई क्रैश से तेजस के बढ़ते एक्सपोर्ट पोटेंशियल पर कोई असर पड़ने की उम्मीद नहीं है।

एएफपी

दुबई क्रैश दो साल से भी कम समय में तेजस का दूसरा एक्सीडेंट है। मार्च 2024 में, राजस्थान के जैसलमेर में एक तेजस फाइटर प्लेन गिरा था — यह एयरक्राफ्ट के 23 साल के इतिहास में पहला क्रैश था। 2001 में अपने पहले टेस्ट के बाद से, तेजस ने एक बेदाग रिकॉर्ड बनाए रखा था।

बिना किसी बड़े हादसे के लंबे गैप ने स्वदेशी प्रोग्राम पर भरोसा काफी मज़बूत कर दिया था, जो 1980 के दशक की शुरुआत से ही बन रहा था।

LCA की कल्पना

पुराने हो रहे MiG-21 EET की जगह लेने के लिए, जो दशकों से IAF की रीढ़ की हड्डी का काम कर रहा था। इतने सालों में, पूरी टेस्टिंग, सिस्टम अपग्रेड और टेक्नोलॉजिकल सफलताओं के ज़रिए प्रोग्राम को बेहतर बनाया गया।

आज, तेजस फ़ैमिली में कई वेरिएंट शामिल हैं: Mk1, Mk1A और अभी बन नहीं रहा Mk2, साथ ही ट्रेनर और नेवी वर्शन। Mk1

प्रारंभिक उत्पादन मॉडल वर्तमान में भारतीय वायुसेना द्वारा संचालित किया जाता है, जबकि एमके1ए अपने एईएसए रडार, उन्नत इलेक्ट्रॉनिक युद्ध सूट, दृश्य-सीमा से परे मिसाइल क्षमता, हवा में ईंधन भरने की प्रणाली और कम रडार क्रॉस-सेक्शन के साथ एक पर्याप्त तकनीकी छलांग का प्रतिनिधित्व करता है।

सबसे छोटा और हल्का तेजस अपनी क्लास में दुनिया का सबसे छोटा और सबसे हल्का सुपरसोनिक फाइटर है। इसमें डेल्टा-विंग कॉन्फिगरेशन और क्वाड्रप्लेक्स डिजिटल वाई-बाय-वायर लाइट कंट्रोल सिस्टम है, साथ ही इसकी मैनूवरेबिलिटी को बेहतर बनाने के लिए एडवांस्ड लाइट कंट्रोल सिस्टम भी हैं।

4,000 kg की मैक्सिमम पे-लोड कैपेसिटी और 13,300 kg के मैक्सिमम टेको वेट के साथ, इस एयरक्राफ्ट को खास तौर पर एयर कॉम्बैट और ऑफ-ऑफेंसिव एयर सपोर्ट मिशन के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसमें सेकेंडरी कैपेबिलिटी के तौर पर टोही और एंटी-शिप रोल शामिल हैं। IAF अभी Mk1 को नंबर 45 फ्लाइंग डैगर्स के साथ इस्तेमाल करती है।

और सुलूर एयर फ़ोर्स स्टेशन पर नंबर 18 फ़्लाइंग बुलेट्स स्क्वाड्रन, आने वाले सालों में और यूनिट्स बनाने का प्लान है। प्रोग्राम के लिए एक बड़ा मील का पत्थर मार्च 2024 में आया जब पहली सीरीज़ प्रोडक्शन Mk1A ने अपनी पहली उड़ान पूरी की। HAL ने तब से तीन डेडिकेटेड प्रोडक्शन लाइनें चालू की हैं — दो बेंगलुरु में और एक नासिक में — ताकि बढ़ती घरेलू और एक्सपोर्ट डिमांड को पूरा किया जा सके।

Mk1A के अलावा, ज़्यादा एडवांस्ड तेजस Mk2 पर भी काम चल रहा है।

मिराज-2000, जैगुआर और मिग-29 विमानों की जगह लेने के लिए 2012 में 4.5 पीढ़ी के लड़ाकू विमान के रूप में विचार किए गए एमके2 में बार-बार देरी हुई है, और अब इसका पहला प्रोटोटाइप 2026 के आसपास आने की उम्मीद है। एक बार चालू होने के बाद, एमके2 के सबसे सक्षम स्वदेशी लड़ाकू विमान होने की उम्मीद है।

दुबई में हाल ही में लगे झटके के बावजूद, एविएशन एनालिस्ट का मानना है कि तेजस प्रोग्राम एक बड़ी टेक्नोलॉजिकल कामयाबी है और भारत के एयरोस्पेस इकोसिस्टम का एक ज़रूरी पिलर है।

आने वाले महीने — खासकर दुबई क्रैश इन्वेस्टिगेशन के नतीजे — बहुत अहम होंगे। हालांकि, अभी के लिए, HAL और IAF इस बात पर अड़े हैं कि तेजस भारत की एयर कॉम्बैट कैपेबिलिटी के लिए एक सुरक्षित, भरोसेमंद और स्ट्रेटेजिक रूप से ज़रूरी प्लेटफॉर्म बना रहेगा।

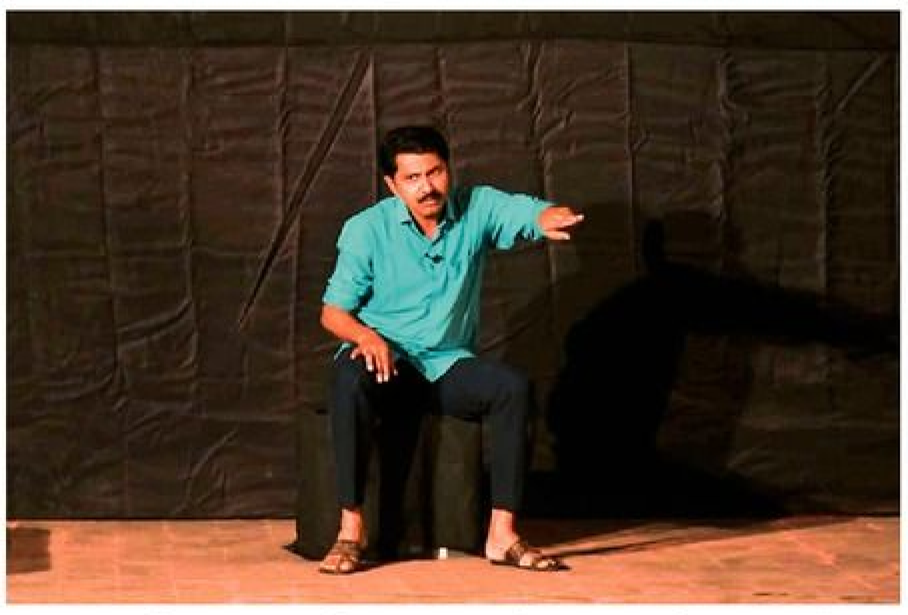

‘नली’ नाही... तरी नली आहे!

संजय घावरे
उपमुख्य उप-संपादक

नाट्यरंग

एकपात्री नाटक - नली

परिवर्तन- जळगावनिर्मित ‘नली’ निरपेक्ष प्रेमाची गोष्ट हा एकल नाट्यप्रयोग मुंबई मराठी पत्रकार संघाच्या ‘नाट्य शुक्रवार’ या उपक्रमात सादर करण्यात आला. श्रीकांत देशमुख यांनी लिहिलेल्या ‘नली’चे नाट्यरूपांतर शंभू पाटील यांनी केले आहे, तर दिग्दर्शन योगेश पाटील यांचे आहे. हर्षल पाटीलने केलेला अभिनय खिळवून ठेवणारा आहे. प्रत्येक व्यक्तिरेखेत हर्षलने रंग भरले आहेत. त्यासाठी भाषेचा लहेजा आणि देहबोली यावर बारकाईने काम केले आहे.

नाटकाची गोष्ट विदर्भातील गावाची आहे. बाळू नावाच्या मुलाचा बालपणापासून प्रशासकीय अधिकारी बनण्यापर्यंतचा प्रवास आणि त्यात नलीची प्रेमकहाणी पाहायला मिळते. शाळेत असल्यापासूनच बाळूच्या मनात नलीबाबत प्रेम असते. नलीही इतर कोणाशी बोलत नसते; पण बाळूला पाहिल्यावर तिच्या चेहऱ्यावर हास्य फुलते. इतर कोणत्याही मुलाशी न बोलणारी नली बाळूशी बोलतेही. बाळूच्या शाळेची वाट नलीच्या घरासमोरून जाणारी असल्याने बाळूही तिच्या घरासमोर जरा घुटमळूनच पुढे जातो. चौथीची परीक्षा होते. बाळू शाळेत पहिला येतो; पण नली मात्र नापास होते. त्यामुळे तिची शाळा बंद होते आणि तिला शेतीची कामे करावी लागतात. बाळू मात्र पाचवी, दहावी, उच्च शिक्षण घेत प्रशासकीय अधिकारी बनतो. या दरम्यान नलीचे काय होते? बाळू आणि नलीच्या व्यक्त-अव्यक्त प्रेमाची गोष्ट कोणत्या वळणावर पोहोचते? याचे चित्र या नाटकात उभे केले जाते.

शंभू पाटील यांनी श्रीकांत देशमुख यांनी लिहिलेल्या ‘नली’चे अचूक नाट्यरूपांतर केले आहे. त्यात वेगवेगळी कॅरेक्टर्स गुंफताना बदलती नली आणि बाळूही सुरेख रेखाटला आहे. दिग्दर्शन करताना योगेश पाटील यांनी अत्यंत बारीक-सारीक गोष्टी लक्षात घेतल्या आहेत. नलीच्या भावाने गणपतीची मूर्ती रंगवण्यापासून, सिनेमागृहांमध्ये जाऊन सिनेमा पाहण्याची दृश्ये अचूकपणे सादर केली आहेत.

हर्षलने बाळू आणि नलीसोबतच मसाजीराव, पवार मास्तर, नलीचा भाऊ, बाळूचे आई-वडील, सोनार गुरुजी, मधू ही सर्व कॅरेक्टर्स नेटकेपणाने सादर केली आहेत. बाळू नलीवर मनापासून प्रेम करत असतो; पण तो ते कधी व्यक्त करू शकत नाही. नलीचेही यापेक्षा वेगळे नसते. पुढे उच्चशिक्षित बाळू प्रशासकीय अधिकारी बनल्याने अशिक्षित नली आणि त्याच्यातील दरी अधिकच वाढते.

नली या नाटकात प्रत्यक्षात नसली किंवा नलीची भूमिका एखाद्या अभिनेत्रीने साकारलेली नसली तरी तिची वेगवेगळी रूपे आपल्या डोळ्यांसमोर अगदी सहजपणे उभी राहतात.

यात सुरुवातीला बाळूला भेटलेली नली, चौथीपूर्वीची नली, चौथीत नापास झाल्याने शाळा सोडल्यानंतरची नली, शेतात काम करणारी, पाणी भरणारी, लग्नानंतरची नली असे तिच्या जीवनातील वेगवेगळे टप्पे आणि तिची विविध रुपं डोळ्यांसमोर उभे राहतात. नेपथ्य जय सोनार यांचे आहे. संगीत राहुल विवाळकर यांचे आहे.

खाद्ययात्रा

शुभा प्रभू-साटम

उत्तम, सुटसुटीत आणि करायला सोपी ‘पानगी’

न्याहारीचा एक सोप्पा सुटसुटीत; पण अफाट चवदार प्रकार. सिंधुदुर्गात फार प्रसिद्ध नाही; पण गुहागर, दापोली, चिपळूण रत्नागिरी भागांतील ब्राह्मण कुटुंबांमध्ये आवडीने खाल्ली जाते. करायला सोप्पी आणि स्वस्त. हिची गुजराथी चुलत बहीण पनकी. किंचित काही फरक, चव, कृती समान. इतकी सुटसुटीत कृती. कोकणात हळद पाने परसदारात असतच. नसल्यास केळीची पाने, तांदूळ पिठी घरात असतेच. ती भिजवून त्यात मीठ, तीळ असे काही घालून पानावर थापून उकडून, वाफवून घ्यायची. खाताना पान सोडवून वरून तूप घालून खायचे. जोडीला खारातील मिरची, मेतकूट असे काही.

गुजराथी पानकीही अशीच. तथापि, दक्षिण मुंबईमधील एका ठिकाणी मात्र या पानकीचे आधुनिक आणि लोकप्रिय रूप बघितले. दिल/ कॉर्न/ मेथी पानकी आणि लोक आवडीने खात होते. पदार्थाचे मूळ रूप, चव अबाधित राखून नवे कसे करायचे, याचा नमुना. मराठी लोकं इथेच मार खातात. मिसळ घ्या. वास्तविक श्रमिकवर्गाचे अन्न; पण आता लोकप्रिय. त्याच्यात काय बदल केले? चुलीवरची मिसळ, शाही मिसळ, बटर मिसळ, तंदुरी मिसळ, काळ्या मसाल्यात केलेली. बस.. विषय संपला. हा आता नाही म्हणायला मोदक विविध चवीचे दिसतात; पण तत्कालिक.

तथापि, आजकाल गुजराथी पानकी देश, सीमा ओलांडून सातासमुद्रापार पोहोचून लोकप्रिय झालीय आणि मराठी पानगी घरातच राहिलीय. का? आपणच महत्त्व देत नाही. समारंभांच्या जेवणात काय स्नॅक्स असतात? पॅटिस/ हरा भरा कबाब/ पनीर टिक्का. क्वचित कोथिंबीर/ अळू वडी. का पानगी दिसत नाही? का निवळ्या नसतात? स्वस्त आणि सोप्पा पदार्थ.

मराठी लोक आपल्या खाण्याबाबत उगाच न्यूनगंड बाळगून असतात असं माझं मत आहे. वडा/मिसळ-पाव यांमधून बाहेर येऊन वेगळे पदार्थ आणायची गरज आहे आज. पानगीसारखा उत्तम, सुटसुटीत पदार्थ दुसरा नाही. अर्थात बाहेर सोडा खुद्द मराठी घरात केली जात नाही. स्टार्टरमध्ये पानगी ठेवली, तर काय आकाश कोसळणारय? तांदूळ पीठ, मीठ इतक्या घटक पदार्थात होणारी डिश आहे. पुन्हा पौष्टिक; पण नाही आम्ही तेच ते करत राहतो.

अर्थात, इथे कोकलून उपेग नाय. असो; तर चिपळूण, दापोली, केळशी, रत्नागिरी अशा ठिकाणी गेलात तर पानगी नक्की खा. साधे-सोपे अन्न किती चवदार असते, त्याचा अनुभव नक्की येईल. वडा/ मिसळ-पाव असतातच... थोडी वेगळी चव घ्या.

बाबासाहेबांच्या चित्रमय चरित्राची चित्तरकथा

पुस्तकाच्या जन्माची गोष्ट

रामदास भटकळ

सहसा पुस्तक प्रकाशित करायचे ठरले की, वाचता-वाचता माझ्या नजरेसमोर संकल्पित पुस्तकाचा आकार, टाइप, मुखपृष्ठ हे सारे उभे राहत असे. मुखपृष्ठासाठी काम करणारे श्रेष्ठ चित्रकलावंत दीनानाथ दलाल, द.ग. गोडसे, प्रभाकर गोरे, वसंत सरवटे, पद्मा सहस्रबुद्धे, रघुनाथ तळाशीलकर, बाळ ठाकूर, सुभाष अवचट, राजा मराठे, असे चित्रकार माझ्यासाठी सर्वोत्तम काम करतात, अशी माझी समजूत आहे.

मात्र धनंजय कीर यांनी मथळे देऊन विजय सुरवाडे यांच्या मदतीने तयार केलेल्या चित्रमय चरित्राच्या बाबतीत पुस्तकाचे दर्शनी स्वरूप कसे असावे, हा मुद्दा आधीच ठरलेला होता. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची दुर्मीळ छायाचित्रे जमवून, त्यांना योग्य असा पुस्तकाचा आकार आणि एखादा लक्षणीय फोटो कव्हरवर द्यायचा हे सारे कीरांनी ठरवलेलेच होते.

कीर यांनी त्यापूर्वी वीर सावरकर, लोकमान्य टिळक अशी चरित्रे आधी इंग्रजीतून आणि नंतर मराठीतूनही लिहिली असली, तरी त्यांनी लिहिलेले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे चरित्र सर्वांत अधिक नावाजले होते. त्या मूळ पुस्तकाच्या लेखनासाठी त्यांनी कष्टपूर्वक बरीच माहिती जमवली होती. त्यांच्या निखळ, निस्पृह वृत्तीची कीर्ती पसरल्यामुळे अनेक आंबेडकर भक्तांनी आपणहून त्यांना माहिती आणि दस्तऐवज पुरवले होते. तात्याराव सावरकरांनी जसे स्वतः बरीच कागदपत्रे कीरांना दिली, तसे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या बाबतीत झाले नाही. त्यांची बाबासाहेबांशी भेट होऊन काही वादग्रस्त मुद्द्यांवर त्यांच्याशी ते चर्चा करू शकले होते. त्यामुळे कीर यांच्या आंबेडकर चरित्राला आधारभूत ग्रंथ (Authorised Biography) म्हणून आंबेडकरांचे फक्त अनुयायीच नव्हे, तर देशापरदेशातील अभ्यासक प्रमाण मानत. भारताच्या संविधानाचे जनक त्यांना मानले जात असे. महाराष्ट्र शासनाने प्रकाशित केलेल्या आंबेडकर यांच्या समग्र वाङ्मयात, तर संविधान जणू त्यांनीच लिहिलेले पुस्तक आहे, असे गृहीत धरले होते.

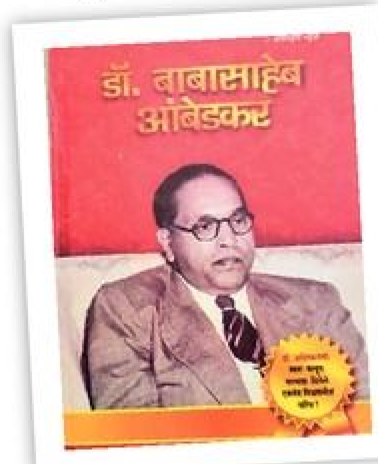

कीरांचे महाचरित्र आंबेडकर अनुयायी दर वर्षी ६ डिसेंबरला त्यांच्या महापरिनिर्वाण दिनाच्या निमिताने मुंबईत जमत, तेव्हा ते विकत घेत आणि धर्मग्रंथाप्रमाणे आदरपूर्वक बाळगत. तरी ही मंडळी ते महाचारित्र कितपत वाचू शकतील याविषयी माझ्या मनात निष्कारण शंका येत असे. तेव्हा हे चित्रमय चरित्र अनुयायांच्या दृष्टीने अधिक सोयीचे ठरेल, अशी माझी भ्रामक कल्पना झाली.

२००६ च्या विजयादशमीला बाबासाहेबांच्या धर्मांतराला पन्नास वर्षे होणार होती, म्हणून नागपूरच्या दीक्षाभूमीवर लाखो लोक जमणार, अशी अपेक्षा होती. त्या प्रसंगी या चित्रमय चरित्राची मोठ्या प्रमाणावर मागणी असेल, असे वाटल्यामुळे या पुस्तकाची छपाई आणि आवृत्ती या विषयी मला निर्णय घ्यायचे होते. तीन पर्याय होते या पुस्तकाचे मुद्रण आर्ट पेपरवर उत्तम दिसले असते. त्यासाठी आयात केलेला आर्ट पेपर वापरावा लागला असता. परंतु, अशाने पुस्तकाची किंमत अफाट ठेवावी लागली असती. कदाचित तीनशे रुपये. न्यूजग्लेजसारख्या स्वस्त कागदावर छपाई चांगली होऊ शकली असती. परंतु, मग ते तीन रुपये किमतीचे स्वस्त पुस्तक हलक्या प्रतीचे तकलादू वाटले असते. काही दिवसांनी ते चोपडे म्हणून टाकले गेले असते. तेव्हा, मध्यम मार्ग म्हणून आम्ही ऑफसेट कागदावर छापायचे ठरवले. आमच्या मुद्रकानेही बऱ्यापैकी छापून देण्याचे आश्वासन दिले. किंमतही त्या मानाने माफक म्हणजे तीस रुपये ठेवता आली.

हा मध्यम मार्ग चुकीचा ठरला. हे अभिमानाने बाळगावे असे उत्तम कॉफी टेबल पुस्तक किंवा परवडणारे स्वस्त असेही झाले नाही. मोठ्या आशेने आम्ही एकदम दहा हजार प्रती छापल्या. सहसा महापरिनिर्वाण दिनानिमित्त मुंबईत जमणारी गर्दी आणि तिथे होणारी कीरांनी लिहिलेल्या महाचरित्राची तडाखेबंद विक्री आम्ही अनुभवत आलो होतो. परंतु, आता विक्री नागपूरच्या दीक्षाभूमीवर करायची होती. मोटार पार्सलने पुस्तके पाठवणे बेभरवशाचे ठरले असते. काहीशा चढ्या भावाने एसटीवर गठ्ठे चढवता आले असते. पण, मुंबई-नागपूर थेट सुविधा नव्हती. मुंबई-अमरावती आणि पुणे-नागपूर अशी वाहतूक चालायची. आम्ही मोठ्या कष्टाने एका उच्चपदस्थ आंबेडकर अनुयायी राजकारण्याच्या मदतीने या पुस्तकाच्या बऱ्याच प्रती नागपूरला रेल्वेने त्यांच्या डब्यातून पाठवल्या. परंतु, चुकीच्या निर्णयामुळे बहुतेक परत आणाव्या लागल्या. नंतर मोठा खटाटोप करून त्यांची विक्री केली. धनंजय कीर यांनी लिहिलेले महाचरित्र मात्र १९६६ पासून दरवर्षी पुनर्मुद्रित करावे लागले यावरून घ्यायचा तो बोध आम्ही घेत आहोत.

...गड्या आपलं काम भलं!

आजकाल आपण काम करून दमून आलो तरीही आपल्याला झोप येईपर्यंत मोबाइलची संगत हवीच असते. मोबाइल उपयुक्ततेपेक्षा अधिक विरंगुळ्याचे साधन बनला आहे. या दृश्यात दिसणाऱ्या दमूनभागून आलेल्या एका हमालाने हातगाडीवर अंग टाकलं आहे आणि हाती मोबाइल घेतला आहे. तर हातगाडी घेऊन निघालेला दुसरा हमाल त्याच्याकडे कुतूहलाने पाहत आहे. तुझ्याप्रमाणे मोबाइलमध्ये वेळ वाया घालवण्यापेक्षा “गड्या आपलं काम भलं”, असं तर त्याला सुचवायचं नाही ना?

छाया : सुशील कदम

व्यासंगात मुरलेलं इंदुरी गझलप्रेम

@

मुलखावेगळी माणसे

दिनकर गांगल

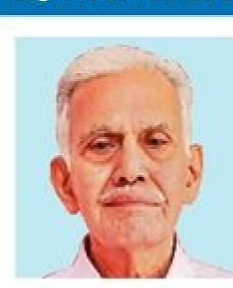

इंदूरचे खवय्ये आणि तेथील रसिक प्रसिद्ध आहेत. पैकी खवय्येगिरी सोपी आहे - तेथील खाऊगल्लीत घुसायचे आणि एकेका ठेल्यावर पदार्थ चाखत सुटायचे. रसिकतेसाठी मात्र दर्दी असावे लागते, मैफिली जमवाव्या लागतात, भाव-संवेदना जपाव्या लागतात. दीपक खरे यांच्या बाबतीत ते घरीच घडले. त्यांचे वडील वसंत यांचे अकाली निधन झाले. आई रोहिणी यांच्याकडे संसारसूत्रे आली. आईच्या तोंडी मराठी कवी असत. त्या कवितांत मुले न्हाऊन निघत. अनिल अवचट यांनी रोहिणी आईच्या संस्कारशील वर्तनाच्या हकिगती त्यांच्या काव्यसंग्रहाच्या प्रस्तावनेमध्ये लिहिल्या आहेत.

दीपक त्यांच्या कवितावेडापायी त्यांच्या परदेशस्थ मुला-पुतण्यांना ई-मेलवर रोज एक नवी कविता आणि तिचा रसास्वाद पाठवत. कविता हिंदी-उर्दू असत. त्यांचे ते व्यक्तिगत लेखन पुढे ब्लॉगमध्ये रूपांतरित झाले. तशा ‘ऑनलाइन’ मैफली रंगू लागल्या. दीपक यांच्या चाहत्यांचा वर्ग वाढला.

दीपक खरे

दीपक हे मुळात बायोकेमिस्ट्रीचे अभ्यासक, संशोधक, प्राध्यापक. त्यांनी नोकरीची ती बंधने तोडली. भाऊ मिलिंद यांच्या साथीने ट्यूशन क्लासेस सुरू केले आणि स्वतःचे छंद जोपासण्यास मोकळे झाले. त्यांची रोजची साहित्यसाधना - वाचन व लेखन तीन तासांचे असे. त्यामध्ये कवितांइतकेच तत्त्वज्ञान, विज्ञानाचा इतिहास, वेगवेगळ्या संस्कृती यांच्या अभ्यासाला स्थान असे. त्यांचा तो व्यासंग गेली ५५ वर्षे अव्याहत चालू आहे. ते तसाही ग्रंथ लिहित आहेत. त्यांचे शहरातील बँकांपासून साहित्य संस्थांपर्यंतचे संबंधही घट्ट आहेत. त्यामुळेच इंदूरच्या ५० प्रभावशाली व्यक्तींमध्ये त्यांचा समावेश होऊ शकतो.

आता दीपक यांचे संचित ‘मेरे पसन्दीदा शायर’ या आगळ्या पुस्तकरूपात आलेले आहे. तो मिर्झा गालिबपासूनच्या २२ हिंदी-उर्दू कवींच्या उत्तम रचनांचा खजिना आहे. राहत इंदोरी, दुष्यंतकुमार यांच्या आधीचे झौक, फैझ, जालंधरी, रियाझ अशा शायरांच्या रचना स्पष्टीकरणासह पुस्तकात येतात आणि गझल काव्यप्रकाराची खोली कळत जाते. दीपक यांनी उर्दू भाषा आणि गझलकाव्य याबाबतही समर्पक लिहिले आहे. त्यामुळे शायरी ‘वाऽ वाऽ, बहोत खूब’ एवढ्यापुरती राहात नाही तर त्यामधून वाचकांचा मोठमोठ्या शायरांबरोबर संवाद सुरू होतो. ती किमया दीपक यांच्या लेखनकौशल्याची.

जयंत भीमसेन जोशी यांचे मुखपृष्ठ पुस्तकाच्या उच्च अभिरूचीला अनुरूप आहे. त्यासोबतच्या छोट्या टिपणात जयंत यांनी रास्त लिहिले आहे की, दीपक यांचे शायरीचे प्रेम व्यासंगात मुरले गेले आहे !

खरे यांनी शायरांचे पुस्तकात घेतलेले शेर अर्थपूर्ण, उद्बोधक आहेत. उदाहरणार्थ, वसीम बरेलवी यांची वेगवेगळ्या वेळची भाष्ये उद्धृत करून शेर मांडला आहे -

‘ये नफरत है जिसे लम्हे
मे दुनिया जान लेती है
और मुहब्बत का पता करने मे
जमाने बीत जाते है’

तोच भाव या पुस्तकाचा आहे. देशात विद्वेषाचे वातावरण आहे, पण शायर गोष्टी करत असतात त्या प्रेमाच्या, हार्दिकतेच्या. त्यांना रसिकांचा पाठिंबाही लाभतो.

चाळीचा बाला, त्याच्या आठवणींचा काला

पुस्तकं सांगतात गोष्ट

सिद्धार्थ ताराबाई

मुंबईतल्या कापड गिरण्या बंद पडल्या. गिरणी कामगार देशोधडीला लागला... त्याची चाळ संस्कृती इतिहासजमा झाली. आता गिरणगावाच्या छाताडावर दिमाखात गगनभेदी टॉवर्स उभे आहेत. त्यांना पाहत ‘चाळीचा बाला’ आठवणींच्या गाठोड्यातलं एकेक धडूत काढून उसवत बसला असेल. ‘आन्या’ हे अशाच एका ‘चाळीचा बाला’ ही पदवी मिरवणाऱ्या कार्यकर्त्याच्या आठवणींचा काला आहे.

नायगावातल्या कोहिनूर मिलच्या चाळीत वाढलेले आणि तारुण्यात युक्रांदच्या कामात झोकून दिलेले शांताराम जनी/लक्ष्मी बुधाजी पंदेरे मुंबई सोडून मराठवाड्यात स्थायिक झाले. हा ‘बाला’ जाताना चाळींच्या आठवणींची शिदोरी घेऊन गेला. चळवळी, आंदोलनांच्या कोलाहलात त्याच्या आठवणी मनाच्या तळाशी दडी मारून बसल्या. एक थोरला कालखंड सरला... आणि अचानक उद्‌भवलेल्या आजारपणात (कदाचित) उपचाराचा भाग म्हणून लेखक मना-मेंदूच्या खोल डोहात सूर मारून एकेक आठवण हुडकू लागला, लिहू लागला. स्वतःचं हरवलेपण, नात्यातल्या माणसांचं दुरावलेपण, सैलावलेले नातेबंध, चाळींतलं जगणं, तिथला मायेचा ओलावा...एकेक संचित त्यांच्या समाजमाध्यम खात्यावर झळकू लागलं. ते लोकांना आवडू लागलं. ते लिखाण म्हणजेच हे आत्मकथन.

गिरणगावातली राडेबाजी, तिथला पक्याभाई, टपक्याभाई, तोड्याभाई, टाक्याभाई, फाफडादादा यांची भाईगिरी, लोचे-लपाटे, हाणामारीत होणारा ठेवणीतल्या शिव्याशस्त्रांचा मारा, त्यात निघणारे आई-बहीणींच्या शरीराचे धिंडवडे, चाळकरी बायांच्या दुपारच्या चटपटीत चकाट्या, सार्वजनिक रेडिओ, बैठकीच्या खोल्या, उंबरा मैफली यांच्या चित्रणांचं हे अनेकरंगी, बहुपदरी वस्त्र लेखकानं विणलं आहे. या विणकामात लांजा, संगमेश्वर, रत्नागिरीतल्या ‘संगमेश्वरी’ बोलीतल्या इरलं, उरमाल, कवळ, रोवली, खांडूक, डांबा, शिमटी, पिरसा आदी शब्द ओघाने येतात. त्यांचा अर्थ पुस्तकाच्या शेवटी सापडतो.

या शिवाय, चाळीच्या माळ्यावरची बुटकी पण धाडसी आक्का, तिचा पगार झाला की दारूच्या पैशांसाठी धिंगाणा घालणारा तिचा लेक मारत्या, विश्वासार्हतेचा आदर्श पांडुरंग गुरव, लेखकाचा मार्गदर्शक भास्कर म्हात्रे, थोरली बहीण बायो, गिरणी कामगार वडील अशी अनेक विलक्षण व्यक्तिमत्त्वं आठवणींच्या सरमिसळीत आपल्याला भूरळ घालतात.

लेखकाचे वडील गिरणी कामगार. वारकरी. त्यांच्या मुखातून सतत पाझरणारी तुकोबांची अभंगवाणी. भजने, मृदंगाचे स्वर अशा वातावरणात शांताराम वाढतो. मुळात लेखकाचे वडील कुटुंबाला कोकणातून मुंबईत आणतात. शांतारामाचं घडणं, शिकणं चाळीत होतं. नारायण सुर्वे हा हळव्या मनाचा कवी त्याला शाळा मास्तर म्हणून लाभतो. लेखक म्हणतो, “माझ्या आई-बाबांनी आम्हा भावंडांना मुंबईत आणलं... आणि आमच्या आयुष्यातील रात्र सरली, कायमचा सूर्यप्रकाश आला.

प्रकाशाच्या अनेक कवडशांनी हे आत्मकथन समृद्ध आहे. परिवर्तनवादी चळवळीतील एका कार्यकर्त्याच्या या सिंहावलोकनातून उभ्या-आडव्या-तिरप्या आठवणींचा एक कोलाज उलगडला आहे. तो व्यथित, अंतर्मुख करतो.

जनसत्ता सरोकार

साहित्य

तीन

जनसत्ता | 30 नवंबर, 2025

जीने की खनक

कहानी

तनुजा चौबे

शादी के पंद्रह साल बीत चुके थे। स्वरा की दुनिया अब स्कूल और घर तक ही सिमट गई थी। अपनी जिम्मेदारियों को सजगता से निभाते हुए वह जीवन का सफर तय कर रही थी। सब कुछ अच्छा होते हुए भी उसने अपनी ख्वाहिशों के साथ समझौता करना सीख लिया था। यतिन ने स्वरा को पहली बार एक शादी में देखा था। वह उसकी बहन की सहेली थी–सुंदर और पढ़ी–लिखी। रसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर कर स्वरा पहली ही नजर में यतिन को भा गई। यतिन के पिता इस रिश्ते से सहमत नहीं थे, पर यतिन की जिद के आगे उन्हें झुकना पड़ा और जल्दबाजी में शादी हो गई।

शादी के तुरंत बाद ही स्वरा को घर की परंपराओं में ढलने की सीख दी जाने लगी। सास की निगरानी और ननदों की नसीहतें हर कदम पर साथ रहतीं। शृंगार को लेकर घर में एक अघोषित संहिता थी–सजना भी सीमित और समाज के अनुसार होना चाहिए। यतिन पढ़ा–लिखा था, पर सोच वही पुरानी थी, जहां स्त्री की चुप्पी को ही शालीनता माना जाता था। स्वरा की आत्म–अभिव्यक्ति के लिए कोई स्थान नहीं था, केवल भूमिका निभाने का दायित्व था। घर की दीवारें बोलती नहीं थीं, लेकिन उनमें स्त्री की सजगता को संदेह की नजर से देखा जाता था। विवाह के बाद सब कुछ सामान्य दिखता था। स्वरा जब सजती, तो जैसे हर रंग उसमें घुल जाता। लाल बिंदी, भर–भर कर पहनी लाल चूड़ियां उसकी पहचान बन चुकी थीं। वह शृंगार को स्त्री–सत्ता की अभिव्यक्ति मानती थी, पर धीरे–धीरे वही अभिव्यक्ति एक अपराध की तरह देखी जाने लगी।

रात को बिस्तर पर लेटते ही यतिन उसकी चूड़ियां उतरवा देता। शुरू में स्वरा ने इसे प्रेम की नजाकत समझा। उसने सोचा, शायद आवाज कमरे के बाहर चली जाती होगी। मगर एक रात यतिन ने कहा–चूड़ियों की आवाज से डर लगता है। लगता है जैसे किसी चुड़ैल के पास सोया हूं। और, यह जो सुबह–सुबह पायल की छम–छम करती हो, इसे भी निकाल दो। आजकल यह सब कौन पहनता है? स्वरा सिहर गई। उसके शृंगार को डरावनी उपमा दी गई थी।

यतिन बचपन से ऐसे माहौल में पला था, जहां चूड़ी, पायल और मेहंदी को केवल 'औरतों की बेड़ियां' कहा जाता था। उसके पिता हमेशा कहते–चूड़ियां और पायल पहनकर औरतें कैद हो जाती हैं, मर्दों पर बोझ बनती हैं। यह सोच यतिन के मन में घर कर गई। बाहर से वह पढ़ा–लिखा और आधुनिक दिखता था, लेकिन भीतर से उसने मान लिया था कि ये सब सजावटी प्रतीक औरतों को बंधन में रखने के औजार हैं। उसका मानना था कि पति–पत्नी के रिश्ते में बराबरी होनी चाहिए, पर बिंदी–सिंदूर–मेहंदी–पायल जैसी चीजें औरत को पुराने ढर्रे से बांध देती हैं।

शादी के शुरुआती दिनों में उसने सोचा कि शायद यह सब सामान्य शृंगार है, जिसे अनदेखा कर देना चाहिए। लेकिन जब उसने पाया कि स्वरा के रग–रग में ये चीजें बसती हैं, उसकी खुशी, उसका आत्मविश्वास इन्हीं से जुड़ा है तो भीतर ही भीतर खीझ उठती। वह चाहता था कि उसकी पत्नी आधुनिक और सहज दिखे। यही कारण था कि उसे चूड़ियां, पायल और मेहंदी से अजीब–सी चिढ़ महसूस होती थी।

> **शादी के तुरंत बाद ही स्वरा को घर की परंपराओं में ढलने की सीख दी जाने लगी। सास की निगरानी और ननदों की नसीहतें हर कदम पर साथ रहतीं।**

एक दिन चूड़ियां टूट गईं। सास ने ताना मारा, 'सुहागन होकर चूड़ियां उतारकर कौन सोता है? अपशगुन करती हो!' ननद ने वीडियो काल पर कहा, 'इसीलिए तो यतिन की तरक्की नहीं होती। सुहागन होकर भी समझ नहीं है।' प्लास्टिक की चूड़ियों पर भी ताने मिले। अंततः स्वरा ने सोने की दो साधारण चूड़ियां पहन लीं। रंग–बिरंगी कांच की चूड़ियां उसकी दराज में कैद हो गईं। स्वरा ने शृंगार के विवादों पर चुप रहना सीख लिया। घर में देवी–पूजा थी। उस दिन उसे लाल साड़ी पहनने की अनुमति मिली। उसने हल्का मेकअप किया और बरसों बाद शीशे में खुद को देखा। लगा, वह फिर से खुद को पहचान रही हो। तभी यतिन की आवाज आई, 'नीचे जा रही हो तो मेहंदी मत लगाना। अगर लगा भी ली तो पलंग पर मेरे पास मत सोना, बदबू आती है।' स्वरा का मन तड़प उठा। वह मेहंदी की खुशबू को मदमस्त करने वाली मानती थी। पर उसकी यह पसंद भी 'बदबू' कह दी गई। नीचे पहुंची तो सास ने कहा, 'कम से कम पूजा के समय तो शृंगार ठीक से कर लिया करो।' स्वरा मुस्कुराई, पर भीतर से टूटी। उसके लिए शृंगार अब प्रेम का नहीं, उपेक्षा का प्रतीक बन गया था।

कुछ वर्षों बाद बेटे अर्जुन का जन्म हुआ। घर में खुशी का माहौल था, पर उस उल्लास में भी स्वरा का अकेलापन कहीं दब गया। मां बनने की जिम्मेदारी ने उसके भीतर संवेदना जगाई, पर उसके सपनों की खिड़की और छोटी हो गई। उसने स्कूल में नौकरी शुरू की। वहां वह बच्चों की प्रिय और सहकर्मियों की सराही जाने वाली शिक्षिका थी। भीतर की स्त्री अब भी सवालों से भरी थी। धीरे–धीरे उसकी साड़ियों के रंग फीके पड़ गए। बिंदी छोटी हो गई। गहने दराज में बंद हो गए। अब वह केवल एक चेन और टाप्स पहनती थी। स्वरा ने हर उस चीज से दूरी बना ली, जो कभी उसकी पहचान थी।

फिर आया स्कूल का वार्षिक उत्सव। विषय था, 'स्त्री की स्वतंत्र पहचान'। सभी शिक्षिकाओं को लाल साड़ी पहननी थी। स्वरा ने अपनी वही पुरानी लाल शिफान साड़ी निकाली, जो शादी के बाद कभी नहीं पहनी थी। उसने बाल खुले छोड़े, हल्का मेकअप किया और बड़ी बिंदी लगाई। बरसों बाद उसने खुद को सजाकर देखा। लगा जैसे खोई हुई स्वरा लौट आई हो। स्कूल में सबकी नजरें उस पर टिक गईं। लड़कियां उसकी साड़ी और आत्मविश्वास से प्रभावित थीं। नाटक शुरू हुआ। मंच पर एक लड़की बोली, 'मेरे कपड़ों को मेरा मापदंड मत समझो, मेरे सपनों से मेरी पहचान समझो। जब तक हम खुद को जैसे हैं वैसे स्वीकार नहीं करते, तब तक कोई हमें स्वीकार नहीं करेगा।'

तालियों की गूंज में स्वरा जैसे खुद को सुन रही थी। वह सोच रही थी, 'क्या मेरी जिंदगी किसी और की शर्तों पर ही चलनी चाहिए? क्या मैं तय नहीं कर सकती कि मैं क्या पहनूं? क्या चाहूं?' घर लौटते समय स्वरा ने अपनी बिंदी को छुआ, बाल संवारे और खुद को हल्की मुस्कान दी। अब वह बदल रही थी। अब वह सिर्फ समर्पित पत्नी नहीं, अपनी पहचान को स्वीकारती हुई स्त्री थी। उसने घर में भी अपनी पसंद की चीजें वापस लानी शुरू कर दीं, थोड़ी बड़ी बिंदी, कुछ चूड़ियां, गहरे रंगों की साड़ियां। यतिन ने ताना मारा, 'अब फिर से सजना शुरू कर दिया है क्या?'। स्वरा ने मुस्कुराकर कहा–हां, अब फिर से जीना शुरू कर रही हूं।' जो चूड़ियां तानों से टूटी थीं, वही अब आत्म–स्वर की गूंज से खनकने लगीं। स्वरा ने सोचा, आधुनिक या पारंपरिक रहना स्त्री का अपना निर्णय होना चाहिए। उसका शृंगार, उसका पहनावा और उसकी पहचान उसके अपने चुनाव से तय होंगे, किसी और की शर्तों से नहीं। स्वरा ने दृढ़ता से सोचा, 'अब मैं अपनी शर्तों पर जिऊंगी। यही मेरी असली पहचान है।'

समय सूचक

अदब की दुनिया को फटकार लगाता शायर

जनसत्ता सरोकार

गजल की दुनिया को इक्कीसवीं सदी की हकीकत का साक्षात्कार करवाने वाले शायर को जान एलिया कहा गया। इश्क में डूबी हुई मुलायम सी उर्दू झगड़ा भी करती थी तो नफासत से। उस उर्दू को डांटने–फटकारने से लेकर सत्य का साक्षात्कार करवाने वाले जान एलिया गजल को अमीरों की हवेली से निकाल कर गुरबत की बस्ती दिखाने के लिए ले गए। वे अदब की दुनिया में एक बागी की तरह नमूदार हुए। समीक्षक कहते हैं कि उनका मिजाज इतना आधुनिक था कि आज उनकी गजल पढ़नेवाला हर नौजवां उन्हें अपना समकालीन मान बैठता है। जान एक शेर में कहते हैं–'कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुनिया में कौन रहा कौन गया/मैं तो बस यही देखता हूं कि मैं अभी तक हूं।'

जान एलिया

आज जिस तरह से जेन–जी की यू–ट्यूबर पीढ़ी जान एलिया पर फिदा रहती है, उसे देख कर यही कहा जा सकता है कि जान एलिया अभी तक न सिर्फ हैं, बल्कि वे अभी तक रच रहे हैं। उनके इस्तेमाल किए अरबी–फारसी के मुहावरे किसी दूसरे जहां से आए नहीं लगते हैं।

जान एलिया का पूरा नाम सय्यद जान हुसैन रिजवी था। उनका जन्म 14 दिसंबर 1931 को भारत के उत्तर प्रदेश के अमरोहा में हुआ था। एलिया की मृत्यु आठ नवंबर 2002 को पाकिस्तान के कराची में हुई। एलिया के जिंदा रहते, उनका सिर्फ एक संग्रह छपा था। बाकी तीन उनकी मृत्यु के बाद संकलित किए गए। जान ने अकेलेपन और अवसाद को लेकर जितनी गजलें लिखीं, मृत्यु के बाद उन्हें पाठकों की उतनी ही बड़ी महफिल मिली। दुख को जब कठोर भाषा में फटकार दिया जाए, तो वह भी थोड़ा सहमा हुआ सा दिख जाता है कि आखिर साबका किससे हुआ है। जान एलिया अदब की दुनिया को जब फटकार लगाते हैं तो आम पाठकों को लगता है कोई अपना सा शायर है जो हमारे आस–पास रहता है।

मां का प्यार

बाल कथा

दिनेश विजयवर्गीय

नंदनवन में एक हरे–भरे सघन वृक्ष पर चिड़ा–चिड़ी रहते थे। उनके तीन छोटे बच्चे एक भाई, दो बहन दिन में दूर–दूर तक के सुहावने दृश्य देखते रहते और हंसी–मजाक भरी बातों में पूरा दिन बिताते। इन बच्चों के माता–पिता जंगल में कुछ दूर नदी किनारे जाकर भोजन सामग्री जुटाते। बच्चे अभी कुछ बड़े व समझदार होने ही लगे थे कि उनकी मां की दुर्घटना में मौत हो गई। मां के बिना बच्चे दुखी रहने लगे। पिता भी अपने बच्चों के साथ दुख भरे दिन काटने लगा।

समय बदलते देर नहीं लगती। एक दिन चिड़ा अपने बच्चों को खिलाने के लिए दाना लेकर पास के गांव से खुशी–खुशी लौटा। उस दिन वह अकेला नहीं था। साथ में एक सुंदर सी चिड़िया भी थी जो बच्चों की नई मां थी। पूरे परिवार के दिन फिर से खुशी भरे कटने लगे। चिड़ा भी यह देख प्रसन्न था कि बच्चों को पुनः मां का प्यार मिलने लगा है।

अभी कुछ समय बीता था कि चिड़िया का पहली बार अपने बच्चों की मां बनने का वक्त आ गया। चिड़ा खुश होकर सोचने लगा कि बच्चों को भी नए भाई–बहनों के संग खेलने का अवसर मिलेगा। इधर जब पड़ोसियों को चिड़िया की मां बनने वाली बात मालूम हुई तो वे उसके मन में बच्चों के प्रति कटुता भरने लगे। चिड़ी को भी अपने होने वाले बच्चों की सुविधा में ये बच्चे रुकावट लगने लगे। अब वह हर दिन इन बच्चों को दूर करने की योजना बनाने लगी। इस कारण वह उदास रहने लगी। इधर बच्चों को भी मां का प्यार मिलना बंद हो गया। चिड़े को भी चिड़िया की उदासी अखरने लगी। पर वह इसका कारण समझ नहीं पाया।

आखिर वह दिन भी आ गया, जब चिड़िया ने चिड़े को अपनी योजना के अनुसार स्पष्ट कह दिया कि वह बच्चों को कहीं जंगल में छोड़ आए। चिड़े ने चिड़िया की कटुतापूर्ण बातें सुनी तो उसे बड़ा दुख हुआ। उसे अपनी पहली पत्नी की याद आई। कितना प्यार करती थी वह अपने बच्चों से।

इधर चिड़िया रोज ही बच्चों को लेकर अपने परिवार के सुखी वातावरण में जहर घोलने लगी। आखिर एक दिन चिड़िया ने चिड़े को धौंस दे डाली, 'यदि कल सुबह तक इन बच्चों को दूर जंगल में नहीं ले जाओगे तो मैं घर से सदा के लिए चली जाऊंगी।' चिड़िया की इस चेतावनी से चिड़ा मजबूर हो गया, अपने हाथों से अपना परिवार उजाड़ने को।

अगला दिन बच्चों के जीवन में भूचाल लाने वाला था। चिड़े ने तीनों बच्चों को जंगल के लिए यह कहकर अपने साथ कर लिया कि आज तुम्हें अच्छे स्वादिष्ट फल खाने को मिलेंगे। कई अद्‌भुत चीजें और बरसात का सुहावना मौसम देखने को मिलेगा।' बच्चों को क्या पता था कि जंगल जाने की खुशी उनके जीवन में एक अनचाहा दुख घोल देगी।

जंगल में कुछ छोटे–बड़े वृक्ष थे। जमीन पर दूर–दूर तक हरी और लंबी बेलें फैली पड़ीं थीं। पूरे वातावरण में हरियाली छाई हुई थी। यहां आकर बच्चे खुश हो गए। बच्चों को सघन पेड़ों की भूलभुलैया में दाना लेकर आने का बहाना बना, कभी नहीं लौटने के लिए चिड़ा उड़ चला।

बच्चों को पिता की प्रतीक्षा करते लंबा समय हो गया। इधर आंधी के साथ बारिश होने लगी और तेज आवाज के साथ बिजली कड़ने लगी। बच्चे इस वातावरण से डरने लगे। बच्चों को पास में एक अन्य विशाल छायादार वृक्ष मिल गया। तीनों भाई–बहन वहां सुरक्षित स्थान पर चले गए। कुछ राहत मिली। पर अब भी दोनों बहनें किसी अनहोनी से डर रही थीं। उन्हें अहसास था हम सब अब अकेले हैं। सब कुछ ठीक हो जाएगा का भरोसा देकर भाई ने उन्हें समझाया। दुखी होने से कुछ नहीं होगा। धीरज रखने से कोई अच्छा रास्ता निकलेगा। सुबह होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए, ताकि हम फिर से अपने भविष्य के सुनहरे सपनों को देख सकें।

> **अभी कुछ समय बीता था कि चिड़िया का पहली बार अपने बच्चों की मां बनने का वक्त आ गया। चिड़ा खुश होकर सोचने लगा कि बच्चों को भी नए भाई–बहनों के संग खेलने का अवसर मिलेगा। इधर जब पड़ोसियों को चिड़िया की मां बनने वाली बात मालूम हुई तो वे उसके मन में बच्चों के प्रति कटुता भरने लगे।**

सच में अगले दिन की सुबह उनके जीवन में खुशहाली बन कर आई। पास के नीम के पेड़ पर एक चिड़िया रहती थी। उसकी दृष्टि उन बच्चों पर पड़ी। उसे वे अपने बच्चों की तरह लगे। दो दिन पहले ही उसकी जिंदगी उजड़ गई थी। वह अपने बच्चों के लिए चुग्गा लेकर पहुंची थी तो देखा कि एक काला लंबा सांप उसके तीनों बच्चों को खा रहा था। वह चीं–चीं करते गहरा दुख प्रकट करती रही। आज वह अपने बच्चों की याद में निराश मन से बैठी हुई थी।

चिड़िया नीम के पेड़ से उड़कर सामने वाले पेड़ पर रह रहे तीनों बच्चों के पास जाकर बैठी। खूब सारा प्यार जताकर उनसे बात करने लगी। बच्चों ने चिड़िया को और चिड़िया ने बच्चों को अपने दुख दर्द वाली बात सुनाई। चिड़िया ने सहानुभूति प्रकट करते हुए उनके प्रति विश्वास भरा अपनापन जताया। उसने कहा, 'बच्चों! मैं भी अकेली रहती हूं। अब तुम मेरे साथ मेरे बच्चों की तरह रहो और मैं तुम्हारी मां की तरह।' चिड़िया की बात सुन बच्चे खुश होकर बोलने लगे 'हमारी मां! हमारी मां!' चिड़िया अपने साथ उन बच्चों को एक सुंदर बगीचे में ले गई। वहां खूबसूरत कई किस्म के रंग–बिरंगे फूल खिले हुए थे।

मां का प्यार पाकर धीरे–धीरे तीनों बच्चे बड़े हो रहे थे। वे मां के साथ आनंदमय जीवन जी कर थोड़ा–थोड़ा इधर–उधर उड़ने लगे थे। उनकी मां उन्हें उड़ना और मुसीबतों का सामना करना सिखा रही थी। बच्चे अब भी सोचते, अगर यह मां हमें नहीं मिलती तो हमारा क्या होता!

विचार : रिश्तों में न लाएं दरार

जनसत्ता सरोकार

पिछले दिनों अमेरिका की एक राजनीतिक तस्वीर ने ऐसी हलचल मचाई जिसे सामाजिक संदेश की तरह लेने की सलाह दी गई। अमेरिकी राजनीति के इस दृश्य को कुछ यूं बयां किया जा सकता है–

'जोरों पे सलीम अब के है नफरत का बहाव
जो बच के निकल आएगा तैराक वही है'

अमेरिकी शहर न्यूयार्क के मेयर के चुनाव के दौरान जोहरान ममदानी और डोनाल्ड ट्रंप के बीच कटुता ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी तरफ खींचा था। ममदानी ट्रंप को फासीवादी तो ट्रंप उन्हें जेहादी कह रहे थे। ट्रंप ने आगाह किया था कि ममदानी मेयर बने तो न्यूयार्क की फंडिंग रोकी जा सकती है। लेकिन पिछले दिनों दोनों नेताओं की मुलाकात के बाद ऐसा दृश्य बना जैसे कोई दादा जी अपने पोते की प्रशंसा कर रहे हों। ममदानी से मिलने के बाद ट्रंप ने कहा, हमने सोचा था कि हम सहमत नहीं होंगे, लेकिन हम बहुत से मुद्दे पर सहमत हुए। मैं बहुत आश्वस्त हूं कि वे अच्छा काम करेंगे।

ट्रंप ने कहा कि ममदानी के मेयर बनने पर वे न्यूयार्क लौटकर रहने में सहज रहेंगे। अभी तक

मार्गदर्शन

अमेरिकी राजनीति में न्यूयार्क बनाम राष्ट्रपति के जिस संभावित संघर्ष को देखा जा रहा था, लगता है कि फिलहाल वह टल गया है।

यह विशुद्ध राजनीतिक घटना एक बड़ा संदेश दे रही है। ट्रंप ने ममदानी का इसलिए समर्थन किया क्योंकि उन्हें अहसास हुआ कि ममदानी को संघीय निवेश की अच्छी समझ है। अमेरिका अभी कई मोर्चों पर वित्त प्रबंधन से जूझ रहा है, तो इससे अच्छा और क्या हो सकता था कि ट्रंप ने एक और संकट के आगे अपने अभिमान की दीवार को गिरने दिया। ममदानी युवा हैं, और उनमें पूरा आत्मविश्वास था कि वे न्यूयार्क के बेहतर प्रतिनिध के रूप में ही सामने आएंगे।

वैचारिक संघर्ष कभी यह नहीं कहता है कि हम अपनी शालीनता भूल जाएं। साथ ही, यह भूल जाएं कि हमारा उद्देश्य किया है। अपने विचारों पर टिके रह कर भी वैचारिक विरोधी का सम्मान किया जा सकता है। जब बात ही करने को राजी नहीं होंगे तो बात बनने की उम्मीद भी कैसे हो सकती है?

आज के समय में घोर राजनीतिक ध्रुवीकरण का असर निजी व पारिवारिक रिश्तों पर भी पड़ता है। हमारी विचारधारा इस बात पर निर्भर करती है कि हमें कैसा परिवेश मिला है। हमें शिक्षित करने वाले कौन लोग हैं, हमने किस तरह की किताबें पढ़ी हैं। मनुष्य जन्म के साथ ही कोई विचारधारा लेकर पैदा नहीं होता है। मनुष्य पैदा होता है, और उसकी विचारधारा का निर्माण होता है। अब अगर किसी पारिवारिक वाट्सएप समूह पर किसी राजनीतिक पोस्ट को देख कर आपका रक्तचाप बढ़ जाए और आप समूह से निकलने या कठोर भाषा इस्तेमाल करने की सोचें तो ममदानी– ट्रंप के ताजा रिश्ते को याद कर लें। इन दिनों राजनीतिक टकराव से दरार पड़े रिश्ते भी नई समस्या हैं। पहले भी ऐसे उदाहरण हैं जिसमें धुर राजनीतिक विरोधी भरत–मिलाप करते नजर आए हैं, ट्रंप–ममदानी की तस्वीर तो बस एक नया उदाहरण है।

गिल्लू की चहचहाती स्मृति

अमर किरदार

जनसत्ता सरोकार

'मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे–नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले–हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता। गर्मियों में जब मैं दुपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।'

ये पंक्तियां हिंदी साहित्य की 'महादेवी' की हैं, इन पंक्तियों का किरदार एक गिलहरी है। पशु–पक्षियों से मानव का प्रेम सभ्यता की शुरुआत से रहा है। इंसानों की एक प्रवृत्ति रही है कि वह अपने साथ रहने वाले पशु–पक्षी या अन्य जीव का मानवीकरण कर देता है। अगर ऐसा मानवीकरण छायावादी युग की लेखिका महादेवी करती हैं तो वह साहित्य का अमर किरदार बन जाता है। गिल्लू का गुस्सा, गिल्लू का इंतजार, महादेवी को खुश करने की कोशिशें, और अंतिम समय आने का अहसास। गिल्लू के इस मानवीकरण को दर्ज कर महादेवी ने साहित्य में शोकजनित स्नेहिल स्मृति को एक मुकाम दिया।

'गिल्लू' महादेवी वर्मा के निबंध संग्रह मेरा परिवार (1958) में संकलित आत्मकथात्मक निबंध है। गिल्लू के जरिए महादेवी वर्मा ने जीवन, मृत्यु, स्नेह और एकांत के द्वंद्वों को उतने ही सरल तरीके से रखा है, जितना सरल एक गिलहरी का जीवन होता है। गिलहरियों की कुल आयु लगभग दो वर्ष की होती है। कौवे की चोंच से घायल नवजात गिल्लू की सेवा–सुश्रुषा कर महादेवी ने उसे दो वर्ष का जीवन दिया। दो वर्ष के जीवन में गिल्लू ने महादेवी को जितना स्नेह दिया, उसकी मृत्यु के बाद उतना ही सूनापन भी लेखिका के हिस्से आया। हिंदी में मृत्यु और उसके बाद उपजे एकांत से जूझने वाली रचनाओं में 'गिल्लू' का अलग ही स्थान है।

> **पाठक का दिल रोने को होता है, तभी महादेवी सोनजुही पर आए बसंत को दिखाती हैं। गिल्लू के बाहर जाने के लिए बनाई खिड़की की जाली अब बंद है, लेकिन अब भी गिलहरियां खिड़की के पास आकर चीं–ची करती हैं।**

'लघुगात' गिल्लू से मिली वृहत्तर संवेदनाओं को शब्दों में उकेरना महादेवी के लिए कितना मुश्किल रहा होगा, यह अहसास हर उस पाठक को होता है, जो छोटे से निबंध को पढ़ते हुए कई बार रुक जाता है। छोटा सा गिल्लू पाठकों को अपनी निजी जिंदगी में मिले बिछोह के मुहाने पर बैठा देता है।

पाठक का दिल रोने को होता है, तभी महादेवी सोनजुही पर आए बसंत को दिखाती हैं। गिल्लू के बाहर जाने के लिए बनाई खिड़की की जाली अब बंद है, लेकिन अब भी गिलहरियां खिड़की के पास आकर चीं–ची करती हैं। सोनजुही की लता गिल्लू को बहुत पसंद थी, इसलिए उसी की जड़ की मिट्टी के पास गिल्लू को दफनाया गया। सोनजुही की हरितिमा में वह छुपने का खेल करता था। अब जब बसंत में सोनजुही की कली खिलती है, तब महादेवी वर्मा उसमें लघुप्राण को खोजती हैं। महादेवी लिखती हैं, 'उसकी स्मृति आज भी मेरे कमरे में चहचहाती फिरती है'। महादेवी ने इस स्नेहिल स्मृति को साहित्य के जरिए असंख्य घरों में पहुंचा दिया।

सिर में खुश्की रूसी की मुश्किल

अगर किसी के सिर में रूसी यानी डैंड्रफ है, तो यह कोई नई बात नहीं है। बहुत सारे लोगों के सिर में रूसी होती है और वे उसे लेकर सहज रहते हैं। हालांकि इससे छुटकारा सभी चाहते हैं। आमतौर पर गर्मी का मौसम हो, बरसात का या सर्दियों का, बालों में रूसी के समस्या बहुत परेशान करती है। मगर सर्दियों में कई लोगों के सिर में खुश्की इतनी बढ़ जाती है कि वे इसे लेकर असुविधा महसूस करने लगते हैं। इसकी जड़ें तो कई लापरवाहियों में बसती हैं, लेकिन मुख्य रूप से गलत खानपान, फंगल संक्रमण के चलते ज्यादातर लोग रूसी की समस्या से परेशान रहते हैं।

यों इस समस्या के ज्यादा जड़ पकड़ लेने और सार्वजनिक जीवन में दिक्कत होने पर किसी अच्छे चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए, लेकिन अगर सिर में ज्यादा रूसी हो रही हो, तो दवाइयों के बजाय कुछ घरेलू नुस्खे अपनाना भी बेहतर होता है। इससे एलोपैथिक दवाओं के दुष्परिणामों से बचा सकता है। दरअसल, एलोपैथिक दवाओं का उपयोग करने के बजाय अगर अपनी रसोई में मौजूद कुछ लाभकारी चीजों का इस्तेमाल किया जाए, तो रूसी छूमंतर हो जाएगी और उसके बाद बाल भी लंबे और मजबूत होने लगते हैं।

कारगर घरेलू नुस्खे

चार चम्मच खसखस दूध में पीस कर बालों की जड़ों में लगाएं। आधे घंटे बाद सिर धोएं। धोने में अच्छी गुणवत्ता वाले शैम्पू का इस्तेमाल करें। सप्ताह में दो बार इस तरह बाल धोया जाए, तो काफी हद तक रूसी से छुटकारा मिलता है। इसी तरह, एक बड़े ग्लास में पानी भर कर उसमें चार बड़े चम्मच बेसन घोल दिया जाए और बालों पर मलने के बाद कुछ देर छोड़ देना चाहिए। फिर शैंपू से सिर धो लेने से भी डैंड्रफ खत्म हो जाता है। एक उपाय छिलका सहित अरहर की दाल का उपयोग करना भी है। इस दाल को पानी में भिगो देना चाहिए। इसके बाद सुबह इसे पीसकर सिर में लगाने के आधे घंटे बाद सिर धोया जाए और गीले बालों में ही कंघी किया जाए, तो काफी बेहतर नतीजे मिलते हैं। इसी फार्मूले पर पांच चम्मच पिसे आंवले को रात को आधा कप पानी में भिगो कर सुबह इसी पानी से सिर धोया जाए, तो अच्छे नतीजे मिलते हैं।

कुछ अन्य तरीके

चुकंदर के पत्तों को पानी में उबालकर सिर धोने से भी रूसी दूर हो जाती है। सप्ताह में दो बार दही से बालों को धोना भी एक आसान उपाय है। इसके अलावा, नींबू में हल्का-सा बेसन और दही मिलाकर सिर पर लगाएं। एक अन्य उपाय के तहत नींबू में लहसुन का पेस्ट मिलाकर भी इस्तेमाल किया जा सकता है। रीठा को सिर के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। इससे सिर धोने पर भी डैंड्रफ से छुटकारा मिल जाता है। नारियल के तेल में कपूर मिलाएं और यह तेल अच्छी तरह बालों में तथा सिर पर लगाएं।

नहाने से पहले

भारतीय ग्रामीण समाजों में नहाने से पहले सिर में

नुस्खे

तेल लगाना एक आम चलन रहा है। बालों में तेल लगाने के बाद अच्छे से शैंपू किया जाए और उसके बाद किसी भी अच्छे माउथवाश को सिर पर लगाएं। पांच से दस मिनट लगाए रखने के बाद इसे पानी से धो लिया जाए, तो इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है। इसके अलावा, पानी में सिरका मिलाकर सिर को अच्छी तरह धोना चाहिए और इस उपाय को सप्ताह में दो बार करना चाहिए।

भविष्य की नींव

पुस्तक संस्कृति

शिवम भारद्वाज

समय के साथ हमारी पढ़ने की आदतें बदल रही हैं। एक दौर था जब किताबें ही ज्ञान, कल्पना और चिंतन का मुख्य स्रोत थीं। अब वही भूमिका स्मार्टफोन, टैबलेट, गूगल और एआइ उपकरणों ने ले ली है। सूचनाओं तक पहुंचना पहले से कहीं आसान हुआ है, पर इसी सुविधा ने गहराई से सोचने और समझने की क्षमता को चुनौती दी है। आज जब विद्यार्थी गूगल या एआइ आधारित उपकरणों की मदद से तुरंत उत्तर प्राप्त कर लेते हैं, तब सवाल करना, विषय को गहराई से समझना और उस पर चिंतन करना पीछे छूटता जा रहा है। ज्ञान का सतही उपभोग गहन अध्ययन के महत्त्व को कमजोर कर सकता है।

आज का जीवन तेज और सूचना-भरा है। हर चीज अब तेज हो गई है- खबरें, मनोरंजन, सीखना और पढ़ना भी। डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा और जानकारी दोनों को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, किसी भी विषय पर जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह बदलाव हमारी जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। यूनेस्को और ओईसीडी के अध्ययन बताते हैं कि इंटरनेट ने ज्ञान के प्रसार को पहले से कहीं अधिक व्यापक बना दिया है।

सूक्ष्म परतें

फिर भी शोध दर्शाते हैं कि स्क्रीन पर पढ़ना और कागज पर पढ़ना दो अलग अनुभव हैं। स्क्रीन मस्तिष्क को 'तेज प्रोसेसिंग मोड' में रखती है, जहां उद्देश्य केवल जानकारी छांटना होता है, उसे आत्मसात करना नहीं। परिणामस्वरूप, पूरी जानकारी या तर्क की सूक्ष्म परतें याद नहीं रहतीं और एकाग्रता बार-बार टूटती है। यही वह बिंदु है जहां किताबों की भूमिका और अहम हो जाती है। किताबें हमें धीमा करती हैं, ठहरना सिखाती हैं और अर्थ को आत्मसात करने का अभ्यास कराती हैं।

अधिकांश विद्यार्थी अब पूरा अध्याय या कहानी के बजाय केवल 'महत्त्वपूर्ण प्रश्न' या 'सारांश' पर निर्भर हो जाते हैं। संक्षिप्त नोट और 'पावर पाइंट स्लाइड' परीक्षा के लिए सुविधाजनक हो सकती हैं, लेकिन ये सोचने और विश्लेषण करने की क्षमता को कमजोर करती हैं। गहन अध्ययन की जगह केवल जानकारी का उपभोग हावी हो जाता है। ज्ञान तभी जीवित रहता है, जब उसे पढ़ने, समझने और तर्क करने की प्रक्रिया के साथ जोड़ा जाए। ऐसे में विद्यालयों में नियमित 'पठन सत्र' या पुस्तकालय सत्र भाषा कौशल, एकाग्रता और तर्कशक्ति बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

किताबें केवल सूचना नहीं देतीं, वे सोचने का तरीका सिखाती हैं। ये हमें गहराई से किसी और के दृष्टिकोण से दुनिया देखने की क्षमता देती हैं। शोध बताते हैं कि 'डीप लर्निंग' यानी गहराई से सीखने की कोशिश या प्रक्रिया मस्तिष्क के उन हिस्सों को सक्रिय करता है जो सहानुभूति, स्मृति और आलोचनात्मक सोच से जुड़े हैं। किताबें हमारी कल्पना, विवेक और संवाद की क्षमता को बढ़ाती हैं और हमें भावनात्मक और बौद्धिक दोनों स्तरों पर विकसित करती हैं।

तकनीक का उपयोग

तकनीक और किताबों को परस्पर विरोध में नहीं देखा जाना चाहिए। सही उपयोग से तकनीक किताबों तक पहुंच आसान बना सकती है। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, ई-पाठशाला और दीक्षा जैसे मंच लाखों पुस्तकों और शैक्षणिक संसाधनों को विद्यार्थियों तक पहुंचा रहे हैं। ई-पुस्तकें और श्रव्य पुस्तकें (आडियो बुक्स) पढ़ाई को कहीं भी, कभी भी संभव बना देती हैं। समस्या तब आती है जब तकनीक सोचने का विकल्प बन जाए। जब विद्यार्थी केवल एआई आधारित सारांश और गूगल से तुरंत उत्तर लेते हैं, तब ज्ञान सतही बन जाता है। तकनीक तभी सहायक है, जब वह जिज्ञासा और गहराई को बढ़ाए, न कि प्रतिस्थापित करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 ने शिक्षा में केवल याददाश्त नहीं, सीखने के परिणाम और अनुप्रयोग आधारित मूल्यांकन पर जोर दिया है। केवल जानकारी याद करना नहीं, उसे समझना और प्रयोग करना सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। ऐसे में 'ओपन बुक एक्जाम' या खुली किताबों के साथ परीक्षा जैसी पद्धति विद्यार्थियों को स्वाभाविक रूप से गहराई से पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है। एक पहलू यह भी है कि पढ़ाई की आदत घर से शुरू होती है। अगर परिवार में माता-पिता पढ़ते हैं, तो बच्चे भी स्वाभाविक रूप से प्रेरित होते हैं। बच्चों के साथ मिलकर पढ़ना, चाहे कहानी हो या समाचार, भाषा और तर्कशक्ति बढ़ाने में मदद करता है। सामाजिक पहल जैसे 'रोड लाइब्रेरी' और 'बुक्स कार्नर' भी दिखाती हैं कि किताबें जब आसपास हों, तो वे जीवन का हिस्सा बन जाती हैं।

> **किताबें** केवल सूचना नहीं देतीं, वे सोचने का तरीका सिखाती हैं। ये हमें गहराई से किसी और के दृष्टिकोण से दुनिया देखने की क्षमता देती हैं। शोध बताते हैं कि 'डीप लर्निंग' यानी गहराई से सीखने की कोशिश या प्रक्रिया मस्तिष्क के उन हिस्सों को सक्रिय करता है जो सहानुभूति, स्मृति और आलोचनात्मक सोच से जुड़े हैं।

गहराई का तकाजा

आज सूचना की कमी नहीं, गहराई की कमी है। सामाजिक संचार, वेबसाइटें और एआइ उपकरण व्यापक जानकारी देते हैं, लेकिन किताबें उस जानकारी को समझने और आत्मसात करने में मदद करती हैं। तकनीक हमें तेज बनाती है, किताबें हमें गहरा बनाती हैं।

किताबें यह सिखाती हैं कि प्रश्न करना क्यों जरूरी है, असहमति को कैसे समझना है और स्वतंत्र रूप से सोचना कैसे सीखना है। यही संतुलन—तकनीक और किताबों के बीच—हमारी पढ़ाई और जीवन की समझ का आधार है। किताबें केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, वे भविष्य की समझ की नींव हैं। और इस तेज-रफ्तार युग में शायद यही धीमापन हमें सच्चे अर्थों में शिक्षित बनाए रखेगा।

व्यर्थ के विचारों का बढ़ता घेरा

बदलते वक्त के साथ हमारे विचारों की दुनिया भी बदल रही है। सकारात्मक सोच कम और व्यर्थ के विचारों का प्रवाह बढ़ता जा रहा है, जो हमें दिशाहीन कर लक्ष्य से भटकाने का काम करता है। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि हमारे विचारों का मकसद एक अच्छा, सभ्य ,सुसंस्कृत और सफल व्यक्तित्व हासिल करना होना चाहिए, न कि ईर्ष्या, द्वेष या किसी को शारीरिक या भावनात्मक नुकसान पहुंचाने का। हमारे मन में कई प्रकार के विचार आते हैं। इस उलझन में कई बार हम जीवन के असली अर्थ को भी खो देते हैं। व्यर्थ के विचार तब पनपते हैं, जब हमारे पास करने को कुछ नहीं होता। इसलिए खाली समय में हमें खुद को ऐसे कार्यों में व्यस्त रखना चाहिए, जो हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा को भरने में मदद करे।

जीवन शैली

विचारों का महत्व

मन चंचल होता है और इसमें विचारों का प्रवाह लगातार चलता रहता है। इनमें आवश्यक विचार, सकारात्मक विचार, नकारात्मक विचार और व्यर्थ के विचार हो सकते हैं। आवश्यक विचार वे होते हैं, जो हमारी दिनचर्या से जुड़े होते हैं। ये हमारी जिम्मेदारियों और जरूरतों के अनुसार, निजी या व्यावसायिक स्तर पर मन में आते हैं। मगर जब इन विचारों को बार-बार दोहराया जाता है, तो ये व्यर्थ के विचार बन जाते हैं। इसी तरह सकारात्मक वे विचार हैं, जो हमें शांति, प्रेम, आनंद, पवित्रता और शक्ति जैसे हमारे मूल गुणों का अनुभव कराते हैं। जबकि नकारात्मक विचार शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की समस्याएं पैदा कर सकते हैं। इसी तरह व्यर्थ के विचार समय की बर्बादी के साथ हमारे भीतर चिंता और बेचैनी भर देते हैं।

रचनात्मक उपयोग

व्यर्थ के विचार बार-बार आने से हमारी एकाग्रता और आंतरिक शक्ति कमजोर होती है तथा हम अपने कार्य को संपन्न करने में अधिक ऊर्जा और समय लगाते हैं। नकारात्मकता की जड़ भी इन्हीं विचारों में छिपी होती हैं। मन में ऐसे विचारों का सृजन आवश्यक है, जिनका रचनात्मक उपयोग हमारे कौशल को निखारे। इससे न केवल निर्णय लेने की क्षमता बेहतर होती है, बल्कि लक्ष्य को हासिल करना भी आसान हो जाता है।

विकल्प पर ध्यान

नकारात्मक विचार असंतुष्ट उम्मीदों, असहमति, आलस्य, बदला, जातिवाद, ईर्ष्या,

> ***मन** चंचल होता है और इसमें विचारों का प्रवाह लगातार चलता रहता है। इनमें आवश्यक विचार, सकारात्मक विचार, नकारात्मक विचार और व्यर्थ के विचार हो सकते हैं।*

आलोचना, घृणा और अधिक शक्ति से उत्पन्न होते हैं। इनसे हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी विपरीत असर पड़ता है। वहीं व्यर्थ के विचारों में भी सिर्फ वक्त और ऊर्जा की बर्बादी होती है, क्योंकि इनका हमारे जीवन में कोई उपयोग नहीं होता है। इस तरह के विचारों से बचने के लिए स्वयं को समुचित रूप से सकारात्मक कार्यों में व्यस्त रखने का विकल्प चुनना महत्त्वपूर्ण है।

कई लोग पुरानी गलतियों पर बार-बार अफसोस कर उस बारे में सोचते रहते हैं। जबकि हमें भूतकाल में नहीं, बल्कि वर्तमान में जीना सीखना चाहिए। पुरानी गलतियों से प्रेरणा लेकर नई राह पर आगे बढ़ने का प्रयास ही मंजिल तक पहुंचा सकता है।

प्रदूषण की मार सांसों पर आफत

यह मौसम ठंड की शुरुआत है, लेकिन इस दौरान पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह की समस्या खड़ी हो रही है, वह अब एक राष्ट्रीय चिंता का विषय बन चुकी है। यह समस्या है- प्रदूषण। हालत यह है कि ज्यादातर लोगों के सामने सुरक्षित सांस लेना भी एक चुनौती बन जाती है और रोज वे सांसों की समस्या से दो-चार होते हैं। दरअसल, इस मौसम में हवा के घनीभूत होने की वजह से प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है और वायु में मौजूद प्रदूषक तत्त्वों के कारण श्वास नली में सिकुड़न आ जाती है। इसके बाद व्यक्ति खांसी, घरघराहट और सांस लेने में तकलीफ के दौर से गुजरने लगता है। कई बार तो समय पर समस्या के कारण की पहचान नहीं हो पाने की वजह से यह परेशानी जटिल हो जाती है।

सेहत

पहचान का वक्त

प्रदूषण की वजह से व्यक्ति के फेफड़े प्रभावित हैं या नहीं, यह तय करने के लिए सबसे पहले तो सांस लेने में दिक्कत की पहचान खुद के स्तर पर करनी पड़ती है। अगर असहजता होती है, तब चिकित्सक के पास जाकर जांच कराना सबसे प्राथमिक काम होना चाहिए। आमतौर पर फेफड़ों के प्रभावित होने के बारे में स्पष्टता के लिए चिकित्सक पल्मोनरी फंक्शन जांच करते हैं। इससे पता चल पाता है कि फेफड़ों में दिक्कत की वजह से सांस लेने की प्रक्रिया बाधित हो रही है या नहीं। इसके बाद ही लक्षणों के उपचार की प्रक्रिया शुरू की जाती है।

हवा की मुश्किल

यह एक आम हकीकत है कि आज वायु प्रदूषण कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का जनक हो चुका है। सबसे ज्यादा यह फेफड़ों के सामान्य तरीके से काम करने की स्थितियों को प्रभावित कर सकता है। इसमें खासतौर पर अस्थमा से पहले से परेशान लोगों के सामने दिक्कत ज्यादा जटिल हो जा सकती है, क्योंकि प्रदूषण का स्तर अस्थमा और सीओपीडी को बढ़ा सकता है और श्वसन तंत्र के संक्रमण और फेफड़ों की समस्या को और जटिल कर सकता है। कई बार चिकित्सक कैंसर तक की आशंका जताते हैं। वायु प्रदूषण से दिल के दौरे का खतरा भी बढ़ता है, इससे कोरोनरी धमनी रोग और आघात होता है। वाहनों की ज्यादा आवाजाही वाले इलाकों में रहने वाले लोगों में वायु प्रदूषण संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं का जोखिम ज्यादा होता है। वायु प्रदूषण के संपर्क में ज्यादा वक्त रहने से सांस लेने में परेशानी, छाती में दर्द और श्वसन तंत्र की अतिसंवेदनशीलता देखी जा सकती है। जो बच्चे ओजोन प्रदूषण वाले दिनों में बाहरी गतिविधियों में ज्यादा हिस्सा लेते हैं, उन्हें अस्थमा होने की आशंका ज्यादा होती है।

कारणों का दायरा

घर के अंदर वायु प्रदूषण में बाहरी वायु प्रदूषण का बड़ा योगदान है। इसके अलावा, घर के अंदर वायु प्रदूषण के स्रोतों में तंबाकू का धुआं, घर के अंदर खाना पकाना (गैस स्टोव सहित), निर्माण कार्य भी शामिल हैं। खाना पकाने और गर्म करने के लिए बायोमास ईंधन, यानी लकड़ी, अपशिष्ट या पराली आदि जलाना प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत है, जो सांस की समस्याएं पैदा करता है।

उपचार की राह

जोखिम को कम करने पर जोर देने के अलावा, लक्षणों से राहत के लिए उपचार के क्रम में अस्थमा के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाइयां (जैसे ब्रोंकोडाइलेटर्स, जो वायुमार्ग को खोलती हैं) कुछ राहत दे सकती हैं। इससे श्वास नली खुल सकती है और राहत मिलती है। जोखिम को कम करने के लिए बाहरी वायु प्रदूषकों के संपर्क को रोकना या कम करना जरूरी है। खास कर हृदय या फेफड़ों के विकारों से पीड़ित लोग प्रदूषण के दिनों में बाहरी गतिविधियों को नियंत्रित कर सकते हैं। जब हवा की गुणवत्ता खराब हो, तो बाहरी व्यायाम को कम करना चाहिए और घर के अंदर रहना चाहिए। धूम्रपान और खाना पकाने जैसे स्रोतों के संपर्क को कम करना भी जरूरी है।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

खुशबू ऐसी जो मन को ललचाए

रसोई

पंजाबी कढ़ी पकौड़ा

देश के विभिन्न हिस्सों में कढ़ी कई प्रकार से बनाई जाती है। मगर पंजाबी कढ़ी अन्य क्षेत्रीय कढ़ी से अलग होती है। यह ज्यादा गाढ़ी और मलाईदार होती है, जबकि अन्य कढ़ी थोड़ी पतली होती हैं। इसमें मसालों का मिश्रण भी अलग तरह का होता है। पकौड़े बनाने और दही में अलग-अलग मसालों का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे इसका स्वाद भी लाजवाब होता है। उत्तर भारत में इसे काफी पसंद किया जाता है।

सामग्री

दही: 250-350 ग्राम, बेसन: 100-150 ग्राम, हल्दी: एक चम्मच, गरम मसाला पाउडर: एक चम्मच, लाल मिर्च पाउडर: आधा चम्मच, प्याज: तीन, अजवाइन: एक चम्मच, हींग: एक चुटकी, नमक: स्वादानुसार

विधि

एक कटोरे में दही लें और इसे अच्छी तरह फेंटें, जब तक यह चिकना न हो जाए। फिर इसमें बेसन, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी, गरम मसाला पाउडर और नमक मिलाएं। इसके बाद थोड़ा सा पानी डालकर इसे अच्छी तरह हिलाएं, ताकि कोई गांठ न रहे। इस बीच, एक कटोरे में पतले कटे हुए प्याज के टुकड़े डालें। उसमें अजवाइन, गरम मसाला, लाल मिर्च, बेसन और नमक मिलाकर थोड़ी देर के लिए छोड़ दें। फिर आवश्यकतानुसार पानी डालकर गाढ़ा घोल बनाएं। इसके बाद पकौड़े बनाने के लिए एक कड़ाही में तेल गरम करें और प्याज एवं बेसन के मिश्रण के छोटे-छोटे गोले बनाकर इन्हें कुरकुरा और सुनहरा होने तक तलें।

फिर उसी कड़ाही में सरसों का तेल गरम करके उसमें जीरा, मेथी दाने और एक चुटकी हींग भून लें। इसके बाद कटा हुआ प्याज, अदरक, कढ़ी पत्ता और हरी मिर्च उसमें डाल कर हल्का सा भूनें। फिर दही का घोल इसमें डाल दें और मध्यम आंच पर दस से पंद्रह मिनट तक पकाएं। इसके उपरांत प्याज के पकौड़े इसमें डाल दें और पांच मिनट तक पकाने पर पंजाबी पकौड़ा कढ़ी तैयार हो जाएगी।

मेथी मटर मलाई

सर्दी के मौसम में मेथी के पत्तों और हरे मटर के संयोजन से तैयार व्यंजन अमूमन हर घर में पसंद किया जाता है। इन दोनों की खुशबू और स्वाद जब क्रीम के साथ मिलते हैं तो वह शाही व्यंजन जैसा लगता है। इसे खास मौकों पर घर में आसानी से बनाया जा सकता है। इसकी खुशबू और जायका बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को पसंद आता है।

सामग्री

ताजी मेथी के पत्ते: 250 ग्राम, हरे मटर: 100-150 ग्राम, प्याज: एक, अदरक-लहसुन का पेस्ट: दो चम्मच, काजू: 8-10, मलाई: डेढ़ कप, दूध: आधा कप, जीरा: एक चम्मच, हल्दी आधा चम्म्च, गरम मसाला पाउडर: एक चम्मच, नमक-मिर्च स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले काजू को आधे घंटे के लिए पानी में भिगो लें। फिर थोड़ा दूध डालकर मिक्सी में इनका पेस्ट बनाएं। इसके बाद एक कड़ाही में सरसों का तेल या देसी घी डालें और उसमें कटे हुए मेथी के पत्ते डालकर दो-तीन मिनट तक भूनें, इससे मेथी की हल्की कड़वाहट खत्म हो जाएगी। अब उसी कड़ाही में और तेल डालकर उसमें जीरा, प्याज, अदरक-लहसुन का पेस्ट तथा हरी मिर्च को भून लें। फिर इसमें काजू का पेस्ट डालें और धीमी आंच पर दो-तीन मिनट पकाएं। इसके बाद हल्दी, धनिया पाउडर, नमक और गरम मसाला इसमें डालें। अब इसमें दूध तथा मलाई डालें और थोड़ी देर लगातार चम्मच से चलाते रहें। फिर इसमें पहले से भुने हुए मेथी पत्ते और उबले मटर डाल दें। इसे पांच-सात मिनट तक धीमी आंच पर पकने दें। अब मेथी मटर मलाई तैयार है, इसके ऊपर से थोड़ा सा क्रीम और हरा धनिया डालकर इसे चावल या रोटी के साथ परोसें।

किसी को खुशी देने का सबसे अच्छा तरीका है- पहले खुद खुश होकर दिखाएं।
- मार्क ट्वेन, अमेरिकी लेखक

देश का नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर
SUNDAY PREMIUM

नई दिल्ली
रविवार, 30 नवंबर 2025
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष दशमी-2082

12 राज्य | 61 संस्करण

भास्कर ग्राउंड रिपोर्ट हैदराबाद को आईटी हब के रूप में चमका चुके सीएम नायडू का नया विजन

विशाखापत्तनम बन रही देश की एआई राजधानी... सालाना दो लाख को जॉब्स

अनिरुद्ध शर्मा | विशाखापत्तनम से

आंध्रप्रदेश का विशाखापत्तनम शहर अब देश की नई एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) राजधानी के रूप में आकार ले रहा है। आंध्र के सीएम चंद्रबाबू नायडू वही इतिहास दोहराने की कोशिश में हैं जैसा उन्होंने 1990 के दशक में किया था। तब उनके सीएम रहते हैदराबाद में माइक्रोसॉफ्ट ने अमेरिका के बाहर सबसे बड़ा सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट सेंटर स्थापित किया। हैदराबाद देश का बड़ा आईटी हब बना। एआई सिटी वाइजैग की परिकल्पना सामने आने के कुछ महीने बाद ही गूगल, मेटा, सिफी, रिलायंस, अदाणी, ब्रुकफील्ड, एयरटेल जैसी दिग्गज कंपनियों ने यहां एआई डेटा सेंटर और केबल लैंडिंग से जुड़े नए प्रोजेक्ट के करार किए हैं। राज्य सरकार और इन कंपनियों में लगभग 2.32 लाख करोड़ रुपए (26 अरब डॉलर) से ज्यादा के निवेश के करार हो चुके हैं। 2030 के बाद यहां से हर साल लगभग 2 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा।

विशाखापत्तनम में 2.5 गीगावाट स्केल के एआई डेटा सेंटर स्थापित होंगे। यह कितनी बड़ी बात है इसे ऐसे समझें कि देश में मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे सरीखे प्रमुख स्थानों की कुल मौजूदा ऑपरेशनल डेटा क्षमता 1.8 गीगावाट है। अकेले विशाखापत्तनम में पहले फेज में ही 2.5 गीगावाट के एआई डेटा सेंटर स्थापित होंगे। आंध्र के आईटी मंत्री नारा लोकेश कहते हैं कि सरकार का लक्ष्य 6 गीगावाट स्केल का एआई डेटा सेंटर क्लस्टर विकसित करने का है। 2030 के बाद प्रोजेक्ट के दूसरे फेज पर काम होगा। विशाखापत्तनम एशिया के सबसे बड़े एआई क्लस्टर में से एक होने वाला है।

रियल एस्टेट... लग्जरी होम, मल्टी स्टोरी टाउनशिप के लिए 'कमिंग सून' वाले होर्डिंग्स भी लग रहे हैं

विशाखापत्तनम में एक कंस्ट्रक्शन साइट।

चेन्नई-कोलकाता हाईवे और सीबीच रोड पर रियल एस्टेट कंपनियों के होर्डिंग नजर आते हैं। इनमें मधुरवाड़ा, रुषिकोंडा और भीमली में लग्जरी लिविंग होम, गेटेड कम्युनिटी और मल्टी स्टोरी टाउनशिप 'कमिंग सून' लिखा है। बीच रोड, सी-हिल में कैफे, नए रिटेल जोन व प्रीमियम मॉल बनेंगे। लोकल ब्रोकर्स से अपार्टमेंट्स की पूछताछ भी बढ़ी है।

▪ लुलु मॉल और इनऑर्बिट मॉल भी बनेंगे। आंध्र प्रदेश सरकार ने राहेजा कॉर्प के 2000 करोड़ से ज्यादा के रियल एस्टेट प्रोजेक्ट और एएनएसआर ग्लोबल के 1000 करोड़ रुपए के ग्लोबल इनोवेशन सिटी प्रोजेक्ट को मंजूरी दी है।

अमेरिका के बाहर गूगल का यहां सबसे बड़ा निवेश

गूगल... विशाखापत्तनम में 500 एकड़ में एक गीगावाट का एआई डेटा सेंटर बनेगा। केबल लैंडिंग स्टेशन के लिए अदाणी और एयरटेल के साथ 15 अरब डॉलर का निवेश होगा। यह गूगल का अमेरिका के बाहर सबसे बड़ा निवेश है। अदाणी ग्रीन एनर्जी कंपनी इको सिस्टम पार्टनर होगी, जबकि एयरटेल कंपनी फाइबर नेटवर्किंग में साझेदार होगी।

▪ विशाखापत्तनम गूगल के इंटरनेशनल सब-सी गेटवे का लैंडिंग स्टेशन होगा। ये गूगल के मौजूदा 32 लाख किमी केबल नेटवर्क को जोड़ेगा। अभी देश में मुंबई और चेन्नई में ही सब-सी लैंडिंग स्टेशन हैं। यह सब-सी केबल 4 महाद्वीपों से होकर गुजरेगी।

मेटा... 500 मेगावाट का आर्टिफिशियल डेटा सेंटर स्थापित करेगी। सिफी मेटा के लिए विशाखापत्तनम में 15 हजार करोड़ रुपए से अधिक का निवेश करेगी। **टीसीएस...** एक गीगावाट का सेंटर बनाएगा। अमेजन और ओपनएआई भी एआई डेटा सेंटर बना रहे हैं।

▪ रिलायंस, ब्रुकफील्ड और डिजिटल रियलिटी का ज्वाइंट वेंचर भी 11 अरब डॉलर के निवेश से एक गीगावाट का एडवांस एआई डेटा सेंटर बनाएगा।

▪ अगले पांच साल में इस एआई सिटी में डेटा, क्लाउड, एआई, केबल नेटवर्किंग और हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग मल्टीलेयर डिजिटल इकोसिस्टम बन जाएगा। यहां की पावर सप्लाई पूरी तरह से क्लीन एनर्जी आधारित होगी।

सरकार की तैयारी...

सालाना 60 लाख यात्री क्षमता वाला एयरपोर्ट

▪ भोगपुरा में नया एयरपोर्ट अगले साल जून तक बनकर तैयार होगा। सालाना क्षमता 60 लाख यात्रियों की होगी।

▪ यहां करीब 42 किलोमीटर की दूरी में बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम बनाए जाने की योजना है। वाइजैग मेट्रो की भी योजना बनाई गई है। इसके लिए करीब 46 किलोमीटर में तीन मेट्रो ट्रैक के कॉरिडोर बनाए जाने प्रस्तावित हैं।

▪ विशाखापत्तनम में एआई यूनिवर्सिटी भी खुलेगी। डीप टेक, बिग डेटा रिसर्च एंड डेवलपमेंट के विशेष कोर्स होंगे।

दुनिया के 4 मॉडल पर 'एआई सिटी वाइजैग'

आंध्र प्रदेश सरकार का दावा है कि एआई सिटी वाइजैग को दुनिया के 4 बेस्ट मॉडल पर बनाया जाएगा। सिंगापुर की कनेक्टिविटी क्षमता, जापान की क्लीन एनर्जी योजना, यूएई के नियामकीय ढांचे और अमेरिकी टेक सिटी के डेटा सेंटर स्केलेबिलिटी मॉडल को आधार बनाया गया है।

टेक ट्रायएंगल... इंटरनेट की स्पीड में तेजी आएगी, 11 राज्यों को सीधा फायदा

विशाखापत्तनम में विकसित हो रहे एआई हब का सीधे तौर पर पूर्वी भारत और पूर्वोत्तर भारत के राज्यों ओडिशा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार, असम, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश व मणिपुर को फायदा मिलेगा। खास तौर पर कोलकाता, भुवनेश्वर, रांची, गुवाहाटी, डिब्रूगढ़, शिलांग के डेटा रूट विजाग से होकर गुजरने लगेंगे जिससे इंटरनेट स्पीड तेज होगी। इंटरनेट डेटा की लेटेंसी (धीमी स्पीड) खत्म होगी और क्लाउड एक्सेस बढ़ेगा।

▪ वर्तमान में मुंबई और चेन्नई के बाद विशाखापत्तनम में मेगा डेटा सेंटर विकसित होने से देश में एआई का नया 'टेक ट्रायएंगल' बनकर सामने आएगा।

104 स्काइडाइवर्स ने 12 हजार फीट पर बनाया 25 मंजिला 'स्टारबर्स्ट'

संडे फोटो स्टोरी

भास्कर न्यूज़. लेक वेल्स | फ्लोरिडा के लेक वेल्स में 104 प्रोफेशनल स्काइडाइवर्स ने पैराशूट्स जोड़कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। इसमें 19 देशों के प्रतिभागी थे। इसे देखकर लगा मानो आसमान में 25 मंजिला इमारत बन गई हो। इस रिकॉर्ड को 'कैनोपी रिलेटिव वर्क' यानी सीआरडब्ल्यू कहा जाता है। इस बार स्काइडाइवर्स ने एक विशाल और जटिल स्टारबर्स्ट पैटर्न बनाया। इससे पहले 100 स्काइडाइवर्स की सीआरडब्ल्यू फॉर्मेशन का रिकॉर्ड था, जो 18 साल पहले बना था।

स्टारबर्स्ट इफेक्ट... 36 स्काइडाइवर्स 'वाल्किरी' पैराशूट के साथ बेस बनाते हैं। बाकी स्काइडाइवर्स अलग-अलग एयरक्राफ्ट से आकर इस फॉर्मेशन में अपनी तय जगह से जुड़ते हैं। जैसे-जैसे लेयर्स बढ़ती हैं, पैटर्न किरणों जैसा फैलने लगता है।

ब्रिटेन पूर्व पीएम यूनिवर्सिटी में स्टार स्पीकर

सियासत से दूर ऋषि, लेक्चर से एक घंटे में सवा करोड़ कमा रहे

लंदन से भास्कर संवाददाता
दानिश खान

ब्रिटेन के पूर्व पीएम भारतवंशी ऋषि सुनक अब सक्रिय राजनीति से ऊब रहे हैं। पिछले साल उनकी कंजरवेटिव पार्टी की करारी हार के बाद सुनक ने नेता पद छोड़ दिया।

अब वे रिचमंड से सांसद जरूर है, लेकिन संसद में कम ही दिखाई देते हैं। सुनक को सेमिनार और प्रोग्राम में स्टार स्पीकर का रोल ज्यादा भा रहा है। पब्लिक पॉलिसी और इंटरनेशनल पॉलिटिक्स पर करीब 2 घंटे के भाषण के ढाई करोड़ रु. तक कमा रहे हैं। सुनक हाल में कैलिफोर्निया और सोल यूनिवर्सिटी में भी स्टार स्पीकर के रूप में कार्यक्रमों में शामिल हुए। पूर्व राज्य प्रमुखों में सुनक अब अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति ओबामा के समान फीस ले रहे हैं।

एआई एक्सपर्ट... माइक्रोसॉफ्ट के सलाहकार का रोल निभा रहे

ऋषि सुनक गोल्डमैन साक्स जैसी नामचीन फाइनेंस कंपनियों में भी रह चुके हैं। उन्होंने अपना फाइनेंस कॅरिअर इसी कंपनी से शुरू किया था। लेकिन अब पूर्व पीएम सुनक ने माइक्रोसॉफ्ट में टेक और एआई स्ट्रैटेजी के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में नई पारी भी शुरू की है। ये खास दिलचस्प है। सुनक एआई कंपनी एंथ्रोपिक के लिए भी काम कर रहे हैं। ब्रिटेन के किसी पूर्व पीएम का एआई कंपनी में काम करने का ये पहला उदाहरण है। बता दें कि पीएम रहते हुए सुनक एआई सेफ्टी और एआई को रेग्युलराइज करने पर काफी मुखर रहते थे।

पूर्व पीएम जॉनसन और लिज ट्रस अब भी पार्टी व राजनीति से जुड़े

सुनक की कंजरवेटिव पार्टी से ब्रिटेन के हालिया पीएम रहे बोरिस जॉनसन, लिज ट्रस और थेरेसा मे अब भी पार्टी गतिविधियों और सक्रिय राजनीति से जुड़े हुए हैं।

▪ ब्रिटेन में 27 नवंबर को ही लेबर पार्टी के पीएम स्टारमर ने बजट पेश किया, लेकिन सुनक संसद में मौजूद नहीं रहे, जबकि सुनक वित्त मंत्री भी रह चुके हैं।

भास्कर एक्सक्लूसिव इंजेक्शन बिना वर्कआउट नहीं कर पाते

कुत्ते-घोड़े के इंजेक्शन से मसल्स बना रहे, 2 साल में ऑर्गन खराब

रागिनी कौशल | लुधियाना

जिम जाने वाले युवा मनचाही बॉडी पाने के लिए गाय, भैंस, घोड़े और कुत्तों के हार्मोन इंजेक्शन प्रयोग कर रहे हैं। इससे अंग भी खराब हो रहे हैं। इंजेक्शन इस्तेमाल कर चुके एक व्यक्ति ने बताया कि इनकी लत लग जाती है। उसके बाद बिना इंजेक्शन वर्कआउट करना मुश्किल हो जाता है।

सप्लीमेंट बेचने वाले मोनोफॉस्फेट इंजेक्शन बिना अनुमति बेच रहे हैं। एक वॉयल 8000-10000 तक में देते हैं। इंजेक्शन्स पर साफ लिखा है कि ये गाय, भैंस, कुत्ते जैसे जानवरों के लिए दिल की नसें खोलने और रक्त प्रवाह बढ़ाने में मददगार हैं। असिस्टेंट कमिश्नर (ड्रग्स) अमित दुग्गल ने कहा कि इन मामलों की जांच करवाएंगे। स्वास्थ्य मंत्रालय ने 2024 में 156 से ज्यादा दवाइयों और इनके कॉम्बिनेशन बेचने पर पाबंदी लगाई थी। इसमें एडेनोसाइन ड्रग भी शामिल है। सप्लीमेंट बेचने वाले इसे सरेआम बेच रहे हैं। कानूनन इन्हें पशु दवा विक्रेता ही बेच सकते हैं।

3 हजार की जगह 10 हजार तक वसूल रहे

केस-1 • 22 साल की उम्र में ही शुरू हो गया डायलिसिस

19 की उम्र में लड़के ने जिम में जाना शुरू किया। वहां उसे एएमपी इंजेक्शन के बारे में पता चला। वह बिना किसी सलाह के इंजेक्शन लेने लगा। 22 साल की उम्र में उसका क्रेटानीन लेवल 6 आया। अगली जांच में पता चला कि किडनी डैमेज हो चुकी है। तुरंत डायलिसिस की शुरुआत हुई।

केस-2 • लत ऐसी कि गहने ही लेकर खरीदने पहुंच गया

35 साल के शख्स को इंजेक्शन लेकर बॉडी बनाने की लत लग गई। पहले तो बचत से इंजेक्शन लेता रहा। फिर घर के गहने लेकर दुकान पर पहुंच गया। दोस्तों ने समझाया, परिवार के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया। इंजेक्शन के सेहत पर पड़ने वाले नुकसान के बारे में लगातार काउंसलिंग की और इसे कंट्रोल किया।

भास्कर एक्सपर्ट डॉ. गौरव सचदेवा, मेडिसिन स्पेशलिस्ट

ये इंजेक्शन युवाओं में नपुंसकता बढ़ा रहे

कई बॉडी बिल्डर सिर्फ एक नहीं, बल्कि दो-तीन स्टेरॉइड का कॉम्बिनेशन लेते हैं। मिर्गी के दौरे, ऑर्गन डैमेज के केस भी काफी आते हैं। हालांकि, पहली बार में मरीज नहीं बताते कि वो यह इंजेक्शन ले रहे हैं। लेकिन हिस्ट्री लेने पर और आगे की जांच में पता चलता है कि वो यह इंजेक्शन व स्टेरॉइड ले रहे हैं। जो युवा यह इंजेक्शन लगाते हैं उनके एसजीओटी, एसजीपीटी बढ़े होते हैं। ये इंजेक्शन लेने वाले युवाओं में नपुंसकता तेजी से बढ़ रही है। किडनी, लिवर डैमेज के अलावा हार्ट अटैक में भी तेजी आई है।

चिंता जेटब्लू की उड़ान 7 सेकंड तक नीचे झुकी रही

एयरबस सोलर रेडिएशन संकट, 6 हजार से ज्यादा विमान प्रभावित हुए

भारत में 338 विमान, इनमें 270 अपडेट हुए

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

सोलर रेडिएशन के कारण एयरबस ए-320 फैमिली के फ्लाइट-कंट्रोल सिस्टम में आई खामी से हड़कंप मच गया। दुनिया में करीब 6000 ए-320 जेट इस खामी के दायरे में आए। इनमें सुधार प्रक्रिया जारी है।

भारत में इस श्रेणी के 338 विमान हैं। डीजीसीए के मुताबिक शनिवार शाम 5:30 बजे तक इनमें से 270 का अपडेशन पूरा कर लिया गया। इससे कुछ रूट पर उड़ानों में 60-90 मिनट की देरी हुई। एअर इंडिया एक्सप्रेस की 4 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं।

▪ यह खामी 30 अक्टूबर को सामने आई। तब मैक्सिको से न्यू जर्सी जा रही जेटब्लू की ए-320 फ्लाइट उड़ान के दौरान 7 सेकंड तक नीचे झुक गई। विमान ऑटोपायलट मोड में था, मौसम शांत था। इसके 15 यात्री घायल हुए। इसके बाद मामले की जांच हुई। पूर्व पायलट एहसान खालिद ने कहा, 35,000 फीट ऊंचाई पर हादसा टल गया। ये टेकऑफ के वक्त होता तो अहमदाबाद क्रैश जैसा जोखिम था।

▪ जापान में 65 घरेलू उड़ानें रद्द। अमेरिका में 209 विमान प्रभावित।

जानिए गड़बड़ी क्या थी और खतरा क्या था?

ए-320 फैमिली में लगा एलिवेटर-एइलरॉन कंप्यूटर गलत डेटा पढ़ सकता था। इसे 'बिट-फ्लिप एरर' कहा जाता है। सोलर रेडिएशन इलेक्ट्रॉनिक चिप डेटा पलट देता है- '0' को '1' या '1' को '0' कर सकता है। ऐसी गड़बड़ी फ्लाइट-कंट्रोल तक गलत संकेत पहुंचा सकती है, जो हादसे का कारण बन सकती विमान नीचे झुक सकता था, दाएं-बाएं जा सकता था या ऑटोपायलट गलत दिशा पकड़ सकता था।

देश में अपडेशन की ताजा स्थिति...

▪ **इंडिगो:** 200 में 160 अपडेट
▪ **एयर इंडिया:** 113 में 42 अपडेट
▪ **एआई एक्सप्रेस:** 25 में 4 अपडेट

संडे एंकर विमंस प्रीमियर लीग और वर्ल्ड कप जीत ने भारतीय महिला प्लेयर्स को दी नई पहचान, यह अब 'सबसे बड़ी एसेट'

दर्शक 3 गुना, महिला क्रिकेटर्स की वैल्यू 50% बढ़ी; पुरुषों वाले विज्ञापन मिल रहे

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

भारत की विश्व कप विजेता महिला क्रिकेट टीम जिस ऊंचाई पर खड़ी है, वह कभी असंभव लगती थी। पर विश्व कप जीत, 2017 का ऐतिहासिक सफर और विमंस प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) ने तस्वीर बदल दी। 2023 में शुरू हुई इस लीग ने बीसीसीआई को हर साल 350 करोड़ रुपए से ज्यादा मुनाफा दिलाया और इसे दुनिया की सबसे तेज बढ़ती क्रिकेट लीग बना दिया। 3 साल में टीवी व्यूअरशिप 120% व रीच 94% बढ़ी। स्टेडियम में दर्शकों की मौजूदगी भी दोगुनी से ज्यादा हुई। औसत उपस्थिति 9–13 हजार से बढ़कर 28–30 हजार तक पहुंच गई। बड़ी छलांग सेलआउट मैचों में दिखी, जो 2023 की तुलना में 242% बढ़कर 2025 में 154 मैच तक पहुंच गई। अब तो फैंस लंबी दूरी तय कर स्टेडियम आने लगे हैं।

डब्ल्यूपीएल के ब्रांड बढ़े, प्लेयर्स की आर्थिक सुरक्षा भी

डब्ल्यूपीएल से महिला क्रिकेट की डिजिटल व्यूअरशिप 70% बढ़ी, स्पॉन्सरशिप 50 से बढ़कर 70 ब्रांड्स तक पहुंची। जानकार मानते हैं कि वर्ल्ड कप जीत व लीग की सफलता से प्लेयर्स की वैल्यू 40% से 60% तक बढ़ेगी। फ्रेंचाइजी मालिक कहते हैं,'डब्ल्यूपीएल स्थापित प्रॉपर्टी है, जिसने महिला प्लेयर्स को आर्थिक सुरक्षा व दुनिया की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ खेलने का मौका दिया। पुरुषों के वर्चस्व वाले ब्रांड्स में एंट्री: बेसलाइन वेंचर्स के एमडी और को-फाउंडर तुहिन मिश्रा के अनुसार, महिला क्रिकेटर अब उन ब्रांड्स को आकर्षित कर रही हैं, जो पहले पुरुष खिलाड़ियों के लिए ही माने जाते थे। स्मृति ने गल्फ ऑयल (जिसका चेहरा धोनी थे), एसबीआई, हर्बलाइफ व पीएनबी मेटलाइफ के साथ लॉन्गटाइम डील की हैं। स्पोर्ट्सप्रो ने 2024 में 150 सबसे ज्यादा मार्केटेबल ग्लोबल चेहरों में सिर्फ दो क्रिकेटर चुने। एक कोहली और दूसरी मंधाना। एक्सपर्ट कहते हैं,'कुछ वर्षों में महिला प्लेयर कुल क्रिकेट एंडोर्समेंट वैल्यू का 20%-25% तक कमा सकती हैं।' महिला वनडे वर्ल्ड कप फाइनल के लिए 10 सेकंड का एड स्लॉट 2.5 से 3 लाख में बिका, जो पुरुष क्रिकेट की टॉप द्विपक्षीय सीरीज के बराबर है। विज्ञापन दरें 35-40% तक बढ़ गईं। लगभग सभी बड़े मैच प्राइम टाइम में दिखाए गए। महिला क्रिकेट के लिए ऐसा पहली बार हुआ।

मंधाना ब्रांड्स की पहली पसंद, वैल्यू दोगुनी से ज्यादा

डब्ल्यूपीएल और वर्ल्ड कप जीत ने महिला क्रिकेटरों की ब्रांडिंग व एंडोर्समेंट को नई ऊंचाई दी है। स्मृति, शेफाली और जेमिमा जैसी खिलाड़ियों की मार्केट वैल्यू 50% तक बढ़ी। जेमिमा की वैल्यू 60 लाख से 1.5 करोड़ और शेफाली की 40 लाख से 1 करोड़ तक पहुंची। स्मृति (3.5 करोड़) डब्लूपीएल की सबसे महंगी खिलाड़ी हैं। वे एक एड कैंपेन के लिए 45 से 50 लाख फीस लेती हैं। तीन साल में उनकी नेटवर्थ 25 करोड़ से बढ़कर 50 करोड़ हो गई है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि शीर्ष खिलाड़ी जल्द ही 3 से 4 नए ब्रांड कॉन्ट्रैक्ट साइन करेंगी।

वर्ल्ड कप फाइनल व्यूअरशिप पुरुषों के मैच के बराबर रही

भारत व द. अफ्रीका के बीच हुए महिला वनडे वर्ल्ड कप फाइनल को 18.5 करोड़ लोगों ने देखा। यह 2024 पुरुष टी20 वर्ल्ड कप फाइनल के बराबर है। टूर्नामेंट की कुल रीच 44.6 करोड़ रही, पिछले तीन महिला वर्ल्ड कप की संयुक्त रीच से ज्यादा। 9.2 करोड़ दर्शकों ने कनेक्टेड टीवी पर मैच देखा, जो पुरुष टी20 और वनडे वर्ल्ड कप फाइनल के बराबर है।

3 माइलस्टोन: जो लाए बदलाव

▪ **2017 महिला वर्ल्ड कप:** पहली बार वर्ल्ड कप की हर गेंद का लाइव टेलीकास्ट। भारत भले फाइनल हारा, पर दर्शकों ने इसे 'अपनी टीम' माना। ग्लोबल व्यूअरशिप 18 करोड़। महिला प्लेयर्स नजर में आईं।

▪ **डब्ल्यूपीएल:** बीसीसीआई को 5 टीमों की नीलामी से 4,670 करोड़ रु. मिले, जो महिलाओं के खेल का रिकॉर्ड है। 2008 में 8 आईपीएल टीमें 2894 करोड़ में बिकी थीं। जानकार मानते हैं डब्ल्यूपीएल की वैल्यूएशन आईपीएल से बड़ी रही। 5 साल के 951 करोड़ के मीडिया राइट्स ने विदेशी खिलाड़ियों और ब्रांड्स को आकर्षित किया।

▪ **वर्ल्ड कप जीत:** खिलाड़ियों पर एंडोर्समेंट की बौछार होने लगी। जेमिमा की कीचड़ लगी जर्सी पर फुल-पेज विज्ञापन छपा जबकि हरमनप्रीत ओमेक्स की ब्रांड एंबेसडर बनीं। नई नायिकाएं उभरीं।

डब्लूपीएल-2026 का शेड्यूल घोषित: पढ़ें- स्पोर्ट्स पेज

तैयारी • सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था होंगी मजबूत

सेक्टर-61 में बनेगा आधुनिक इंटीग्रेटेड बस डिपो, काम तेज

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत बनाने के उद्देश्य से सेक्टर-61 में आधुनिक तकनीक से लैस इंटीग्रेटेड बस डिपो बनाएगा। इसके लिए कंसल्टेंट एजेंसी नियुक्त करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। एजेंसी द्वारा डीपीआर तैयार होते ही अगले चरण में काम को गति दी जाएगी।

शहर में अभी 50 सिटी बसें चल रही हैं। इनका संचालन फरीदाबाद महानगर विकास प्राधिकरण एफएमडीए द्वारा किया जाता है। अभी ये बसें मात्र 11 रूटों पर चल रही हैं। इन बसों को खड़ा करने के लिए कोई स्थाई जगह नहीं होने से इन्हें बल्लभगढ़ बस अड्डे पर खड़ा किया जाता है। डिपो के लिए पांच वर्ष से कागजों में बन रही योजना को सिरे चढ़ाने की जिम्मेदारी सरकार की तरफ से पहले फरीदाबाद महानगर विकास प्राधिकरण (एफएमडीए) को सौंपी गई थी। लेकिन अब इसे हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) को सौंप दिया गया। अधिकारियों के अनुसार अब एचएसवीपी सेक्टर-61 में मल्टीलेवल बस डिपो बनाएगा। यह प्रदेश का पहला ऐसा बस डिपो होगा जहां नीचे बसे खड़ी होंगी। ऊपर लोग रहेंगे। बहुमंजिला बनने वाले इस डिपो को करीब 20 मंजिला बनाया जाएगा। यहां एक साथ करीब 100 बसों को चार्ज करने की सुविधा भी उपलब्ध होंगी। यहां एक साथ 500 इलेक्ट्रिक बसें खड़ी हो सकेंगी।

शहर में बनाए जाएंगे 310 बस स्टैंड

जानकारी के अनुसार इंटीग्रेटेड बस डिपो निर्माण से शहर मे 310 बस स्टैंड बनाए जाएंगे। इनमें से 88 बस स्टॉप राष्ट्रीय राजमार्ग पर होंगे, जबकि 38 एफएमडीए की सड़कों पर, 163 पीडब्ल्यूडी की सड़कों पर और बाकी 21 स्टॉप नगर निगम व अन्य सड़कों पर स्थापित किए जाएंगे। इससे यह सुनिश्चित किया जाएगा कि हर इलाके के लोगों को बस सेवा मिल सके। वहीं पर्यावरण संरक्षण और बढ़ते प्रदूषण की समस्या को देखते हुए इलेक्ट्रिक बसें चलने से लोगों को काफी काफी राहत मिलेगी।

जल्द खरीदी जाएंगी 500 इलेक्ट्रिक बसें

जानकारी के अनुसार फरीदाबाद में बेहतर परिवहन व्यवस्था के लिए केंद्र सरकार की तरफ से 500 इलेक्ट्रिक बसों की खरीद प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इसके लिए टेंडर जारी कर दिए गए हैं। योजना के अनुसार ये बसें स्मार्ट सिटी के सभी प्रमुख सेक्टरों, कॉलोनियों और व्यस्ततम चौराहों से होकर गुजरेंगी, जिससे लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए सस्ती, स्वच्छ और सुविधाजनक विकल्प मिल सके।

इंटीग्रेटेड बस डिपो के बनने से शहर में सिटी बस सेवाओं का संचालन बेहतर हो सकेगा। बसों के नियमित मेंटिनेंस से सेवा गुणवत्तापूर्ण होगी। यात्रियों की शिकायतें कम होंगी और रूट प्रबंधन अधिक प्रभावी होगा।
-संदीप दहिया, अधीक्षण अभियंता, एचएसवीपी

फोन हैक कर खाते से पैसे निकाले, तीन आरोपी गिरफ्तार

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

फोन हैक कर खाते से पैसे निकालने के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस प्रवक्ता यशपाल के अनुसार सेक्टर-7 निवासी व्यक्ति ने शिकायत में कहा कि 15 सितंबर को उनके पास कथित सैमसंग कस्टमर केयर कर्मचारी की फ्रीज के रूटीन चेकअप के लिए कॉल आई। कुछ देर उनके फोन पर एक लिंक भेजा गया। जिस पर क्लिक करते ही उनका फोन हैक हो गया और उनके खाता से 1,81,862 रुपए कट गए। उन्होंने साइबर थाना बल्लभगढ़ में केस दर्ज कराया। इसके बाद पुलिस ने कार्रवाई करते ग्वालियर निवासी मुकेश कुमार, कृष्णा श्रीवास्तव और हेम श्रीवास्तव को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी मुकेश को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया। जबकि कृष्णा व हेम को पूछताछ के लिए चार दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

नीलम चौक अब गुरु तेग बहादुर चौक के नाम से जाना जाएगा: कृष्णपाल गुर्जर

विधायक ने कहा इसी चौक से आगे 'गुरु तेग बहादुर द्वार के निर्माण का शिलान्यास जल्द

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

नीलम चौक को गुरु तेग बहादुर चौक के नाम की घोषणा करते केंद्रीय राज्यमंत्री गुर्जर।

फरीदाबाद में आज का दिन ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण रहा। जब वर्षों से नीलम चौक के नाम से पहचाना जाने वाला यह प्रमुख चौराहा अब आधिकारिक रूप से गुरु तेग बहादुर चौक के नाम से जाना जाएगा। शनिवार को इसकी घोषणा कर दी गई। यह निर्णय गुरु तेग बहादुर जी की 350वीं शहादत वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लिया गया। केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने नीलम चौक का नाम गुरु तेग बहादुर चौक के नाम से घोषित किया। इस दौरान उनके साथ बड़खल विधायक धनेश अदलखा, एनआईटी विधायक सतीश फागना भी मौजूद थे। केंद्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि गुरु तेग बहादुर की शहादत सदियों से मानवता, धर्म-रक्षा और अदम्य साहस का प्रतीक रही है। विधायक ने कहा इसी चौक से आगे 'गुरु तेग बहादुर द्वार के निर्माण का शिलान्यास जल्द ही किया जाएगा यह नामकरण फरीदाबाद ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गर्व का विषय है, क्योंकि ऐसे महापुरुष सम्पूर्ण मानवता की धरोहर होते हैं। नीलम चौक का नया नाम श्री गुरु तेग बहादुर चौक आने वाली पीढ़ियों को उन वीरों की याद दिलाता रहेगा।

श्रीमद्भागवत गीता विश्व का शाश्वत और सार्वकालिक ज्ञान का भंडार है: शर्मा

विधायक मूलचंद शर्मा ने तीन दिवसीय गीता जयंती महोत्सव का किया शुभारंभ

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

श्रीमद्भगवद गीता पर आधारित प्रदर्शनी को देखते विधायक।

सेक्टर-12 के एचएसवीपी कन्वेंशन सेंटर में तीन दिवसीय जिलास्तरीय गीता जयंती महोत्सव का शनिवार को शुभारंभ हुआ। बल्लभगढ़ के विधायक पंडित मूलचंद शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि श्रीमद्भागवत गीता विश्व का शाश्वत और सार्वकालिक ज्ञान का भंडार है, जिसके उपदेश न केवल भारत बल्कि विश्व के अनेक देशों में जीवन प्रबंधन, नेतृत्व, कर्तव्य परायणता और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपनाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा श्रीमद्भागवत गीता मनुष्य को कर्मयोग का उपदेश देती है, जिसका अर्थ है परिणाम की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करना। मुख्य अतिथि ने श्रीमद्भागवत गीता पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इसमें गीता के अठारह अध्यायों का सार, महाभारत के प्रमुख प्रसंग, भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश व आधुनिक जीवन में गीता के संदेश की प्रासंगिकता को प्रदर्शित किया गया। इस दौरान एडीसी उपस्थित थे।

शादी समारोह में युवक को थार चालक ने कुचला, मौत

भास्कर न्यूज़ | पलवल

मृतक भूपेंद्र शर्मा

एनएच स्थित फार्म हाउस में शादी समारोह में एक युवक को थार चालक ने कुचल दिया। गंभीर हालत में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। गदपुरी थाना पुलिस ने मृतक के भाई की शिकायत पर थार चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी अश्वनी कुमार के अनुसार राजस्थान के करौली जिले के केशवपुरा हिंडौन सिटी निवासी विजय कुमार शर्मा ने शिकायत में कहा कि उनका भाई भूपेंद्र शर्मा रिश्तेदारी में दीप फॉर्म हाउस गदपुरी में एक शादी समारोह में आया था। रात करीब 10.40 बजे समारोह में थार चालक ने तेज व लापरवाही से गाड़ी बैक करते हुए उनके भाई को टक्कर मारकर कुचल दिया। आरोपी है कि थार सेक्टर 58 का एक निवासी चला रहा था।

दुकान में चोरी, पहले भी चोरी होने का आरोप

भास्कर न्यूज़ | पलवल

दुकान के ताले काटकर लाखों रुपए का सामान व कैश चोर ले गए। हथीन थाना पुलिस ने दुकानदार की शिकायत पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी हरि किशन के अनुसार हथीन निवासी पवन सिंगला ने शिकायत में कहा कि वह शाम को दुकान बंद कर घर चले गए थे। रात में ताले काटकर चोर दुकान के अंदर से कैश व लाखों रुपए का सामान ले गए। चोर पंखे के बुश, सीसीटीवी कैमरे, 40 किलो तांबे का तार, 50 गैस कटर के नोजल सहित अन्य सामान ले गए। चोरी की सूचना मिलने पर वह रात को ही दुकान पर पहुंच गए और इसकी सूचना पुलिस को दी।

आधुनिक तकनीक से नसों की बीमारी का इलाज संभव

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

मेडिकल सेमिनार को संबोधित करतीं न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. सुषमा शर्मा।

जनरल प्रैक्टिसनर फोरम की ओर से मेडिकल सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. सुषमा शर्मा मुख्य वक्ता थीं। सेमिनार में शहर के करीब 50 डॉक्टरों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता फोरम के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र अग्रवाल ने की। सेमिनार का विषय न्यूरोपैथी (नसों की बीमारियां) था। इस दौरान विशेषज्ञों ने बताया कि बदलती जीवनशैली के कारण नसों की बीमारियां अब तेजी से बढ़ रही हैं। खासतौर पर डायबिटीज, विटामिन की कमी, अल्कोहल सेवन, किडनी और लीवर संबंधी रोग इसके प्रमुख कारण बन रहे हैं। कई मामलों में इंफेक्शन व जेनेटिक फैक्टर भी जिम्मेदार होते हैं। डॉ. शर्मा ने बताया कि नसों की बीमारियां कई बार लंबे समय तक बनी रहती हैं। जिससे आधुनिक तकनीक से नसों की बीमारी का इलाज संभव हैं। जैसे पैर-हाथों में जलन, सुन्नपन, चलने में कठिनाई, संतुलन बिगड़ना, ज्यादा पसीना आना आदि लक्षण हैं।

अंबाला की कंपनी के डायरेक्टर पर केस दर्ज

पलवल | हसनपुर के एक आढ़ती से अंबाला की एक फर्म द्वारा धान ले जाने के एक वर्ष बाद भी पेमेंट नहीं दिया। पैसे मांगने पर आढ़ती को जान से मारने की धमकी दी जा रही। हसनपुर थाना पुलिस ने आढ़ती की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। थाना प्रभारी दिनेश कुमार के अनुसार कासीपुर गांव निवासी हरि किशन ने शिकायत में कहा कि वह हसनपुर अनाज मंडी में हरे कृष्णा ट्रेडिंग कंपनी के नाम से फर्म है। उनके यहां से अंबाला के करुणा निधान एसो टैंक प्रा. लि. के डॉयरेक्टर आसू ने अक्टूबर 2024 में 85 टन धान खरीदा था। इसकी कीमत 21 लाख 41 हजार 500 रुपए बनती है। जिसमें 84 हजार 800 रुपए बारदाने के हैं।

पहल • जिले में 20 करोड़ फूलदार पौधे रोपने का लक्ष्य

शहर को स्वच्छ व आकर्षक बनाने के लिए 30 लाख फूलदार पौधे बांटे

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने शनिवार को सेंट्रल पार्क सेक्टर-28 में नगर निगम की ओर से आयोजित शीतकालीन फूल पौध वितरण समारोह में बतौर मुख्यातिथि पहुंचे। उनके साथ विधायक मूलचंद शर्मा, विधायक धनेश अदलखा, विधायक सतीश फागना भी मौजूद थे। इस दौरान करीब 30 लाख फूलों वाले पौधे शहरवासियों को निशुल्क बांटे गए। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह पहल शहर को स्वच्छ, आकर्षक और पर्यावरणीय दृष्टि से बेहतर बनाने की दिशा में एक अच्छा कदम है। नगर निगम ने विभिन्न प्रजातियों के फूलों वाले पौधों के वितरण का कार्य प्रारंभ किया है। करोड़ों की संख्या में उपलब्ध इन पुष्पीय पौधों को न केवल नागरिकों में बांटा जा रहा है, बल्कि नगर निगम द्वारा शहर के पार्कों, हरित पट्टियों और प्रमुख चौराहों पर भी इन्हें लगाया जा रहा है। उन्होंने कहा निगम द्वारा शहर के सभी पार्कों में फूलदार पौधे लगाए जाएंगे। जिन पार्कों का रखरखाव आरडब्ल्यूए के पास है, उनमें पौधारोपण का कार्य संबंधित आरडब्ल्यूए द्वारा किया जाएगा। शनिवार को करीब 30 लाख फूलों के पौधे बांटे गए। उन्होंने शहरवासियों से आह्वान किया कि वे न केवल पौधे लेकर जाएं, बल्कि उन्हें रोपें और उनकी देखभाल भी करें। मंत्री ने कहा इस अभियान के तहत करीब 20 करोड़ पौधे रोपने का लक्ष्य है। निगम की एडिशनल कमिश्नर सलोनी शर्मा ने बताया कि नगर निगम ने इस माह हरित अभियान की शुरुआत की है।

गार्ड को बंधक बनाकर सामान लूटने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

भास्कर न्यूज़ | फरीदाबाद

पुलिस की सीआईए ने सेक्टर 24 में गार्ड को बंधक बनाकर कंपनी से 25 लाख रुपए का सामान लूटने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस प्रवक्ता यशपाल के अनुसार 23-24 नवंबर की रात 5-6 युवकों ने सेक्टर-24 स्थित त्रिकुटा मेटल्स प्लांट में गार्ड को बंधक बना लिया। फिर इसके बाद 21 क्विंटल तांबा, एक फिकअप गाडी व दो एलईडी टीवी लूट ले गए। पीड़ित जतिन चोपड़ा की शिकायत पर मुजेसर थाने में यह केस दर्ज किया गया। इसके बाद सीआईए सेक्टर-30 ने कार्रवाई करते हुए बिहार के मुंगेर जिले के मुंदेरी निवासी आरोपी संदीप सुमन व सूरज को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी संदीप सुमन इस लूट का सूत्रधार है। उसने अपने साथियों के साथ मिल 2-24 नवंबर की रात इस घटना को अंजाम दिया था। आरोपी छह महीने पहले इस कंपनी में काम करता था। अब प्याला में गार्ड की नौकरी कर रहा है।

शराब के नशे में छत से गिरा युवक, मौके पर मौत

गुरुग्राम | बादशाहपुर थाना एरिया में नौकरी की तलाश में दोस्त के पास आए युवक की छत से गिरने पर मौत हो गई। युवक शराब के नशे में था और पेशाब करने के लिए उठा था। सूचना मिलते ही बादशाहपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में ले लिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। रोहतक निवासी 30 वर्षीय अजीत बल्हारा नौकरी की तलाश में दो दिन पहले गुड़गांव आया था। वह बादशाहपुर थाना एरिया के चिनार होटल के पास सेंटर होम्स पीजी में अपने दोस्त सौरव के पास रुका हुआ था। बताया जा रहा है कि कल रात को अजीत और सौरभ ने मिलकर शराब पार्टी की थी और छत पर सो गए थे।

डेटिंग एप पर दोस्ती कर युवती से लाखों रुपए ट्रांसफर कराए

गुरुग्राम | साइबर क्राइम ईस्ट थाना एरिया में डेटिंग एप पर दोस्ती कर युवती से लाखों रुपए ट्रांसफर कराने का मामला सामने आया है। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में सेक्टर-52 निवासी युवती नित्या तोमर ने शिकायत में बताया कि उन्हें डेटिंग एप हिंग एक्स पर एक युवक का मैसेज आया था। उसने बातचीत शुरू की और उसे झांसे में लेकर उससे 1 लाख 35 हजार 800 रुपए ट्रांसफर करा लिए। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि तकनीकी जांच के आधार पर आरोपी तक पहुंचने का प्रयास किया जा रहा है।

राशन डिपो दिलाने के नाम पर चार दिन में लाखों की ठगी

गुरुग्राम | जिला के गांव भोड़ाकलां निवासी एक युवक को कॉल कर एक व्यक्ति ने उसे उसके पिता का जानकार बताकर उसे राशन डिपो दिलाने का झांसा दिया और उससे 21 नवंबर 24 नवंबर के बीच अलग-अलग ट्रांजेक्शन कर उसके खाते से 1 लाख 35 हजार रुपए की ठगी कर ली। शिकायत के आधार पर साइबर थाना मानेसर की टीम ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सागर निवासी भोड़ाकला ने साइबर थाना मानेसर पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके मोबाइल पर 14 नवंबर को एक कॉल आई और उसे उसके पिता का जानकार बताकर उसे राशन डिपो दिलाने का झांसा दिया। पीड़ित ने 21 नवंबर को 13 हजार 200 रुपए ट्रांसफर किए। इसके अलावा दो ट्रांजेक्शन 13200 की रही।

तीरंदाजी में जिया यादव ने जीते दो सिल्वर व एक ब्रांज मेडल

गुरुग्राम | अरुणाचल प्रदेश में आयोजित 42वीं एनटीपीसी सब जूनियर नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप में गुरुग्राम पुलिस कमिश्नर कार्यालय में कार्यरत उप अधीक्षक मीना की बेटी जिया यादव ने मेडल की हैट्रिक लगाई है। जिया ने अलग-अलग वर्ग में दो सिल्वर व एक ब्रांज मेडल अपने नाम किया है। वहीं जिया के इस प्रदर्शन को लेकर गुरुग्राम पुलिस अधिकारियों ने काफी सराहा है। जिया ने इन डिविजवल में एक सिल्वर व एक ब्रांज मेडल जीते जबकि टीम वर्ग में सिल्वर मेडल हासिल किया। वहीं जिया का शनिवार को गुरुग्राम के पुलिस कमिश्नर विकास अरोड़ा ने स्वागत किया।

निर्देश • डेवलपर को हार्वेस्टिंग सिस्टम का प्रमाणपत्र देना होगा

15 एकड़ से अधिक क्षेत्र वाली सोसाइटी में हार्वेस्टिंग सिस्टम हो

भास्कर न्यूज़ | गुरुग्राम

गुरुग्राम मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमडीए) ने शहर की सोसाइटियों में लगे रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम 31 दिसंबर तक ठीक करने व प्रमाण पत्र कार्यालय में जमा करने के आदेश जारी किए हैं। इसके लिए जीएमडीए ने सभी रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) और डेवलपर्स को रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और रिचार्ज सिस्टम के मेंटेनेंस और ऑपरेशन के बारे में गाइडलाइन जारी की हैं। ये गाइडलाइन 15 नवंबर को सेक्टर-49 के डीएवी पब्लिक स्कूल में हुई वर्कशॉप के नतीजों के आधार पर जारी की गई हैं। ज्ञात हो कि कई बिल्डर्स ने सोसायटी बनाकर फ्लैट भी बेच दिए लेकिन ना तो एसटीपी (सीवर ट्रीटमेंट प्लांट) का कनेक्शन किया और ना ही रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को चेक किया है। ऐसे में बारिश के दौरान सोसाइटियों में रहने वाले लोगों को परेशानी उठानी पड़ती है और सरकार की भी किरकिरी होती है। अर्बन डेवलपमेंट के प्रिंसिपल एडवाइजर डीएस ढेसी की अध्यक्षता में हुई बैठक में हाइड्रोलॉजी और अर्बन वाटर मैनेजमेंट के एक्सपर्ट्स ने डिटेल में प्रेजेंटेशन दिए।

10 सोसाइटी का रैंडम इंस्पेक्शन किया जाएगा

गुरुग्राम। रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की सफाई करते कर्मी।

सरकारी बिल्डिंग के हार्वेस्टिंग सिस्टम की भी होगी जांच

सरकारी डिपार्टमेंट्स को मिनी सेक्रेटेरिएट, पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस, सेक्टर 34 में गुरुग्राम म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन ऑफिस और सेक्टर-14 में हरियाणा अर्बन डेवलपमेंट अथॉरिटी ऑफिस समेत बड़ी सरकारी बिल्डिंग में रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम तय समय में चालू करने का निर्देश दिया गया है। ज्ञात हो कि मानसून के मौसम में शहर में पानी भर जाता है। इसके अलावा, रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के काम न करने की वजह से बारिश का पानी सड़कों पर बहता है।

प्रिंसिपल एडवाइजर के अनुसार, डेढ एकड़ और उससे ज्यादा एरिया में फैली सोसाइटियों में रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम मेंटेन करने वाले आरडब्ल्यूए और डेवलपर्स को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी स्ट्रक्चर चालू हों। डिज़ाइन में बदलाव या मरम्मत 31 दिसंबर, 2025 तक पूरी हो जानी चाहिए। बिल्डर को जारी करना होगा सर्टिफिकेट आरडब्ल्यूए या डेवलपर को अपनी जगह पर लगे रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम पिट्स की काम करने की हालत की पुष्टि करने वाला एक सर्टिफिकेट जारी करना होगा। जो 31 दिसंबर तक जीएमडीए के एनफोर्समेंट डिवीजन में जमा करना होगा। जीएमडीए गुरुग्राम के अलग-अलग इलाकों में कम से कम 10 सोसाइटियों का रैंडम इंस्पेक्शन करेगा। सिंचाई विभाग, जीएमडीए और डीटीसीपी के हाइड्रोलॉजिस्ट की एक जॉइंट टीम इन सिस्टम को वेरिफाई करेगी। इंस्पेक्शन रिपोर्ट 15 जनवरी, 2026 तक जमा की जाएगी।

गांव के सामाजिक और आर्थिक विकास को भी नई दिशा देने के प्रति तत्पर: नरबीर

भास्कर न्यूज़ | गुरुग्राम

गुरुग्राम। हाजीपुर (पातली) में विकास कार्यों की आधारशिला रखते प्रदेश के मंत्री राव नरबीर सिंह

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने गांव हाजीपुर (पातली) में कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं की आधारशिला रखी। इनमें एचएसआईआईडीसी की ओर से 72 लाख रुपए की लागत से बनाए जाने वाले आधुनिक पार्क का निर्माण, पंचायत विभाग द्वारा 4 करोड़ 7 लाख रुपए की लागत से बनने वाले पीएचसी का शिलान्यास और एमजीजीबीवाई कॉलोनी के विकास के लिए लगभग 2 करोड़ रुपए की परियोजना शामिल हैं। इसके अतिरिक्त गांव के खेतों तक पहुंचने वाले पक्के रास्तों के निर्माण कार्य को भी मंजूरी दी गई। कार्यक्रम के दौरान मंत्री ने एचएसआईआईडीसी द्वारा 1 करोड़ 62 लाख रुपए की लागत से गांव में स्थापित की गई स्ट्रीट लाइटों का उद्घाटन भी किया। उन्होंने कहा कि यह सुविधाएं न केवल ग्रामीणों को बेहतर जीवन स्तर प्रदान करेंगी, बल्कि गांव के सामाजिक और आर्थिक विकास को भी नई दिशा देंगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि आगामी दिनों में गांव और आसपास के क्षेत्र की अन्य आवश्यकताओं पर भी प्राथमिकता के आधार पर कार्य किया जाएगा।

नाराज बॉयर्स का बिल्डर के खिलाफ प्रदर्शन, तीखी बहस हुई

गुरुग्राम | शनिवार को सेक्टर-89 स्थित एमआरजी मेरेडियन बिल्डर के कार्यालय पर पहुंचकर बॉयर्स ने फ्लैट का कब्जा नहीं दिए जाने को लेकर हंगामा किया। इस दौरान बिल्डर ऑफिस के लोगों ने बॉयर्स के साथ बदतमीजी की, जिस पर बॉयर्स भड़क गए। इस दौरान करीब आधे घंटे बॉयर्स व बिल्डर के कर्मचारियों के बीच तीखी बहस हुई और बाद में बॉयर्स ने बिल्डर के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया। फ्लैट खरीदार नीरजा सिंह ने बताया कि उन्होंने वर्ष 2019 में फ्लैट बुक किए थे, जो वर्ष 2023 में फ्लैट पर कब्जा दिए जाने का वायदा किया था। लेकिन आज तक फ्लैट नहीं दिए जा रहे हैं।

शादी का झांसा देकर युवती से किया दुष्कर्म, आरोपी फरार

गुरुग्राम | सदर थाना एरिया में युवक द्वारा शादी का झांसा देकर युवती से रेप करने का मामला सामने आया है। युवती ने जब आरोपी का विरोध किया तो उसने शादी करने का झांसा दिया और मौका पाकर फरार हो गया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सेक्टर-57 एरिया की रहने वाली युवती ने शिकायत में बताया कि उसकी पहचान सेक्टर-47 के रहने वाले विष्णु कश्यप से हुई थी। दोस्ती करने के बाद विष्णु ने उसे मालिबू टाउन में बुलाया जहां उसके साथ जबरन संबंध बनाए। जब युवती ने इसका विरोध किया तो उसने शादी करने का झांसा दिया और उससे संबंध बनाने लगा।

ढाबे पर शराब व पान शॉप पर ई-सिगरेट बेचा, जांच

भास्कर न्यूज़ | गुरुग्राम

सीएम फ्लाइंग की टीम ने ढाबे पर अवैध रूप से शराब परोसने व पान की दुकान पर अवैध रूप से ई सिगरेट बेचने का भंडाफोड़ किया है। दोनों ही मामलों में सीएम फ्लाइंग की टीम ने स्थानीय थाना पुलिस को शिकायत देकर केस दर्ज कराया है। सीएम फ्लाइंग के अधिकारियों के मुताबिक, सूचना के आधार पर टीम ने आबकारी विभाग के साथ संयुक्त टीम बनाकर भोंडसी के गांव गढ़ी मुरली में वी देसी ढाबा पर रेड की। यहां कुर्सी मेज लगाकर लोगों को ढाबे की आढ़ में शराब परोसी जा रही थी। जब टीम मौके पर पहुंची तो यहां करीब 20 लोग खुलेआम शराब का सेवन कर रहे थे। मौके पर पहुंची टीम ने ढाबा मैनेजर को काबू किया जिसकी पहचान महेंद्रवाड़ा निवासी सिंटू के रूप में हुई। पूछताछ के दौरान आरोपी शराब परोसने संबंधित कोई लाइसेंस पेश नहीं कर पाया। इस पर उसके खिलाफ भोंडसी थाना पुलिस को शिकायत देकर आरोपी के खिलाफ एक्साइज एक्ट 1914 के नए अमेंडमेंट एक्साइज एक्ट 2020 की धारा 72 सी के तहत केस दर्ज कराते हुए उसे पुलिस के हवाले कर दिया। वहीं, सीएम फ्लाइंग की टीम ने झाड़सा रोड पटवार घर के पास 3एस स्टोर पर रेड की। यहां टीम ने प्रतिबंधित ई सिगरेट बरामद की है।

आईएमटी मानेसर में अटल श्रमिक किसान कैंटीन शुरू

भास्कर न्यूज़ | गुरुग्राम

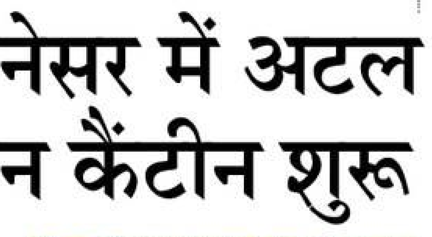
गुरुग्राम। आईएमटी मानेसर में चल रही अटल श्रमिक किसान कैंटीन।

हरियाणा स्टेट इंडस्ट्रियल एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एचएसआईआईडीसी) ने आईएमटी मानेसर में सेक्टर-4 और सेक्टर-5 स्थित दो अटल श्रमिक किसान कैंटीनों को संचालित कर दिया है। एचएसआईआईडीसी द्वारा आईएमटी मानेसर में कुल पांच स्थानों की पहचान अटल श्रमिक किसान कैंटीन योजना के तहत की गई है। शेष तीन कैंटीनों का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिन्हें आने वाले सप्ताहों में शुरू कर दिया जाएगा। इसके बाद औद्योगिक क्षेत्र के अधिकाधिक श्रमिकों को इन सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। इन कैंटीनों का निर्माण उद्योग जगत और प्रमुख औद्योगिक संगठनों के सीएसआर सहयोग से किया जा रहा है, जो श्रमिक कल्याण और सामाजिक उत्थान के प्रति उद्योगों की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कैंटीनों का संचालन स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) द्वारा किया जाएगा। इससे जहां कैंटीनों का कुशल प्रबंधन सुनिश्चित होगा, वहीं स्थानीय महिलाओं और समुदाय के सदस्यों के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। इस योजना के तहत श्रमिकों को केवल 10 रुपए की पौष्टिक और स्वच्छ थाली उपलब्ध कराई जाएगी।

निजी इलेक्ट्रीशियन की करंट लगने से मौत

गुरुग्राम | बिजली ठीक करने के लिए खंभे पर चढ़े प्राइवेट इलेक्ट्रीशियन की करंट लगने से मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं इलेक्ट्रीशियन की मौत पर गुस्साए लोगों ने बिजली निगम कर्मचारियों पर रोष जताते हुए उन पर कार्रवाई करने की मांग की। आरोप है कि बिजली निगम के कर्मचारियों के कहने पर ही प्राइवेट इलेक्ट्रीशियन बिजली ठीक करने के लिए खंभे पर चढ़ा था। सोहना सदर थाना पुलिस को शिकायत देकर बिजली निगम कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। सोहना के गांव सांचौली में 28 नवंबर की रात को बिजली की लाइन में फाल्ट आ गया था। ऐसे में लोगों ने इसकी शिकायत बिजली निगम में दी। बिजली निगम के लाइनमैन ने स्वयं मौके पर आने की बजाय गांव भिरावटी के रहने वाले हरपाल (31) को मौके पर फाल्ट ठीक के लिए कहा।

हर वर्ग के लोगों का दुश्मन बन रहा नशा: सीजेएम

डालसा के कार्यक्रम में मौजूद सीजेएम डॉ. सुशील कुमार गर्ग।

भास्कर न्यूज़ | नूंह

चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट डॉ. सुशील कुमार गर्ग ने कहा कि आज नशा हर वर्ग के लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन बन रहा है। नशे से न केवल स्वास्थ्य, बल्कि परिवार व समाज पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने सभी नागरिकों व विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने व अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक करने की अपील की।

वह शनिवार को तावड़ू की नई अनाज मंडी में एक कानूनी विशेष जागरुकता कार्यक्रम में उपस्थित लोगों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने कहा कि डिजिटल युग में ठगी के तरीके बदल गए हैं, इसलिए सतर्कता व सही जानकारी बेहद जरूरी है। किसी भी संदिग्ध लिंक, कॉल या मैसेज पर भरोसा न करें और अपनी व्यक्तिगत जानकारी कभी साझा न करें। इसके अलावा यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि आपका मोबाइल किसी गलत व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल न किया जाए। डालसा सचिव व सीजेएम नेहा गुप्ता ने लोगों को उनके कानूनी अधिकारों, नशा मुक्ति, बाल विवाह, दहेज व साइबर सुरक्षा को लेकर भी जानकारी दी। इस मौके पर एसडीएम तावड़ू जितेंद्र कुमार गर्ग आदि थे।

स्पंदन

गुलाब कोठारी
लेखक पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं

सम्प्रेषण

मेरे लिए कम्युनिकेशन प्रोफेशन नहीं है, इस बात को आप रेखांकित कर लें। आपसे भी मैं यही कहूंगा कि एक प्रोफेशनल बनने का प्रयास न करके एक कम्युनिकेटर बनने का प्रयास करें। प्रोफेशन आदमी को कई तरीकों से बांटता है, सीमित कर देता है। उसकी दिशाओं को सीमित कर देता है, उसके लक्ष्यों को सीमित कर देता है। लेकिन जब एक पत्रकार कम्युनिकेटर बन जाता है, तो उसकी कोई सीमा नहीं है। हम सब जितने भी प्राणी हैं, इंसान हैं इस धरती पर, हम सब कम्युनिकेटर हैं। क्या हम बिना कम्युनिकेशन के जिंदा रह सकते हैं? नहीं रह सकते। सम्प्रेषण-कम्युनिकेशन का सम्बंध शब्दों, ध्वनि और कंपन से है। साथ ही, एक और बहुत ही महत्त्वपूर्ण रिश्ता शरीर, ध्वनि और कम्पन के बीच है, क्योंकि हमारा शरीर ध्वनि के कम्पन से निर्मित है।

जब प्रकृति में कुछ नहीं था, तब सिर्फ आकाश था। और ध्वनि आकाश का गुण है जिससे हम सब पैदा हुए हैं। अतः प्रकृति का सिर्फ एक तत्व है, जिसमें हम सभी को प्रभावित करने की शक्ति है। जो हमारे भीतर गहराई तक समाहित हो सकता है। जो मेरे हृदय से निकल सकता है, जो मेरे शरीर, मन, मस्तिष्क, बुद्धि हर चीज से निकलकर आप तक पहुंच सकता है। आपके घर के भीतर, आपके शरीर, मन, मस्तिष्क, मेधा में प्रवेश कर सकता है और आपके आत्मा तक को छू सकता है। अतः मैं कहूंगा कि सम्प्रेषण पेशा नहीं है। जब आप किसी तक अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं, तो महज एक संदेश भेजने से कहीं ज्यादा विचार करना पड़ता है। मेरे विचार में सम्प्रेषणकर्ता की तुलना में मीडिया की प्रासंगिकता, उसका महत्त्व बहुत कम है। अगर मेरे संदर्भ में बात की जाए तो मैं जानता हूं कि पाठक मेरी भाषा नहीं पढ़ते, वो मुझे पढ़ना चाहते हैं, वो ये जानने को उत्सुक हैं कि मैं क्या कहना चाहता हूं। वो शब्दों के बीच छिपे गूढ़ अर्थ को जानना चाहते हैं। उन्हें मेरे शब्दों के चयन की चिंता नहीं है और ना ही इस बात से मतलब है कि मैंने व्याकरण में किसी तरह की गलती की या नहीं। वहीं, जब आप प्रार्थना करते हैं, तो वह सही मायने में सम्प्रेषण नहीं है। क्या आपको ईश्वर की मूरत के अलावा किसी अन्य बात की चिंता है। मेरे विचार से कदापि नहीं रहती, ना कोई चिंता ना कोई आशंका। मेरे ख्याल से ईश अराधना में हम स्वयं को भी भूल जाते हैं। इसी तरह से जब हम अपने विचार किसी तक सम्प्रेषित करना चाहते हैं, तो हमें स्वयं को भूलकर सिर्फ उस व्यक्ति का ही ध्यान रखना चाहिए। जिसके साथ हम संवाद बना रहे हैं, सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं। ये एक बीज की तरह है।

आप एक बीज हैं, जो एक विशाल फलदार वृक्ष में बढ़कर समाज को अपने फल देने को आतुर हैं। लेकिन आप खुद इस फल का सेवन नहीं कर सकते हैं। आज तक कोई भी बीज अपने फल स्वयं ना खा सका। ना ही फ्रिज या माल गोदाम में पड़े-पड़े कोई बीज पेड़ बन सका। इसके लिए बीज को मिट्टी में दबना ही होगा। यही जीवन का सत्य है और यही जीवन का प्रथम सिद्धांत भी। इस बात को अच्छे से याद रखें कि अगर आप एक वृक्ष बनना चाहते हैं, समाज को फल देना हैं, तो आपको अपना अस्तित्व भूलकर जमीन में दबने के लिए सदैव तैयार रहना होगा। जिन्हें अपने अस्तित्व की ज्यादा चिंता सताती है, तो वे सकुशल किसी सुरक्षित स्थान पर रहें। आप ठीक उसी तरह सुरक्षित रहेंगे जैसे एक बीज फ्रिज में सुरक्षित महसूस करेगा। लेकिन ध्यान रहे आप एक विशाल वृक्ष के रूप में कभी फल-फूल ना सकेंगे।

अब हम सम्प्रेषण के विज्ञान, ध्वनि विज्ञान और कम्पन विज्ञान के बारे में समझ लें और जानें कि इनसे हमारा क्या सम्बंध है। इसके लिए एक छोटा सा उदाहरण देना चाहूंगा। हमारे शरीर को चार स्तर में बांटा गया है। पहला है, शरीर यानी हमारा भौतिक स्तर। इसके बाद है हमारा बौद्धिक स्तर, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर। सफल सम्प्रेषण या संवाद इस बात पर निर्भर है कि हम किस स्तर से बोल रहे हैं या लिख रहे हैं और साथ ही हम श्रोता के किस स्तर को छूना चाहते हैं। अगर मैं अपने बौद्धिक स्तर से बात करूंगा तो सामने वाले के बौद्धिक स्तर को ही छू सकूंगा। आपके आत्मा, आपका हृदय या आपका शारीरिक स्तर मेरी पहुंच से परे होगा। अगर मैं आपके आत्मा को छूना चाहता हूं तो मुझे भी अपने आत्मा से ही बोलना होगा। इतनी सरल-सी है ये बात, लेकिन वहीं उतनी ही जटिल भी है क्योंकि हम अपने शारीरिक और बौद्धिक स्तर यानी IQ में ही घिरे रहते हैं। उसी को ज्यादा महत्त्व देते हैं। यही एक वजह है कि शांति के लिए आयोजित महा सम्मेलनों के शांति संदेश वहां उपस्थित लोगों के भी दिलों तक नहीं पहुंच पाते हैं। वहीं दूसरी ओर हिंसा और आतंकवाद की आग तेजी से फैल रही है। हम आतंकवाद पर लगाम कस ही नहीं पा रहे हैं। हमारा शांति संदेश लोगों के दिलों को छूने में अक्षम है, क्योंकि हम दिल से नहीं दिमाग से बात कर रहे हैं। इसलिए हमारा संदेश सिर्फ उनके दिमाग तक पहुंचता है। दिमाग में भावनाएं नहीं बसती, वो संवेदनशील नहीं हैं। वो संवेदनाओं से शून्य है। हमारी समस्त भावनाएं-जीवन और प्रेम के प्रति, हमारे सभी अच्छे -बुरे अनुभव, सभी कुछ दिल में बसे हुए हैं। सिर्फ दिल से किया गया संवाद, सम्प्रेषण और सम्पर्क ही लोगों के दिल तक पहुंच पाएगा। दिल के बिना वो ना कभी मधुर, स्नेहमयी या शांति प्रदान करने वाला हो सकता है ना ही आप किसी के दिल को छू सकते हैं। यही सबसे आवश्यक मूलभूत बात है। इसे आधारभूत क्यों कहा जा रहा है, क्योंकि शरीर, दिमाग और बुद्धि- ये तीनों ही संप्रेषण के साधन हैं जो हमें अपने माता-पिता से मिले हैं। मेरे माता-पिता ने मुझे ये शरीर दिया है जिसमें मैं एक सौ वर्षों तक वास कर सकता हूं। इस शरीर का उपयोग मैं अपने लक्ष्यों को, अपने दिल की सभी इच्छाओं को पूरी करने के लिए कर सकता हूं। मैं अपने दिमाग से उन इच्छाओं को साकार कर सकता हूं। मेरा आत्मा मेरा हृदय है। इसमें इच्छाएं हैं, लेकिन ये इच्छाओं की उत्पत्ति नहीं कर सकता है। यानी ईश्वर द्वारा दी गई ये तीनों शक्तियां, मेरे साधन मात्र हैं। ये मैं नहीं हूं। अंतर समझें, कौन बात कर रहा है? Who is communicating? आप भी अपनी इन तीन शक्तियों से ही मेरी बात समझ सकते हैं। मैं भी इन तीनों शक्तियों के जरिए ही आपसे जुड़ा हूं। तो इस तरह मैं किस से बात कर रहा हूं? आपसे! और आप किसे पढ़ रहे हैं? मुझे! हम सब एक समान हैं, सब एक हैं। जो मेरे आत्मा में है, वही आपके आत्मा में भी है। हम अलग अलग तत्व नहीं हैं। यही भारतीय दर्शन का हृदय है। इसका मूल सार है।

gulabkothari@epatrika.com

सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को भी पढ़ाएं।

लघुकथा
SHORT STORIES

नुकसान

विभा गुप्ता
patrika.com

ऑफिस से आते ही मेरे पति ने मुझे बताया कि उनके मित्र अविनाश के कपड़े की दुकान में शॉर्ट सर्किट के कारण आग लग गई है। पल भर में ही लाखों की सम्पत्ति जलकर राख हो गई है। बेचारे का बुरा हाल है... अब न जाने कैसे होगा? मैंने कहा, कल उनके घर सांत्वना देने चलते हैं। दुख की घड़ी में ही तो मित्र एक-दूसरे के काम आते हैं।

अगले दिन जब हम अविनाश के घर पहुंचे, तो देखा कि वे अपनी दुकान के सभी स्टाफ को बिठाकर चाय-नाश्ता करा रहे थे। हम तो चकित रह गए, हमने तो सोचा था कि मित्र मातम मना रहे होंगे लेकिन यहां तो पार्टी...। फिर भी औपचारिकता निभाते हुए मैंने उनकी पत्नी से कहा, 'भाभीजी, आग लगने के कारण आप लोगों का तो बहुत नुकसान हुआ होगा, किसी चीज की जरूरत हो तो...।'

'अरे नहीं भाभीजी, कुछ नुकसान नहीं हुआ है। ईश्वर की कृपा से उस समय दुकान के भीतर न तो कोई ग्राहक था और न ही कोई स्टाफ। जान बच गई, हमारे लिए तो यही बहुत है। इसी की हम खुशी मना रहे हैं। अब कल से हम सभी एक नए उत्साह के साथ दुकान को फिर से बनाने में जुट जाएंगे।' मुस्कुराते हुए मित्र ने अपने स्टाफ की तरफ देखा, तो जिंदगी के प्रति उनकी सकारात्मक सोच और कर्मठता को देखकर मैं उनके आगे नतमस्तक हो गई।

लघुकथा
SHORT STORIES

बोझ

डॉ. नरेन्द्रपाल जैन
patrika.com

बड़ी मेहनत, मजदूरी कर गिरधारीलाल ने अपना जीवन-यापन किया। खूब बोझ उठाए, पसीना बहाकर पाई-पाई जोड़ी। एक छोटा मकान बनाया, बच्चों को पढ़ाया, उनकी शादी करवाई। उम्र के इस पड़ाव में शरीर जवाब दे गया था, अब उससे मेहनत, मजदूरी नहीं हो रही थी। उसके शरीर में बीमारी ने घर कर लिया था। उसकी बीमार पत्नी ने कहा... सुनो! सारी जिंदगी खूब बोझ उठाया है, अब आराम करो। बेटा कमा रहा है, आपको किस बात की चिंता है। गिरधारीलाल मुस्कुराया और एक लंबी सांस लेकर हां में सिर हिलाया।

तभी उनका बेटा अपने कमरे से बाहर आया और उनके सामने नजरें नीची करके बैठ गया और बोला... पिताजी महंगाई बहुत बढ़ गई है, घर का गुजारा मुश्किल से होता है। बेटे की पढ़ाई-लिखाई, घर के सारे खर्चे... मैं अकेला बोझ नहीं उठा सकता। आप बुरा मत मानना... शहर में एक अच्छा नया वृद्धाश्रम खुला है। वहां आप दोनों को बहुत आराम मिलेगा। हम कभी-कभी आपके हाल-चाल पूछने आते रहेंगे, चिंता की कोई बात नहीं। कल हम शहर चलेंगे, यह कहकर बेटा अपने कमरे में चला गया।

गिरधारीलाल मुस्कुरा रहा था। पत्नी की तरफ देखते हुए दुख मिश्रित मुस्कान से बोल रहा था। बोझ... बोझ... हां, बोझ...।

शोभा के जीवन में सब कुछ अधूरा ही रह गया-रिश्ता भी, संवाद भी, कहानी भी और वह एक कंधा भी जिस पर वह जीवनभर टिकना चाहती थी। अधूरी कहानी का सफर... वह सच में अधूरा ही रहा।

अधूरी कहानी का सफर

अनुराधा मिश्रा
patrika.com

मन के घाव दिखते नहीं, पर वे भीतर ही भीतर रिसते रहते हैं- धीरे, लगातार। ऐसे जैसे कोई अदृश्य नश्तर रोज आत्मा में चुभता हो। 82 वर्ष की शोभा जब अस्पताल के सफेद बिस्तर पर पड़ी थी, तब मानो समय ने खुद उसके सामने बैठकर उसकी पूरी जिंदगी का लेखा-जोखा खोल दिया हो।

इन आखिरी दिनों में, जब न सांसें स्थिर थीं, न शरीर सहारा था- तब भी शोभा की उंगलियां कांपते हुए हवा में कुछ लिखना चाहती थीं- शायद वह कहानी, जो उसने जिंदगीभर अपने भीतर दबाए रखी, वही 'अधूरी कहानी का सफर'।

शुरुआत- जहां बचपन रूठ गया था। शोभा की आंखों में बचपन खो गया था, जिस दिन उसकी कच्ची उम्र में शादी कर दी गई थी। खिलौनों से खेलने की उम्र में चूल्हा, चौका, ससुराल की जिम्मेदारियां और पति की अनजान दुनिया उसके जीवन में आ गए थे।

शादी के शुरुआती वर्ष वह समझ नहीं पाई कि यह प्रेम है भी या केवल एक बोझ, एक सामाजिक बंधन। पति की नजरों में भरोसा कम और शक ज्यादा था। जरा-सी बात पर ताना, जरा-सी चूक पर झगड़ा और जरा-सी मुस्कान पर भी आरोप। धीरे-धीरे शोभा ने बोलना छोड़ दिया और पति ने सुनना।

60 वर्ष की गृहस्थी- जहां प्यार गुम था, बस औपचारिक रिश्ते बचे थे। कभी-कभी वह सोचती थी- 'क्या सच में दो लोग पूरी जिंदगी साथ रह सकते हैं, बगैर एक-दूसरे को समझे?'

कहने को 60 वर्ष तक एक घर के नीचे साथ रहे, पर जिंदगी दो अलग-अलग रास्ते चलती रही। झगड़े बढ़ते गए, बातें कम होती गईं। दोनों को लगा सामने वाला गलत है। और बार-बार वही जिद, अहंकार, आरोप, चुप्पी उनके बीच दीवारें बनाते गए। कुछ टूटता गया, धीरे-धीरे, हर दिन, हर रात।

बच्चे- जो रिश्तों की राजनीति के मोहरे बन गए। शोभा ने हमेशा सोचा था कि बच्चे दोनों के बीच पुल बनेंगे, पर समय के साथ वही बच्चे घर की राजनीति के खिलाड़ी बन गए। कभी बेटे पिता के पक्ष में खड़े हो जाते, कभी बेटियां मां के आंसू पोंछतीं, कभी सभी मिलकर अपना-अपना स्वार्थ साधने में लगे रहते।

बच्चे जब सुनते थे कि मां-पिता में झगड़ा हुआ है, तो वे यह नहीं देखते थे कि कौन सही है- वे बस गिनती करते थे कि किसका साथ देने में उन्हें फायदा है। शोभा की दुनिया दीवारों से ज्यादा आत्मा में दरारों से भरी थी।

बुढ़ापा- जहां दो लोग एक ही घर में अजनबी बन गए। जब जीवन ढलने लगा और बाल सफेद हो गए, तब भी पति-पत्नी के बीच का रिश्ता सिर्फ औपचारिकता बनकर रह गया।

न हंसी, न प्यार, न बातें...बस एक छत और दो शरीर, जो एक-दूसरे से कोसों दूर थे। शोभा अक्सर सोचती-'काश कभी हम दोनों बैठकर, अतीत को साफ कर लेते, गलतफहमियां दूर कर लेते, एक बार... बस एक बार दिल खोलकर बात कर लेते।' पर वह समय कभी आया ही नहीं।

वे दोनों जैसे दो पुरानी किताबें थे- जिन्हें बस अलमारी में रख दिया गया हो, बिना खोले, बिना समझे।

शोभा की अंतिम यात्रा- जहां शब्द मर गए और घाव बोलने लगे। अस्पताल की मशीनों की बीप के बीच शोभा का मन अतीत की गलियों में भटकता रहा। बच्चे आसपास खड़े थे, पर शोभा किसी को पहचान नहीं पा रही थी।

केवल एक चीज उस मन में स्पष्ट थी- नफरत का पुराना घाव, जिसने उसे पूरी जिंदगी अकेला कर दिया था। जब बच्चे पिता का नाम लेकर बातें छेड़ते, तो शोभा के चेहरे पर एक सन्नाटा पसर जाता- न क्रोध, न दुःख, न प्यार- बस एक गहरा खालीपन। मानो वह कहना चाहती हो- 'अब क्या अर्थ है? जो रिश्ता जन्म से मृत्यु तक कभी शुरू ही नहीं हुआ, वह आखिरी सांसों में क्या लौटेगा?'

पति की बेरुखी- जिद की पराकाष्ठा... जब बच्चों ने पिता को बताया कि मां आखिरी समय में है, चलकर मिल लीजिए। तो उन्होंने बस इतना कहा- 'अगर वो मिलना चाहती होंगी, तो बुला लेंगी। मैं क्यों जाऊं?'

उनकी आवाज में उम्र का टूटापन नहीं था, बल्कि वही पुरानी ठसक- वही अहंकार, वही दूरी, वही जिद।

और शोभा ने भी बच्चों से साफ कह दिया- 'उन्हें मत बुलाओ, अब कोई रिश्ता नहीं बचा।'

जीव भर के फर्क ने आखिरी पलों में दीवार को और ऊंचा कर दिया।

मृत्यु- जिसने कहानी भी अधूरी छोड़ दी, आखिरकार वह क्षण आया जब शोभा की सांसें धीमे-धीमे उतरने लगीं।

उसने आखिरी बार बच्चों को देखा, कुछ कहना चाहा- पर शब्द उसकी जीभ तक आकर मर गए। शायद वह कहना चाहती थी- 'रिश्तों को अहंकार से मत मारो।' या 'अपने जीवन की कहानी अधूरी मत छोड़ना।' पर वह सब उसके भीतर ही दम तोड़ गया।

एक पल में एक धीमी सांस टूटी, और शोभा की जिंदगी शांत होकर कहीं दूर चली गई। चार कंधों की कहानी-जो कभी पूरी न हो सकी। जब अंतिम यात्रा निकली, तो चार कंधों की परंपरा पूरी हुई, पर एक कंधा- जिसे जीवनभर शोभा ने अपना सहारा माना था। वह कंधा खाली था। पति ने न तब हाथ थामा, न अब कांधा दिया।

कहते हैं मृत्यु के समय सभी रिश्तों का हिसाब पूरा हो जाता है, पर शोभा के जीवन में सब कुछ अधूरा ही रह गया- रिश्ता भी, संवाद भी, कहानी भी, और वह एक कंधा भी जिस पर वह जीवनभर टिकना चाहती थी। अधूरी कहानी का सफर... वह सच में अधूरा ही रहा।

काव्यांजलि
POEM

मेहरबान मत ढूंढ

ऋचा मथुरिया सबा

मतलब की इस भीड़ में
पहचान मत ढूंढ
अपनी राह चल, कोई
मेहरबान मत ढूंढ

हर कोई चेहरे पर
फरेब का आईना रखे
दिल के अंदर
सच्चा इंसान मत ढूंढ

राहों में हजारों नक्शे बदल
जाते हैं
मंजिल की ओर चल,
फसाना मत ढूंढ

जो दिल से निकलता है, वो
आवाज है
भीड़ की हलचल में तू
तामझाम मत ढूंढ

मुमकिन नहीं

डॉ. ब्रिजेश माथुर

चांदनी हर शब खिले,
मुमकिन नहीं है ये।
तम भी मगर हर शब रहे,
मुमकिन नहीं है ये।

शब सुहानी, नींद गहरी हो
भले ही पर,
हों नहीं कुछ रतजगे, मुमकिन
नहीं है ये।

पास बच्चे सब रहें,
हर मां यही चाहे,
रोज ऐसा ही रहे,
मुमकिन नहीं है ये।

जलजलों जैसे ही हैं जज्बात
भी दिल के,
वे रहेंगे ही दबे,
मुमकिन नहीं है ये।

सूखती भी है नदी,
जीवन की यात्रा में,
हर नदी हर दम बहे, मुमकिन
नहीं है ये।

दफ्न ढेरों दर्द होते
हर बशर में पर
दर्द हर इक वो कहे, मुमकिन
नहीं है ये।

बिन खिले कितनी ही कलियां,
गिर भी जाती हैं,
हर कली हरदम खिले,
मुमकिन नहीं है ये।

पुस्तक चर्चा
BOOK REVIEW

यादों की पदचाप देर तक, दूर तक सुनाई देगी

यादों की पदचाप
(गीत संग्रह)

लेखक
सत्यदेव संवितेंद्र

गीतकार सत्यदेव संवितेंद्र विभिन्न विधाओं में लगभग 70 पुस्तकों का लेखन और सम्पादन कर चुके हैं। 'यादों की पदचाप' सत्यदेव संवितेंद्र का पांचवां गीत संग्रह है । 'चेतना का अवतरण','प्रीत के रंग' और 'यादों की पदचाप' इन तीन खंडों में विभाजित सुमधुर गीतों के इस संग्रह में प्रभावी गीत हैं।

इस गीत संग्रह में उम्मीद के गीत हैं ,चाहतों के गीत हैं, आकांक्षाओं के गीत हैं, जीवन दर्शन के गीत हैं, माड़धरा के गीत हैं, प्रेरणा के गीत हैं। सत्यदेव ने थार पर बहुत कलम चलाई है। वे बार -बार गांव का रुख करते हैं। इस गीत संग्रह में भी बार -बार लेखक अपनी यादों में, स्मृतियों में गांव लौट -लौटकर जाते हैं। धोरों पर चांद, तपते मरुस्थल का सच,माड़धरा के रंग, नव आकार की आकांक्षा आदि गीत ऐसे ही हैं। लेखक कभी निराश -हताश होकर, हाथ पर हाथ धरकर बैठ नहीं जाते,न ही हालात का रोना रोते हैं। जो स्थितियां हैं उनका सामना करते हैं। वे शुभ्र चांदनी से अपने अंतस के आंगन को भरना चाहते हैं। और 'प्रीत का रंग' तो हर रंग पर भारी पड़ता है। गीतकार संदेश यह भी अपने गीतों से देते हैं कि 'सब जगती परिवार हमारा, सदा सदा यह माना है। हमने इसी पुरातन चिंतन से खुद को पहचाना है।' इन कुछ शब्दों में आपने भारतीय संस्कृति के चिरंतन सत्य को उजागर कर दिया है। लेखक पाठकों को सदैव चलते रहने के लिए प्रेरित करते हैं, गीत की पंक्तियां देखें - 'चलने का है नाम जिंदगी,रुक जाना मर जाना है।

याद रहे जो दुनिया में वो काम कोई कर जाना है ।'

भरोसा है कि 'यादों की पदचाप' के गीत सहृदयों के अंतर को भिगोएंगे।

- डॉ. पद्मजा शर्मा

अपनी रचना भेजिए: अपनी मौलिक और अप्रकाशित कहानी, कविता और लघुकथाएं हमें इस मेल एड्रेस पर भेजिए-sunday@in.patrika.com ध्यान रखें कहानी-1000 और लघुकथा-250 शब्दों से अधिक नहीं हो।